हम्मीर महाकाव्य

हम्मीर महाकाव्य

ताऊ शेखावाटी

प्रकाशक : गीता प्रकाशन
32, जवाहर नगर, गुलाब बाडी
सवाई माधोपुर(राजस्थान)–322001

संस्करण : 2007

मूल्य : निःशुल्क वितरण

मुद्रक :

HAMEER MAHAKAVYA

Tau Shekhawati Rs. 450/

लुभा सका ना कभी लबों को,
जिसके हाला का प्याला।
फिर भी जिसकी कलम लिख गई,
अमर कृति थी 'मधुशाला'।।

इसडी सिद्धहस्त लेखणी रा धणी
मातृभाषा हिन्दी रा
सर्वाधिक
लोक प्रिय कवि
स्व. श्री हरवंशराय जी बच्चन
को
सादर समर्पित

ठा.डॉ. एस.एस.देवड़ा (चौहाण)
(शाखाः-- सिरोही),

ठिः– गलथणी
सुमेरपुर (पाली)
राजस्थान

आमुख

भारतीय इतिहास में हमीरी-हठ के नाम से सुप्रसिद्ध घटना के जनक राव हम्मीरदेव चौहाण अपने क्षत्रियोचित गुणों के कारण अमर होगए हैं। राजस्थान के अजेय गढ रणथम्भोर के घणी हम्मीरदेव को एक मुसलमान सरदार मुहम्मदशाह को शरण देने के कारण तत्कालीन दिल्ली सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का कोप–भाजन बनना पडा। उन्होंने अपना सर्वस्व दाव पर लगा दिया, किन्तु शरणागत को लौटाना कभी स्वीकार नहीं किया।

१३ वीं शती की इस अविस्मरणीय घटना को कितने हीं कवि, लेखक एवं चित्रकारों ने अपनी– अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से जीवंत किया है, जिसमें व्यास भांडा की कृति **हम्मीरायण**, न्यायचंद्र सूरी का **हम्मीर महरकाव्य**,जोधराज का **हम्मीर रासो** आदि ग्रंथ प्रमुख हैं।

इसी क्रम मे, १४३१ छंदों मे रचित कविवर ताऊ शेखावाटी का राजस्थानी भाषा में लिखा गया यह **हम्मीर महाकाव्य** इतिहास के उस अमर चरित्र के यस को एक बार पुनः उजागर करने वाला वृहद काव्य है। कवि के इस सार्थक श्रम के प्रकाशन पर मैं उन्हें हृदय से बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह महाकाव्य पाठक गण को बहुत पसंद आएगा।

(ठा.डॉ.एस.एस.देवड़ा)
एक्स. मेडिकल सुपरिन्टेण्डेण्ट
एस.एम एस मेडिकल कॉलेज
एण्ड हॉस्पीटल,जयपुर(राज)

पोथी बाबत

आखो जग जाणै कै राजस्थान वीरां री धरती है। वीरां रै सागै – सागै राजस्थान कवियां री धरती भी है। जित्ता अठै वीर हुया है, कवि बां सूं कम नईं हुया है। अठै रा कवि सुरसत रा सुवन है। गुणा रा गावडू है। मैमा मंडित करणै मोदीजता! ई कारण कोई जोधो मसाई छूट्यो हुसी जिण रो विडद नईं बखाणीज्यो हुवै।

भारत रै छत्रिया माय चौहाण वंस अपणी सूरवीरता रै पाण इतिहास मे लूठो स्थान राखै। सम्राट प्रथ्वीराज रै बाद बीरो पुत्र गोविन्दराज रणथंभोर नै अपणी राजधानी बणाई। ई पोथी रो नायक महा हठी हम्मीरदेव जिको सरणागत री रिछ्या ताणी अपणो सर्वस्व लुटा दियो, चौहाण वंस में अठै रो अंतिम सासक हुयोडो है। हम्मीरदेव सर्वांगीण खिमता रो अप्रतिम वीर अर भारतीय संस्कति रो सांतरो संरक्षक है। प्रस्तुत महाकाव्य रै लारै भी भारतीय संस्कति री सत्प्रेरणा निमित्त रैयी है।

हम्मीर माथै लेखणी सांमणै सारू कवि शेखावाटी प्रेरित तो मातुश्री द्वारिका बाई सू हुया, पण जिकी तत्परता सूं लगातार कवि इण विषय रो ऐतिहासिक, साहित्यिक अर सांस्कृतिक अध्ययन कर्यो है बो बतावै है कै इण प्रयास मे आकठ डूब'र कवि जीवण रो चरम लक्ष्य मान'र इण काव्य री रचना करी है। आध्यात्मिक साधक ज्यूं मोक्ष नै अंतिम प्राप्तव्य मानै उणी भांत इण काव्य री रचना कवि खातर मोक्ष --प्राप्ति सू कीं घाट कोनी, इसी म्हारी मानता है।

हम्मीर देव तो इण काव्य रो नायक है ई, इण रै सागै--सागै राजमाता हीरादे, पटराणी रंगादे, राजकवरी देवळदे, नर्तकी धारादे, सरणागत मुहम्मदस्या, न्हाल भाट अर जाजादेव रा चरित भी इतणा महताऊ है कै उणा रो प्रसंग लेयनै दूजा लिखारा इण काव्य सूं प्रेरणा लेयर नाठक, एकाकी, कहाणी उपन्यास आदि विधावा मे आपरी लेखणी रो जौहर देखाळ सकै।

अबै रैयगी छेकडली बात-- छंद, अलंकार, रस, सर्ग, प्रकृति चित्राम, सैली री प्रोढता, विषय री सालीनता, धीरोदात्त नायक, दुर्दान्त खल नायक आद पारम्परिक विसेसतावां रो समावेस तो उण महाकाव्य में सांगो पांग तरीकै सूं सुभाविक रूप मे ई सम्पन्न हुयोडो है। इण काव्य री सगळा सूं बडी विसेसता आ है कै भारतीय संस्कृति इण री आत्मा है जिण रै धागै मे आखो महाकाव्य चतराई सूं गूंथीज्योडो है इण महती सफलता सारू कवि नै घणा--घणा साधुवाद।

श्री. न. जोशी

(श्रीलाल नथमल जोशी)

वरिष्ठ साहित्यकार

...र प्रकाशनालय

...री चौक बीकानेर(राज.)

बिगत

1. भूमिका 10
2. निजू पानो 23
3. मंगळाचरण 27
4. प्रवेस 29
5. हम्मीर वंस 37
6. हम्मीर जलम 44
7. युवावस्था अर ब्याव 60
8. राज्याभिसेख 67
9. दिग्वजय अभियान 82
10. खिलजी वंस अर दिल्ली 98
11. पै'लो जुद्ध 108
12. मोमदस्या नैं सरण 115
13. दूसरो जुद्ध 139
14. जगरा रो जुद्ध 162
15. खिलजी री रणतभँवर पर चढाई 177
16. तीसरो जुद्ध 191
17. नरतकी धारादे री कथा 204
18. चौथो जुद्ध 220
19. खिलजी रो संधि प्रस्ताव 232
20. रणमल अर रतीपाल रो बिसवासघात 242
21. देवळदे रो आत्मोत्सर्ग 256
22. मोम्दस्याह् रो बलिदान 276
23. जाजादेव री स्वामी भगती 289
24. हम्मीरदेव रो सुरगलोकवास 295
25. हम्मीर झरोखै स्यूँ 321
26. कवि परिचय 327
27. हम्मीर वंसावळी 328

भूमिका

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

हे मेरे देवाधिदेव परमात्मा! मेरी जो माता है, वह तेरा ही रूप है। मेरे पिता रूप मे भी साकार तू ही मुझे उपलब्ध है। तू ही सकल बन्धु तथा मित्र के रूप में भी मेरे समक्ष अवतरित है। इसके अतिरिक्त संपूर्ण कला–कौशल, धन सपदा आदि सहित सर्वत्र जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब तेरा ही रूप है।

सर्वत्र ईश का ही सदैव दर्शन प्राप्त यह **"घट घट में राम रमा है"** के स्वरूप की सहज सुलभ और सहज अनुभूति की साकार अभिव्यक्ति है। ईश्वर के साक्षात् रूप दर्शन कर पाने की ऐसी ही सहज स्तुति इशवास्योपनिषद का यह प्रथम सूक्त है।

ईशवास्यमिदं सर्व यत् किंचित जगत्याम जगत।
तेन त्यक्तेन भुंजी मा गृध कस्यास्विद्धनं।।

दोनो मे हीं परमात्मा का सच्चा स्वरूप इस जगत को ही बताया है। साथ ही जिसमे इस दृश्यमान जगत के प्रति किए जाने वाले, योग्य समाज के व्यवहार का भी निर्देश किया हुआ है। यही क्यो, गीता के १० वे अध्याय मे भगवान श्री कृष्ण भी अर्जुन से यही कहते हैं–

अहमात्मा गुड़ाकेश सर्व भूताशयस्थितः
अहमादिश्च मध्य च भूतानामन्त एव च ।।२०।।

हे अर्जुन ! मैं हीं सभी प्राणियो मे आत्मा के रूप में हू। सभी प्राणियों के आदि, मध्य एव अत मे भी मैं हीं हूं।

उपर्युक्त तीनो शास्त्रीय प्रमाण हमे इस दृश्यमान जगत द्वारा परमात्मा की अनुभूति की सफल भूमिका प्रदान करते हैं। जिसमे सहज ध्यान या सदैव ईश्वर साक्षात्कार होते रहने का अथवा ईश्वर प्राप्ति का सरलतम उपाय निर्देश किया गया है।

सतयुग मे व्यक्ति विचारवान था और वह अपने विचारों मे पूर्ण भी था। उसकी विज्ञानमय कोश से आनदमय कोश तक सहजता से पहुंच थी। अर्थात् उसे विराग सहज रूप से प्राप्त था। उस काल के संपूर्ण शास्त्र यज्ञ और तपश्चर्या प्रधान रहे। उस काल का व्यक्ति स्वनियत्रित, सर्वसापेक्ष तथा सहज विरागमय जीवन जीता था। उसे वैराग्य के लिए कृच्छ प्रयत्न नहीं करने पडते थे।

किन्तु व्यक्ति का जैसे ही भाव जगत मे प्रवेश हुआ, उसकी व्यक्तिगत अनुभूतियां उसे भावात्मक अभिव्यक्तियो के लिए बाध्य कर उठी। नर व्याध द्वारा कामातुर नर क्रौंच का वध और मादा क्रौंच का विलाप सुनकर महर्षि वाल्मीकि विरक्त नहीं रह सके और वे भाव विह्वल हो उठे। उनकी वाणी सहज ही फूट पडी–

मा निषाद प्रतिष्ठांत्वगमः शाश्वतीः समा।
यत् क्रौंचमथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।
(वाल्मीकि रामायण बालकांड २/१५)

"हे निषाद ! तुझे नित्य–निरंतर कभी भी शान्ति न मिले।" यह कहकर मुनि वाल्मीकि अपने इस उद्‌गार के कारण चिन्ता ग्रस्त होगए। वे आत्म चिन्तन करने लगे।

तस्येत्थं ब्रुवतश्चिन्ता बभूव हृदि वीक्षतः।
शोकार्तेनास्य शकुनेः किमिदं व्याहृतं मया।।

(वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २/१६)

"हाय, मैं विरक्त संन्यासी इस शोकार्थ पक्षी के दुःख से पीड़ित होकर यह क्या कह बैठा?" यह वाल्मीकि की क्रौंच पक्षी के प्रति उत्पन्न भाव रागात्मकता थी। यह रागात्मकता ही व्यक्ति को भावाभिव्यक्ति के लिए बाध्य करती है और यही साहित्य की जन्मदात्री है। बिना ज्ञान के वैराग्य नहीं होता और बिना वैराग्य ईश्वर बोध सभव नहीं है। यह वैराग्य पथ अत्यंन्त कठिन है। जिसकी पूर्णता ईश्वर की सर्वव्यापकता एव सर्व समर्थता की अनुभूति मे है। किन्तु महर्षि वाल्मीकि की रागात्मकता की (भाव प्रवणता) पूर्ण अभिव्यक्ति इतर पक्ष के साथ सहज आत्मीय भाव स्थापित कर ॐ तत् सत् की साकार अनुभूति है।

इस प्रकार यह भावाभिव्यक्ति अर्थात् सहज रागात्मकता जब किसी सहृदय, वक्ता अथवा श्रोता का उपजीव्य बन जाती है, तो ईश्वर साक्षात्कार सहज हो जाता है। यह भाव कैसा भी हो, करुण और श्रगार हो अथवा रोद्र या वीभत्स। स्थाई भाव आस्वाद्य बनकर किसी को भी ब्रह्मानंद–अनुभूति कराने में पूर्णतया सक्षम है। पूर्व आचार्यो ने इसे भले ही ब्रह्मानद सहोदर माना है, किन्तु ऋषि, महर्षि, ब्रह्मर्षि से शब्दर्षि की साधना किसी तरह न्यून मानकर चलना शब्दर्षि की साधना के प्रति हमारा दुराग्रह ही प्रकट करता है। शब्दर्षि भी ब्रह्मर्षि की भांति ईश्वरानुभूति कर पाने में सर्वथा समान हीं सक्षम हैं। वाल्मीकि, व्यास, तुलसी, सूर आदि शब्दर्षियो ने यह सिद्ध कर दिखाया कि वैराग्य की साधना की तुलना में भावात्मकता (रागात्मकता) की शब्द साधना द्वारा निर्मित साहित्य केवल साधक का ही कल्याण नहीं करता, अपितु उसके पाठक एवं सहृदय का भी कल्याण करने मे समर्थ है। ऐसी त्रिगुणमयी शब्दर्षि साधना को मात्र शब्द कलाप कह देना उचित नहीं है।

साहित्य रचना किसी भी भाव (स्थाई भाव) या विधा मे की जाए, अगर उसकी भावात्मकता (अनुभूति) अभिव्यक्त होकर पाठक अथवा सहृदय को उस रचना के पठनोपरांत, उसी भावात्मकता से अभिभूत करने मे सक्षम हो तो वह श्रेष्ठतम और सफलतम कृति कही जा सकती है। ऐसी कृतियां व्यक्ति, प्रकृति और समाज की पूर्ण अभिव्यक्ति करती हैं। व्यक्ति की भावनाए, उसके साथ प्रकृति एवं समाज का तदनुरूप साहचर्य एव जीवन मूल्यों के निर्वाह के लिए सतत सघर्षशील बने रहना और रखना इसका प्राण है।

महर्षि के लिए जहा'रूप, रस, गंध शब्द और स्पर्श त्याज्य हैं, वहीं शब्दर्षि, भावर्षि के लिए इन पच तन्मात्राओ का सेवन सहज ग्राह्य एवं कल्याणकारी भी है। यहां विराग का नहीं, राग का प्राधान्य है। रूप, रस, गध, शब्द और स्पर्श का समन्वित रूप

नारी अथवा प्रकृति में ही एक साथ प्राप्त करना सहज है। इसलिए साहित्य में प्रकृति अथवा नारी निश्चित जीवन मूल्यो के साथ सदैव चित्रित की जाती रही हैं अर्थात् चिन्तन शास्त्र एव धर्म शास्त्रो में जहां इन पच तन्मात्राओं को अत्यंन्त गर्हित माना गया है, इनसे सदैव बचकर चलना प्राथमिकता है, वहीं इनके प्रति रागात्मकता साहित्य का उपजीव्य है। इसलिए ही आदि कवि वाल्मीकि द्वारा प्रशस्त ब्रह्मानंद प्राप्ति का यह सहज और सरलतम मार्ग समाज मे अधिक व्याप्त होगया।

साहित्य की सभी विधाओं में और विशेषकर काव्य में व्यक्ति भेद ही सही कविता और उसमें भी प्रवध कविता शब्दर्षि (महाकाव्यकार) को पूर्ण अवकाश प्रदान करती हैं तथा सहृदय को अभिभूत भी अधिक कर पाती हैं। फलस्वरूप ही आज भी महाकाव्यों का सृजन अधिक ग्राह्य एव प्रभावकारी है।

इसी लोक प्रतिष्ठित परम्परा की श्रीवृद्धि की है राजस्थानी भाषा के प्रतिभा–पुत्र श्री ताऊ शेखावाटी ने अपनी रमणीय रचना "हम्मीर महाकाव्य" से। श्री ताऊ शेखावाटी हिन्दी–राजस्थानी भाषा के समर्थ, सम्मानित साहित्यकार हैं। अपनी प्रभावी क्षमता से वे देश–विदेश मे कवि–सम्मेलनो की शोभा रहे हैं। इनकी **सालाहेली, सुनले ताई बावली** एव **कह ताऊ कविराज** जैसी कृतियो से जहां राजस्थानी की हास्य–व्यंग्य की धारा बही है, वही इनकी बहुचर्चित कृति **मीरां-राणाजी संवाद** साहित्य जगत में भक्त शिरोमणी मीराबाई पर लिखी गई प्रथम सवाद कृति है। इनकी नीति–परक सबोधन काव्य कृति **सोरठा री सौरभ (बावळा रा सोरठा)** से वे एक निपुण नीति विशारद एव प्रस्तुत वीर रस प्रधान काव्य "**हम्मीर महाकाव्य**" से वे एक सफल महाकाव्य लेखक के रुप मे हमारे समक्ष आए हैं। महाकाव्य लेखन के सभी मानदडो पर खरी उतरती–सी यह मूल्यवान कृति श्री शेखावाटी की बहुमुखी प्रतिभा तो प्रकट करती ही है, साथ ही राजस्थानी की महाकाव्य लेखन परम्परा को भी समृद्ध करती है। इस सोपान पर पहुचकर हम समीक्ष्य कृति को एक समालोचक की दृष्टि से देखे, यह समाचीन होगा।

प्रस्तुत महाकाव्य की ऐतिहासिकता– चौहान वश एक सुप्रसिद्ध राजवश था। जिसकी आराध्या देवी शाकम्भरी और राजधानी अजयमेरु (वर्तमान अजमेर) थी। राव पिथोरा यानि प्रथ्वीराज चौहान इस वश का प्रसिद्ध राजा और भारत का अंतिम हिन्दु सम्राट था। इसी का वंसज राव हम्मीर सन १२८२ ई मे रणथम्भोर का शासक बना। जिसकी दिग्विजय इतिहास सिद्ध है।

तत्कालीन दिल्ली सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के कोप भाजन बने उसके ही एक पठान सेनापति मोहम्मदशाह को हम्मीर द्वारा शरण दिए जाने का बहाना बनाकर अलाउद्दीन ने रणथम्भोर पर चढाई की। उसके अनेक हमलो के बाद भी दुर्ग अजेय रहा, किन्तु हम्मीर के सामतो के विश्वासघात के कारण अतत हम्मीर ने केसरिया बाना धारण कर युद्ध मे वीर गति पाई। शरणागत मोहम्मदशाह भी युद्ध करता हुआ हम्मीर के साथ ही दुर्ग रक्षार्थ शहीद हुआ। हम्मीर की इकलौती पुत्री राजकुमारी देवलदे ने . ˆ (एक स्वर्ण सिद्ध गुटिका) के साथ दुर्ग के अन्दर वाले पदमला तालाब में कूद

कर आत्मोत्सर्ग किया। दुर्गवासिनी महिलाओं ने राणियों सहित जौहर कर लिया।

इस कृति का नायक महा हठी हम्मीरदेव धीरोदात्त नायक है, जो अपने जीवन मूल्य ''शरणगत-वत्सलता'' के लिए इतिहास सिद्ध है। अपने इस जीवन मूल्य पर वह किस हद तक दृढ है, खिलजी के साथ उसका यह सवाद दृष्टव्य है–

हम्मीर राव ! मतखाय ताव, करड़ो सुभाव दिल्ली पतिस्याह्।
मानज्या सट्ट ! अब छोड हट्ट, लोटाय झट्ट दे मोमदस्याह् ।।७२८।।
सुण जवनराज ! मत घणो गाज, खोळी में रह दिल्ली पतिस्याह्।
सिर जाय कट्ट छोडूँ न हट्ट, हम्मीर न देणो मोमदस्याह् ।।७२६।।

इस महाकाव्य के नायक को अपने बाहुबल पर ही नहीं, अपने अजेय गढ पर भी कितना गुमान है, देखे, जब वह मोहम्मदशाह को शरण देता है–

जा मोमदस्या! निरभय सोज्या, लाम्बी सौ हाथ रिजाई में।
जद तॉई बळ है बरकरार, ई भुजा म्हारली दाईं में।।४५३।।
गढ मेरै बखतर बंद मॉय, कुण-कद तेरी ढिग आ'र सकै?
मेरी मरजी रै बिनॉं अठै, जद चिडी चूँच नीं मार सकै।।४५५।।

किसी भी राज्य की असली ताकत वहा की जनता और विशेषकर युवा वर्ग ही होती है। हम्मीर ने इस सच्चाई को समय रहते ही पहचान लिया था, तभी तो–

जा गॉव-गॉव भेळा करकै, सगळा हमउम्र जुवांनाँ नैं।
ई धरती मॉ रा पूत असल, बेटा मजदूर-किसानॉं नैं।।१५७।।
हळ सागै सस्त्र चलाणै री, विद्या सबनैं दिलवाई यो।
यूं अपणी न्यारी-निरवाळी, भारी इक फौज बणाई यो।।१५८।।

अपने किसी मुख्य समर प्रतिद्वद्वी के पद का मान रखते हूए, उसका शिकार अपने किसी मातहत के हाथों नही, अपितु स्वयं अपने हाथो से करना भी सच्चे क्षत्रिय के लिए एक वरेण्य जीवन मूल्य माना गया है। प्रस्तुत महाकाव्य का नायक हम्मीर भी इसका अपवाद नहीं है। खिलजी द्वारा निर्दोष नर्तकी धारादे की धोखे से की गई हत्या से कुपित हुए मोहम्मदशाह ने जब खिलजी को मार गिराने के लिए धनुष पर तीर चढा लिया, तो यह जानते हुए भी कि मोहम्महशाह एक लक्ष्य भेदी तीर चलाने मे निपुण धनुर्धर है और उसके चलाए हुए तीर से खिलजी की मृत्यु निश्चित है, हम्मीर उसे यह कहकर टोक देता है कि–**रुकज्या मोमदस्या! मान क'यो, ओ काम नहीं जायज तेरो ।।८८३।।** अथवा **जद खिलजी ही मरज्यासी तो, मैं किण स्यूँ बोल लडूँलो तद।।८८६।।** इतना हीं नहीं, जीवन मूल्यों का सम्मान करते हुए वह किसी निहत्थे अथवा असावधान शत्रु पर भी धोखे से वार नहीं करता। तभी तो वह खिलजी पर वार करने से पहले उसे सावधान करता है।

अर बोल्यो खिलजी सावधान! ले तूँ सँभाळ मम वार अब्ब।
ओ तीर म्हारलो छूटै है, करणै तेरो संघार अब्ब।।१३२४।।

दूसरी ओर इस महाकाव्य का खलनायक दिल्ली सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी है, जो–

ईं महाकाव्य रै नायक रो, बो मुख्य समर प्रतिद्वंदी हो।
मन -वचनों स्यूँ काळो-झूठो, निज करमॉ स्यूँ छलछंदी हो।।३६५।।

अलाउद्दीन का पालन– पोषण उसके सगे चाचा और खिलजी वंश के सस्थापक रहे सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने किया था। जब अलाउद्दीन जवान हुआ तो बूढे सुल्तान ने अपनी पुत्री का निकाह भी उसके साथ कर दिया तथा उसे 'जगरा' और अवध की जागीर प्रदान कर कई महत्वपूर्ण पद और उत्तरदायित्व सौंप दिए। किन्तु उसी भतीजे बनाम दामाद उलाउद्दीन ने एक दिन धोखे से सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या कर दी और दिल्ली का तख्त हथिया लिया। इतना हीं नहीं, उसने सुल्तान जलालुद्दीन की बूढी बेगम 'मलिका जहान' को कैद में डालकर अपने दोनों साले शहजादे कद्रदान एव अर्कलीखान दोनो की जीते–जी आँखे निकलवाली। क्योकि–

बो नाग मारकै नागण नैं, जिन्दी छोडणियों कोनी हो।
बींरा जायोडा तक स्यूँ भी, खतरो ओढणियों कोनी हो।।३६७।।
बदळो लेणै री भूखी बा, नागण जाणै कद डस ज्यावै।
या बी रा सँपळोटिया आ'र, कद आसतीन में बस ज्यावै।।३६८।।

अलाउद्दीन ने रणथंभोर सर करने हेतु अतिम धर्म युद्ध सहित कुल पांच युद्ध लडे। जिनमे तीसरा युद्ध कुछ अधिक महत्वपूर्ण था। क्योकि इस युद्ध की बागडोर स्वयं खिलजी ने सभाल रखी थी। यथा–

पण जुद्ध तीसरो ओ थोडो, ज्यादा न्यारो-निरवालो हो।
ईं रण में सुलतानें दिल्ली, खुद आ'कै मांड्यो पाळो हो।।७७८।।

फिर भी हम्मीर विचलित नहीं हुआ। उसने तब खिलजी को चिढाने हेतु गढ के कंगूरों पर सूपध्वज (छाजले) टगवा दिए। और यूँ उसने खुद के प्रति सचेष्ट, किन्तु दुश्मन के प्रति उपेक्षा का पूर्ण अहसास खिलजी को करा दिया।

उल्टो गढ रै कंगूराँ पर, झंडा सूप'रा टँगाय'र बो।
'हम्मीर हेकडी' रो पळको, बीं नैं मान्यों दिखलाय'र बो।।७८१।।

हम्मीर की ऐसी निर्भीकता से दंग खिलजी मन ही मन डर गया था। उसने तब अपने एक दूत मोल्हण भाट के हाथ पुन. संधि सदेश भिजवाया। जिसमें मोहम्मदशाह के बदले मे वह हम्मीर को कुछ भी देने के लिए तैयार था–

बीं मोमदस्या रै बदळै में, जे हुवै 'माँग' कोई थारी।
ल्यो माँग बेधडक दिल्ली स्यूँ, डटकै भारी स्यूँ भी भारी।।८०२।।

पर वह हठी कब मानने वाला था ? उसने तब साफ कह दिया कि मोहम्मदशाह के बदले मे अगर कोई मुझे दिल्ली देणी करदे तो भी, ओ सोदो नहीं पटै खिलजी।।७३७।। अत इस विषय मे अब यह आए दिन सधि संदेश भिजवाने से कोई फायदा नहीं है–

तूँ सोच हांवणो है के अै, संधी-संदेस भिजाणै स्यूँ।
यूँ रोज-रोज ओ 'रोज' रोय, रणथंभ दूत पूगाणै स्यूँ।।८१६।।

हम्मीर का यह उत्तर यद्यपि खिलजी को नागवार गुजरा, किन्तु– "थीं महाहठी रै आगै पण, घाल्यो कोई भी दाव नहीं।।८२१।। फलस्वरूप तीसरा युद्ध भी हुआ और उसमे भी शाही सेना पराजित हुई।

तीसरे युद्ध की समाप्ति के पश्चात् नर्तकी धारादे की कथा को आंचल मे समेटे इस चित्र काव्य की कथा धीरे–धीरे चौथे युद्ध की ओर बढ़ती है। किन्तु राजपूतों के शौर्य एव एकता के सामने उस चौथे युद्ध मे भी शाही सेना टिक नहीं सकी। ऐसी परस्थिति में–

आ बात समझग्यो हो खिलजी, रण करण खुदा भी आज्यावै।

बिन फूट पड्यॉं रजपूतों में, ओ गढ कोनीं जीत्यो जावै।।६७८।।

यही सोच कर तब उसने कूटनीति से काम लेते हुए हम्मीर के पास पुनः एक संधि प्रस्ताव भिजवाया और किसी निर्णायक हल के लिए हम्मीर के सेनापति रतीपाल को अपने पास बुलाने में सफल हो गया। जब रतीपाल खिलजी के खेमे में पहुचा तो खिलजी ने मान मनुहार करते हुए उसे रणथभोर के सिंहासन का लालच देकर अपनी ओर कर लिया। रतीपाल के साथ ही हम्मीर का प्रधान मत्री रणमल भी खिलजी से मिल गया।

अपने इन दोनो सामतों के विश्वासघात से हम्मीर बुरी तरह से टूट चुका था। ऐसे में पटराणी रंगादे ने उसे आपातकाल मे भी कर्म से विमुख न होकर धर्म पर डटे रहने की सलाह देते हुए कहा–**है 'धरम' छत्रि कुळ रो ओ ही, नहिं कदे धरम स्यूँ मुँह मोड़ै।।१०८२।।** *अत हे नाथ! इस घटना को अधिक तूल न देकर आप तो सदैव* **सत-पथ पर डट्या र'वो चाए, होवै मौसम प्रतिकूल घणो।।१०८३।।**

तब हम्मीर ने धर्मयुद्ध की ठान ली। सभी किले वासियो को सुरक्षित बाहर निकालने की योजना बनाली गई। शरणागत मोहम्मदशाह को भी हम्मीर ने किले से बाहर किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाने का आदेश दे दिया। रनवासे में रानियों को जौहर के लिए सदेश भिजवा दिया गया। हम्मीर की बेटी देवलदे ने पदमला तालाब में कूदकर आत्मोत्सर्ग कर लिया। देवलदे के इस आत्मोत्सर्ग में कवि की लेखनी बड़े ही प्रभावपूर्ण ढग से चली है। यहा नारी धन की अहवेलना के प्रति सचेत हुआ कवि कहता है–

मौको मिलियॉं हर छेत्र मॉंय, मरदॉं पर नारी भारी है।

पण पच्छपात लिंगीय नीति, नारी धन की लाचारी है।।११२९।।

शरणागत मोहम्मदशाह ने राव हम्मीर का साथ अंत तक नहीं छोडा। प्रस्तुत महाकाव्य मे उसके परिवार के आत्म बलिदान का वर्णन भी बडे ही मार्मिक ढंग से हुआ है। मोहम्मदशाह की मृत बेगम को देखकर भाव विह्वल हम्मीर का स्वर सहज ही फूट पडता है!

हो गयो धन्य रै मोमदस्या ! मैं देख त्याग तेरो, भाया।

दुनियॉं राखैगी याद सदॉं, रिस्तो तेरो-मेरो, भाया।।१२४३।।

इक मुसळमान होय'र भी तूँ , अपणा-सी प्रीत निभाई है।

पिछलै जळमॉं रो सायद तूँ ,मेरो मॉं जायो भाई है।।१२४४।।[६]

जाजादेव और न्हाळ भाट ने हम्मीर की स्वामि भक्ति में युद्ध करते हुए वीर गति पाई। राणियो के जौहर के साथ ही कुमारी देवलदे के आत्मोत्सर्ग के परिणाम स्वरूप हम्मीर युद्ध भूमि मे निश्चिंत होकर वीरोचित मृत्यु का वरण कर सका।

हमारे प्राचीन आचार्यो के अनुसार रसात्मक वाक्य ही काव्य है। (वाक्यं रसात्मक काव्यं) वे रस को काव्य की आत्मा मानते हैं। महाकाव्य में वीर, श्रृगार एवं शान्त रस की प्रधानता होती है। प्रस्तुत कृति मे वीर रस की एक झलक देखे।

राखै जो ज्यान हथेळी पर, गीदड भभकॉं स्यूँ डरै नहीं।
ई राजपुतानै री माटी, आ वात गवारा करै नहीं।।५०३।।
जे माँ रो दूध पियो है तो, मत गाल वजा अर आगै वढ।
जे असल वाप रो जायो है, तो आ रण में मेरे स्यूँ लड।।५१५।।

और भी–

गढ रणत भँवर री घाटी री, माटी रो चंदण सीस चढा।
जो मिलै मौत स्यूँ नित्त गळे, कद काळ सकै हौंसलो डिगा।।७३६।।
तूँ तो के है अल्लूग खाँन, जे मौत चला रण आज्यावै।
तो बीं स्यूँ भी भय खाय कदे, हम्मीर बचन नीं टळ पसवै।।६१६।।

युद्ध वर्णन–

जणा ज्यॉ हथेळी घर्‌यॉ राजपूतं। चल्या जंग मॉंई महाकाळ दूतं।
धरा डोलणै लागगी अंब कांप्यो। दळं साह में घोर आतंक मांच्यो।।१२८७।।
चमक्की जणा खंग सेलं पळंक्या। चल्या ऐक सागैहि तीरं असंख्या ।।
कट्‌या भुज्ज माथा'र विंध्या सरीरं। लगी फूटणै खोपड्‌यॉं ज्यूॅं मतीरं।।१२६१।।

और भी–

चलै तीर जंगं हुवै पार अंगं। पडै बाजि भूमी'र चीखै मतंगं।
पड्‌या पील भारी कठै प्राणहीनं। कठै हा पड्‌या अस्व माथा विहीनं।।१२६६।।
भर्‌यॉं जोगणी खप्परं रक्त नाचै। करै केळि भैरूँ जणा लैर भाजै।।
लग्या मंडराणै नभं मॉय पंछी।घणॉं कांवळा चील आ मांस भच्छी।।१३०१।।

प्रस्तुत कृति मे श्रृगार रस का भी पूर्ण परिपाठ जगह–जगह पर हुआ हैं। नायक–नायिका का विहार कराना, जो महाकाव्य का एक आवश्यक अग माना गया है, मे तो कवि की वाग्सपदा निहाल हो उठी है। देखे–

मदमाती मधुयामिनि, मौसम हो मधुमास।
मुळकंती मधुमालती, महकंती मधुवास।।
महकंती मधुवास, दियो कर तन-मन पागल।
तिरियॉं-मिरियॉं भरी, छळकणै लागी गागळ।।
कह ताऊ कविराज, हिए में हद हुळसाती।
मधुकर लियो रिझाय, कळी कामण मदमाती।।१७१।।

फली एव भंवरे के प्रतीक में नायक–नायिका का यह विहार कवि ने अत्यन्त सूझबूझ एवं

शालीनता के साथ किया है। आगे भी–

जद लोभीड़ो भँवर, तान छेड़ंतो माच्यो।
हरखंतो मन माँय, करंतो तांडव नाच्यो।।
कळी पंखुड़ियाँ चढ्यो, मुळकतो मधरॉं-मधरॉं।
अधरॉं-अधरॉं जाय, धर्‌या अधरॉं पर अधराँ।।
लपटण-झपटण माँय यूँ जद, हुयो उदित कंदरप तन।
लग्यो करण रस पान भँवरो, मोबीड़ो हुय मुदित मन।।१७२।।

महाकाव्य में नायिका के नख–शिख का वर्णन करना भी एक प्राचीन परम्परा रही है। कवि ने यहाँ भी अपनी सुझबूझ का श्रेष्ठ परिचय दिया है। बानगी देखे–

मिल सात सुहागण मळरी ही, उवटण रंगादे राणी तन।
पट बंद कक्ष में पट विहीन, हम्मीरदेव पटराणी तन।।२००।।
रूप रो खजानो खुलियोडो, सांपरत रूप रै मांय जणा।
निरख्यो तो ग्राम वधूटी वै, सातूं रह गई लजाय जणा।।२०१।।

आगे भी–

वळ खाती इन्द धनुस जिसडी, लचकीली नाजुक छीण कमर।
गंभीरी नाभ, कंबु-कंठी, भुज, जंग, नितंब सुडोळ सकल।।२०६।।
दो पीन पयोधर कनक सैल,स्यामल कुच मुख मद छायोडो।
सर्वांग सुन्दरी चंद्रमुखी, मखमली बदन गदरायोडो।।२१०।।

नायिका का श्रगार (आभूषण एव वसन)

मीठै रस भरिए होठाँ पर, नथली रो मोती लटकंतो।
रक्तिम कपोल बाँएं पर हो, स्यामल सजतो तिल मटकंतो।।२२७।।
माथै पर बिन्दी सिन्दूरी, सिर सीसफूल सुन्दर रखडी।
हाथाँ में चुडलो गजदंतो, बाजूबंद'र पूँची बँगडी।।२२८।।

और भी–

कानाँ में सोभित करणफूल, नग जड्‌या झेरला झूमंता।
लाम्बी गरदण नौलखो अर, टिमणियो-झालरा झूलंता।।२२६।।
हथफूल हथेळी राच्योडी, आंगळ्यॉं अँगूठी रतन जडी।
पगल्यॉं में बाजंता बिछिया, छमकत रमझोळ'र कनक लडी।।२३१।।

शान्त रस मे भी कवि की कलम क्या खूब चली है, देखे–

आ दुनियाँ हर प्राणी ताईं, दो दिन रो रैन बसेरो है।
कुछ दिनाँ उठाऊ चूल्हो-सो, ओ जोगी हाळो डेरो है।।१३७१।।

अन्य सभी सहयोगी रसो का प्रयोग भी इस महाकाव्य मे पर्याप्त हुआ है। बानगी स्वरूप कुछ छंद दृष्टव्य है।

करुणरस–

पण कदे खिलंती नीं देखी, ओ गढ मन माँय बहार अठै।
मोती चुग्गणियों हंस कणा, खुस होतो मछल्याँ खा'र कठै।।१४२८।।

वात्सल्य रस–

जद ममता फूट पडी माँ री, हीए में हेत अपार भर्‌यो।
राणी री दोनूँ छात्याँ स्यूँ , बण धार दूध री छळक पड्यो।।१४३।।

वीभत्स रस–

आंतडियाँ खींचण लग्या गिरज, अर माँस विखरग्यो पगाँ-पगाँ।
ले भुजा खोपडी उडण लग्या, जद चील काँवळा जगाँ-जगाँ।।६४७।।

रोद्र रस–

निकळी चिणगारी आंख्याँ स्यूँ, चै'रो लपटाँ-सो लाल हुयो।
भ्रकुटी तणगी मुट्ठी भिंचगी, भुज फडकी मुख विकराळ हुयो।।५०१।।

महाकाव्य की परम्परागत मान्यताओं के अनुरूप सभी तीज–त्यौंहार एवं षठ ऋतुओं का वर्णन भी प्रस्तुत काव्य मे सागोपाग ढंग से सम्पन्न हुआ है। उदाहरण स्वरूप वसंत में फाल्गुनी उत्साह की एक झलक दृष्टव्य है।

मदांध हुयो जद मोसम तो मनडा सब रा भरमाण लग्या।
सज्या सब छैल जणा मिलकै गळियाँ हुडदंग मचाण लग्या।।
बजावत चंग म्रिदंग सभी कुरजाँ'र धमाल सुणाण लग्या।
घूमंत सुठौर कुठौर जणा सब ईसर गौर लुभाण लग्या।।१७५।।

इसी कम मे कवि ने आलम्बन रूप में प्रकृति का भी आकर्षक चित्रण किया है। जिसका मानवीकरण अत्यन्त प्रभावपूर्ण है।

रंग वसंत बहार जणा धरती पर आ विखराण लगी।
ओढ'र चूनड धानि जणा धरती मन मे हरखाण लगी।।
खेतन गेहुँन और चणा पकती फसलाँ लहराण लगी।
घूंघट ओट खडी किरसाण वधूटि हिए सरमाण लगी।।१७६।।

और वसत के वाद जब ग्रीष्म ऋतु आई तो–

सुळगणे लागी दुपैरी, जीव घबराँवण लग्यां।
दरखताँ री छाँव ठंडी, वैठ सुसताँवण लग्या।।२६१।।

और भी–

आम पकती डाळ कोयल, कूकणै लागी घणी।
खेजडाँ री डाळ साँगर, लूँमणै लागी घणी।।
फूल काळीदास रो प्रिय, सिरिस लाग्यो महकणै।
राहिडो होयो सुरंगो, रूप लाग्यो दहकणै।।२६२।।

जब ग्रीष्म के पश्चात वर्षा ऋतु का आगमन हुआ तो–

उद्व घटा घनघोर, छायगी लीलाम्यर पर।
नाचण लाग्या मोर, ताणकै छतरी सुन्दर।।२६४।।
काढंती मन झाळ, बीजळी अंवर चमकी।
भरिया जौहड-खाळ, घटा जद बरसी जमकी।।२६५।।

वर्षा ऋतु के साथ ही जब तीज–त्यौहारों का मौसम शुरू हुआ तो जन मानस हर्षित हो उठा, चौतरफ हरियाली छागई।।

धरती हुई निहाल, हुया हरियल सव वोजा।
चल्या गाँव रा ग्वाळ, वर्जावतड़ा अलगोजा।।
फळी कळी कचनार, विरछ डाळ्यॉ वेलडली।
झूलण लागी नार, डाळ आम'र खेजडली।।२६६।।

आश्विन मास में वर्षा समाप्त–सी हो चली ओर शरद ऋतु का आगमन होने लगा। इसका भी आलम्वन रूप मे प्रकृति वर्णन बडा उपयुक्त वन पडा है।

परभाव पावस रो जणा कुछ, कम हुयोडो जाणकै।
लागी पसरणै रुत 'सरद' ही, जद धरा पर आणकै
कर घोसणा सव घन घमंडी, पूर्ण जुद्ध विराम की।
आकास तज झट जाय पकडी, राह अपणै धाम की।।२६८।।

x x x x

उनमादणी नंद्याँ सभी थक, सांत चित वहणै लगी।
तन-मन हुयोडी त्रिप्त धरती, नव फसल फळणै लगी।
पकती 'खरीफ' निहार करसो, मन हुयो जद बावळो।
मक्का, जुवॉर - गुँवार, चूळो, मूंग - मोठ'र वाजरो।।२७०।।

हेमत ऋतु में मालवा की हाड कंपाती ठड का वर्णन भी बडा रोचक है। यथा–

हाडतोड ठंड जीं में, सूत्योड़ा सिविर मॉय,
ठिठुरण लाग्या जद, सारा रण बांकडा।
तंवुआँ स्यूँ वा'रै आता, आपस में बतळाता,
काटै सारी रैण बैठ्या, सुळगाता लाकडा।।
विसम तुसार मार, मावठ अपार संग
कुपित हेमंत चाल्यो, पीटतो ई ताफडा,
चाली जद वण काळ, ठंडी उतादी बाळ,
मिनख चितारी कटै, सूखग्या हा ऑकडा।।२८४।।

और अत में, जव ऋतुओ की रानी सिसिर आई तो–

सिसिर सुरंगी जीव - जीव रै, कर्‌यो मनॉ में नव संचार।
जोस भर्‌या रजपूत हुया जद, फिर स्यूँ जुद्ध करण तैयार।।२६२।।

ऊपर सार संक्षेप मे दिया गया इस महाकाव्य का कथानक कुल १४३१ १ मे रचा गया है। जिसमे राधिका छद का वाहुल्य है। यद्यपि मंगळा चरण में सोरठा

सहित कवि ने भुजग प्रयात, त्रोटक, कुण्डली, छप्पय, दुर्मिल सवैया, मालती सवैया, सुमुखि सवैया मालिनी सवैया गीतिका, हरि गीतिका, दुमदार दोहा, कवित (मनहरण छद) आल्हा आदि अनेक छदों का भी कुशल प्रयोग इस कृति मे किया है। साथ ही, काव्य के प्रारम्भ मे मगलाचरण, सतो की वदना, दो सर्ग विभिन्न छदो वाले तथा प्रत्येक परिच्छेद के अत मे भिन्न छद देकर कवि ने प्राचीन महाकाव्य लेखन परम्परा का भी निर्वाह किया है।

काव्य मे, उत्तम अनुभूति एव अनुकूल अभिव्यक्ति के सटीक सगम को ही सोने मे सुगध की सृष्टि होना कहा गया हैं। कविवर ताऊ शेखावाटी का अभिव्यक्ति कौशल सर्वत्र विषयानुकूल है। कृतिकार की भाषा–शैली सरल–सुबोध राजस्थानी है। जिसमें शेखावाटी बोली के देशज शब्दो के प्रयोग ने उनके इस अभिव्यक्ति कौशल को माटी की सौंधी गध से महकाया है। इसमे "तिरिया–मिरिया भरी" प्रयोग बड़ा प्रभावकारी बन पड़ा है।

कवि ने अवसरानुकूल अभिधा, लक्षणा और व्यजना शब्द शक्तियो का प्रयोग किया हैं। जान हथेली पर लेना अगारा स्यू खेलणिया, आजादी रा परवाना, तूती बाजणा, आ धरा खान है वीरा री, रजपूती पगडी नहीं झुकी, घर–घर दीवाली मनना, मुट्ठियो मे थूककर भागना, तीन–तेरा होना, मन स्यू रोगी– तन स्यू भोगी, पण नहीं छोडना, खेडी पाण खाना जनम्यो है बो तो मरसी ही, बारा बाट होना, जयचदो मे नाम लिखाना, शिकार फदे मे फसना पीठ मे छुरी चलाना, मोत से गले मिलना, मछली होकर मगर से बैर पालना जेसे अनेक लोक कथन और मुहावरो ने इस महाकाव्य को जो आभा प्रदान की है, वह सराहनीय है।

लोकिक व्यवहार मे जिस तरह गहने एव रत्न जडित आभूषणो को शरीर को सुशोभित करने के कारण अलकार कहा जाता है, उसी प्रकार किसी काव्य को अलकृत करने वाले शब्दो की रचना को अलकार कहा गया है। आचार्य दण्डी ने भी काव्यदर्श मे यही कहा है–"काव्य शोभाकरान्धमनिलंकारान प्रचक्षते"प्रस्तुत महाकाव्य मे अलकार सज्जा भी सहज है, सायास नहीं। इसमे प्रसगत अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, पुनरुक्ति, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति अन्योक्ति, दृष्टान्त, वक्रोक्ति, सदेह आदि–आदि अलकारो की उपस्थिति भावोत्कर्ष मे प्रयाप्त सक्षम है। यथा–

१. अनुप्रास अलंकार

(अ) वृत्यानुप्रास–

ही केसरिया काया किसोर, काची कूंपळ-सी कोमलडी।
कुंजन-कुंजन करती किलोळ, फिरती कूकंती कोयलडी।।१०६१।।

(ब) छेकानुप्रास–

इतिहासा आयनै में तेरो, हर करम कर्‌योड़ो छळकैगो।
कामी कुटळाई भर्‌यो चरित, न्यारो - निरवाळो पळकैगो।।१३८६।।

(स) अंत्यानुप्रास–

जद वीं नाचती नरतकी री, छम-छम-छम छमकंती पायल।
खेमैं में बैठे खिलजी रै, हीए नैं करगी ही घायल।।८५६।।

(द) लाटानुप्रास–

हो दंत-विहीन नहीं विसधर, वो काट सकै है कद भी आ।
हो दंत-विहीन, नहीं विसधर वो काट सकै है कद भी आ।।३७१।।

२. यमक अलकार–

जद चोखा 'करम' कर्‌या कोनीं, तो चोखा करम कियाँ होसी ? ६६६।।
लेकै चिराग ढूँढो चाए नॉ 'काल' मिली, नॉ काल मिलै।।१४१५।।

३ खण्ड यमक अलकार

ऊठीनैं साही हरम छोड, हर वेगम भी होय'र वे-गम।
रमणीय वनथळी में सुतंत्र, करती विहार रै'ती हरदम।।४११।।

४. श्लेष अलकार–

निज आण-वान किरपाण 'पाण',राखो नित सॉण चढायोडी।
छत्री ताणी धिक है जीणो, जिंदगाणी पाण गॅवायोडी।।१०८४।।

५. उपमालंकार के तीन भेद इस एक ही छद मे दृष्टव्य है–

(i) पूर्णोपमा– सूवै-सी नाक नुकीली अर,
अै विम्वाफळ-सा होंठ लाल।
(ii) मालोपमा– दाडिम, मोती-सा धवल दॉत,
(iii) लुप्तोपमा– रस भर्‌या गुलावी गोळ गाल।।२०७।।

६. रूपक अलकार–

है सहज नहीं ढूंढ'र ल्याणो, रत्नाकर स्यूँ मोती - कवित्त।।२६।।

७. उत्प्रेक्षा अलंकार–

(अ) फलोत्प्रेक्षा–

पग 'धरती' पर धरती जीं पळ, रुतराज महकणे लगज्यातो।
जी खोल विहॅसती स्वागत में, खग-व्रिन्द चहकणै लगज्यातो।।१०६४।।

(व) वस्तूप्रेक्षा–

हम्मीर सामनैं खड्‌यो निरख, यूँ हरख्या सगळा पुरवासी।
ज्यूँ दवा कारगर चाणचुकै, होगी हो रोग - विरह नासी।।३१३।।

(स) हेतुत्प्रेक्षा–

यूँ रगत कमल री सी लाली, पगथल्यॉ-हथेळ्यॉ छाई है।
जाणै तपती दोपारी में, चल पगॉ उभाणे आई है।।२०८।।

८. पुनरुक्ति अलंकार–

वॉ मात-पिता री सुभासीस, वरियोडी रै'वै रगरग में।।३५।।
परिवार सहित हम्मीर हित्त, हॅस-हॅस के ज्यान लुटाग्यो वो।।

९. अतिशयोक्ति अलकार--

गरजण करतो जद जोरा भरी, भींतडल्यॉ गढ्ढ हिला देतो।।१५४।।

१०. अन्योक्ति अलकार--

वयसंधि काळ पर चढी कळी, पँखुड़ी- पँखुड़ी मदमाण लगी।
गुजण करता मद रा लोभी, मँडराता भँवर लुभाण लगी।।१०६३।।

११ दृष्टात अलकार--

अणगिण तलवारॉ अेक साथ, रणभोम मॉय अैयॉ दमकी।
जाणै तो दसूँ दिसावॉ मैं, मिल अेक साथ बिजळी चमकी।।६३६।।

१२. सदेह अलकार--

है नार धरा री आ कोई, या परी सुरग स्यूँ उतरी है।
या खुदा ! हकीकत भी है आ, या कोई सुपन-सुन्दरी है।।८६०।।

१३. वक्रोक्ति अलकार--

हूँ सहन्साह दिल्ली पतिस्याह, जे अपणी पर आज्याऊँ मैं।
कर तनैं परस्त मैं करूँ ध्वस्त,गढ रणतभँवर जद चाऊँ मैं।।७४२।।
ऊँचो गढ रणतभँवर खिलजी ! खाला रो याडो थोडो है ?
ई स्यूँ दिल्ली सुलतान कई, टकराय खोपडो फोड्यो है।।७४३।।

१४ व्याजस्तुति अलकार

सिरधा स्यूँ माथै संतॉ रै, चरणॉं री धूळ लगार्यो हूँ।
सब मीनमेख काढणियॉं नैं, मैं लुळके सीस नवार्यो हूँ।।३४।।

काव्य रचना का हेतु- कवि ने पुरजोर शब्दो में अनेक स्थानो पर यह स्पष्ट किया है कि भारतवासी और विशेषकर यहा की युवा पीढी अपने यहां के श्रेष्ठ पुरुषो के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर राष्ट निर्माण मे जुटे, इस हेतु ही मैंने उदाहरणार्थ हम्मीर की इस जीवनी को कलम बद्ध किया है।

इस प्रकार आलोच्य कृति "हम्मीर महाकाव्य" एक प्रभावशाली, उत्प्रेरक तथा जीवन मूल्यो के प्रति सर्वथा समर्पित व्यक्तित्व "रणतभँवर गढ रा धणी राव हम्मीरदेव" की अमर गाथा है। आज के गिरते जीवन मूल्यो के वर्तमान युग में इस महाकाव्य मे अतिरजना भले लगे, किन्तु इसके जीवन मूल्य "शरणागत वत्सलता" हेतु सर्वस्व त्याग की उपादेयता और आवश्यकता रिक्त जीवन मे नव सचार करने में सर्वथा सक्षम है।

- प्रहलाद नारायण अग्रवाल
गीता लोक, भगवतगढ
सवाई माधोपुर (राजस्थान)
दूरभाष (०७४६२) २५४०३६

निजू पानो

तिरिया तेल हमीर हठ, चढै नीं दूजी बार

केवल राजस्थान मे ही नहीं, समूचै देस माय लोग–बागडा अपणी आपस री वतळाणं मांय ईं लोकोक्ति रो प्रयोग घणै गुमान स्यू करे। अजेय गढ रणथम्भौर रै स्वामी राव राजा हम्मीर देव चौहाण रो जग प्रसिद्ध ओ हठ मनैं भीं सरू स्यू हीं कविता लिखणै रै ताईं रिझावतो रैयो है। हम्मीर पर लिखियोड़ी मेरी अेक कविता 'खिलजी री पाती हम्मीर रै नाम' मनैं कवि सम्मेलणां रै मंच पर घणी प्रसिद्धी दिवाई। वैया भी हम्मीर री आ धरती मेरी करमथळी है। रोजी–रोटी री तलास मे जळमभौम रामगढ शेखावाटी नै छोड'र म्हारो परिवार मेरै टावरपणै मे हीं अठै आयग्यो हो। मैं खुद भी अठै ही पळ्यो अर वडो हुयोडो हू। मेरा स्व पिताजी श्री मन्नालालजी जांगिड अठै री सीमेन्ट फैक्ट्री मांय मुलाजिम हा। इन्जीनियरिंग री भणाई पूरी हुय ज्याणै रै याद मैं खुद भी १०–१२ बरस ताईं दूसरै कई वडां शहरां मांय नौकरी अर धधो करतो थको अंत मांय पाछो अठै ई आय'र वसग्यो। स्यात पिछलै जळमां रो कोई सीर है ई हमीरी धरती स्यू।

मेरी मा श्रीमती द्वारिका देवी रो ओ माननो है कै जीं धरती स्यूं मिनख रै दाणै पाणी रो सीर जुडियोडो हुवै, वी धरती रै ताईं आदमी नै जींवतै जी सदैव कुछ विसेस करणै री बणती कोसिस जरूर करतो रैणो चाए। वस, इणी भावना नै ले'र मैं ई महाकाव्य री रचना करतो थको मेरी ई करमभौम हमीरी धरती रो करज उतारणै रो ओ अेक छोटो सो प्रयास कर्‌यो है, कितणो सफल हुयो हूं, आ जांच करणो आप विद्वान पाठकां री समीक्षीय द्रिस्टी रो विसय है। वैया मै तो बस पडतां किणी महाकाव्य रै ताईं तयसुदा सगळा ही प्रचीन मापदडां नै मेरी कलम स्यू उकेरणै री पूरी–पूरी बणती कोसिस करी है। पण लीक छोड तीनूं चलै, सायर सिंघ सपूत हाळी वात रो मान राखतो–थको कुछ तो नुंवो भी होंवणो हीं चाए सोच'र सरग, खंड या अघ्याय आद री जगा छोटा–छोटा शीर्षक दे दिया है, जो स्यात नुवी पीढी नै ज्यादा दाय आसी।

देस री आ वर्तमान नुवीं युवा पीढी, जीं नै जे दिसाहीण री सज्ञा भी दी जावै तो स्यात कोई अतिसयोक्ति कोनी, वी नैं आज सुतंत्रता रो महत्व, आदर्स सिछ्या अर संगठित जुवा सगती रो देस हित मे उपयोग आद विसय रै बावत समझाणै री निरी जरूरत है। अर, अै सब बातां हम्मीर जिस्या म्हापुरसा रै जीवण चरित्र री लूंठी जाणकारी स्यूं हीं संभव है।

इतिहास ईं वात री पुरजोर साख भरै है कै ईं जग मे जंग हमेसा जर, जमीन अर जोरू ताईं ही माच्या है। पण, ईं रै विपरीत हम्मीर इतिहास रै ईं अध्याय में सरणागत नै दीन्योडै अपणै वचणा पर मर मिटणै रो अेक न्‍य और जोड दियो। विना कोई भी सुवारथ रै किणी विधरमी ... गत मांय अपणी जान लुटा देणै रो ओ अस्यो उदाहरण इतिहास रै प.

रै सिवाय किणी और रो मिलणौ दुरलभ है। इसडैं वचन सिरोमणी अर मातभोम री रिच्छ्या ताणी अपणी जान पर खेल जावणिये हम्मीर रै जीवण काल मे घटित वीं हमीरी हठ रै प्रकरण ने देस री ई जुवा पीढी ताणी पुगाणो अर वां रै मना रै माय पुरसारथ री भावना जागरत करणो भी ई महाकाव्य रै लेखण रो अेक मोटो उद्देस है।

१३ वी सदी री ईं अविस्मरणीय घटना नै कितणां ई कवि, लेखक अर चित्रकार अपणी–अपणी अभिव्यक्ति रै माध्यम स्यू जीवत राखणै री सराहणै जोग मैनत करी है। जिण माय काव्य विधा मे न्यायचंद्र सूरी रो सस्कृत भासा मे लिखियोडो हम्मीर महाकव्य, जोधराज रचित हम्मीर रासो, व्यास भांड रो हम्मीरायण, चद्रशेखर रो हम्मीर हठ, अमृतकलश रो हम्मीर प्रबंन्ध अर श्री लाल नथमलजी जोशी रो उपन्यास सरणागत आद मुख्य है। चद घटनावां मांय भारी मतभेद हुवता थका भी अै सगळा ग्रथ ई बात पर अेकमत है कै रणथम्मोर रो महाहठी सासक राव हम्मीरदेव, दिल्ली रै सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी रै अेक भगोडै गोमदस्या ने अपणै दुर्भेद गढ रणतभवर माय सरण दी अर वीं री रच्छ्या ताणी दियोडा अपणै वचणॉं पर जान लुटादी।

इण सव काव्य कृतिया नै निजर मे स्यू निकाळणै रै वाद कथानक री दीठ स्यू मनै न्यायचद्र सूरी रो हम्मीर महाकाव्य घटनावा री सच्चाई रै कुछ ज्यादा नेडै लखायो। ईं रो मुख्य कारण तो ओ है के ओ महाकाव्य हम्मीरदेव री म्रित्यु रै ठीक ८२ वरस वाद १३८३ ई माय हम्मीर पर लिखियोडी प्रथम काव्य कति रो मान प्राप्त ग्रथ है। (हम्मीरदेव रो सुरगवास १२ जुलाई १३०१ ई नै हुयोडो है) जिण माय वर्णित सगळी घटनावां री तिथिया फारसी भासा मे लिखियोडा कितणा ही तत्कालीन ग्रथा स्यू मेळ खावे है। दूसरी वात आ कै स्व न्यायचद्र सूरी राज दरवारा माय विरदावळ गाणिया कवि न हो'र अेक जैन मुनि हा। ईं लिए वांरी लेखनी माय अतिशयोक्ति री सभावना री गुंजाइस भी स्यात कम हुवणी चाए।

इण सगळी ही वाता पर गोर करतो थको मै अपणी ईं कति रो मुख्य आधार न्यायचद्र सूरी रै हम्मीर महाकाव्य ने ईं वणायो है। जद्यपि कुछ वाता जो मनै ज्यादा सटीक लागी वां अन्य काव्य कृतिया स्यू भी लीन्ही है। वरसा तक इतिहास रै पाना माय निजर गडावतो, विराय स्यू जुडियोडा विद्वान अर छेत्र रा वडा–वडेरा, वही भाट आद सव स्यूं वतळाण करतो अर कितणी ही वार विगम रणथभौर दुर्ग रै चप्पै–चप्पै मांय ईं महाकाव्य स्यू जुडियोडी कितणी ही घटनावा री सच्चाई री पैनी निजरा स्यू सभावना तलासतो मैं ईं कृति री रचना करी है, फेर भी आ मात्र अेक साहित्यिक कृति ही है, इतिहास कोनी। लेखण माय छेत्रीय बोली री रळक [illegible] रचनाकार री कलम री कमजोरी हुवै। मै भी स्यात ईं रो अपवाद कोनी। फळस्वरूप ही गोमदस्या, पतिसाह जिगडा सबदा नै गोमदस्या अर पतिस्याह लिखणै रो लोभ म्हे सेखावाटी रा रचनाकार धावता थका भी कम ही

छोड पावां हा। अर अब, क्यूंकै ओ निजू पानो है ईं ताई अंत मांय-

मित्रावां रो आभार

सांचो मित्र सुजान, मौको पडियां जाय मिल।
जग में बो ही जाण, बड़भागी नर, बावळा।।

नीति काव्य रै ई कथन री कसौटी पर खरी उतरती–सी मेरै जीवण री ईं काव्य सिरजण री जातरा रै हर मोड पर मनैं मिलियोडे सच्चै मित्रवा रो सहयोग पाय'र मैं सचमुच ही अपणै आप नै घणो सौभाग्यसाली मानू हूं। ई क्रति रो सफल सिरजण भी मेरै कुछ इसड़ा ही पारस सुभाव हाळा विद्वान बडेरा रो स्नेह अर मित्रावा रै सहयोग रो सुफळ है, जिणा रो मेरै स्यूं भावनात्मक लगाव मेरी लेखणी नैं सदैव माजतो–सॅवारतो र'वै है। ई कडी मांय मैं सर्व प्रथम राजस्थानी भासा रा जाण्या मान्या विद्वान सर्वश्री उदयवीरजी शर्मा, डॉ. किरणजी नाहटा, डॉ कल्याणसिंहजी शेखावत, बी.एल.माळी 'अशात' भवानीशकरजी विनोद, डॉ सतीसकुमार, डॉ कु महेन्द्रसिह 'नगर' डॉ सी पी. देवळ, डॉ मिठेश निर्मोही, ओम पुरोहित 'कागद' भरतजी ओळा, हरिमोहनजी रूख, डॉ मगराज सुतार ,डॉ महाबीरजी शर्मा (कोटपूतळी) डॉ अतुल कनक अर डॉ. लीला मोदी (कोटा) आद सगळा जणा रो क्रति प्रकासन रै ई सुभ अवसर पर हिरदै स्यूं आभारी हूं।

अर इण रै बाद, मैं आभारी हूं मेरै सागै रात अर दिन साहित्यिक चरचा माय रत रैणिया अर ईं कति पर अपणा घणमोला सुझाव देवणिया मेरा स्थानीय मित्र श्री राधेश्यामजी 'अटल' अर श्री ओम प्रकाशजी गौतम सहित ठा फतेहसिहजी राठौर श्री विनोदजी 'पदरज' डॉ मधुमुकुलजी चतुर्वेदी अर नवाकुर साहित्यकार चि महेश 'बेचैन' रो, जिका मनै लेखन ताईं सदैव प्रेरित करता रैया है।

ईं ग्रंथ री पांडुलिपि नैं अपणी निजरां मांय स्यूं निकाळ'र दियोडा घणमोला उचित सुझावा ताई मैं व्याकरण एवं ज्योतिष रा जाण्यां मान्या विद्वान पं सांवर मल जी शास्त्री सीकर अर मानीता श्री भंवरसिंहजी सामोर चूरू रो भी घणो आभारी हू। साथ ही पोथी बाबत शीर्षक स्यूं लिखियोडा भाव भर्या दो सबदा ताईं वरिष्ठ साहित्यकार श्रीयुत श्रीलाल नथमलजी जोशी बीकानेर रो भी घणैमान आभारी हू।

मैं नमन सहित आभारी हूं समीक्षकीय द्रिस्टी रा साचला धणी अर शिक्षा जगत रा जाण्या मान्या मनीषी डॉ प्रहलादनारायणजी अग्रवाळ (से. नि. प्राचार्य, श्री अग्रसेन कन्या महा विद्यालय, हिण्डौन सिटी/मूळ निवासी भगवतगढ जिला सवाई माधोपुर) रो, जिका अपणै घणमोलै समय अर नि.स्वार्थ श्रम रो दान दे'र इण महाकाव्य री भूमिका माय कति रो संपूर्ण परिचै अर मूल्यांकन करता थका क्रति रै साथ निष्पक्ष न्याय कर'र मनै घणो उपक्रत्य कर्यो है।

आभार प्रदरसण री ई कडी मांय मैं अपणै प्रवासी राजस्थानी बडेरां अर मेरै स्यू घणमोलो अपणेस राखणियां सर्वश्री प्रहलादरायजी, घनश्यामदासजी शोभासरिया (रूपा बनियान) श्याम सुन्दरजी केजरीवाळ (किसपोक) वी. डी. सुरेका, रवि वावू पोद्दार, अरुण कुमार जी पौद्दार, राधेश्यामजी अग्रवाळ'र राधेश्यामजी गोइन्का(इमामीग्रुप) पवन कुमार जी रुइया (डनलप इन्डिया) शान्ति वावू गोइन्का, प्रहलादजी गोइन्का, जुगलजी सराफ, हरिमोहनजी वांगड, हरि प्रसादजी वुधिया, संजयजी भूतोड़िया, वी.एन.चाण्डक, नरेन्दजी धानुका, एस.के. तोदी, राधाकिसनजी झुंझुणूवाळा, रतनजी शाह, मोहनलालजी तुलस्यान, सीतारामजी शर्मा (अ भा मा सम्मेलण) नन्दू वावू जालाण, दामोदरजी बीदावतका, महावीरजी नारसरिया, जुगलजी जेथळिया, विनोदजी छाजेड, जगदीशजी गारोडिया, विश्वनाथ केजरीवाळ अर अजयजी केजरीवाळ कोलकाता

सर्वश्री वनवारी लाल जी नेवटिया अर मुकुन्द वावू रूंगटा चाईवासा

सर्वश्री रामप्रसादजी चमड़िया, रामनिवासजी लखोटिया, जवाहरसिंहजी ढाका, संजयजी बेरावाळ अर एस. एस. मरवाह दिल्ली

सर्वश्री द्वारकाप्रसादजी अगरवाळ (स्टरलाइट) दिनेशजी शर्मा (गेनन डकरले) सत्यनारायणजी अग्रवाळ, विश्वनाथजी झुनझुनवाळा, महावीरजी सराफ, अखैराज एन. नांगळ, पुरुषोतमजी रुइया, व्रजकिशोरजी शर्मा, सीतारामजी जांगिड, लीलारामजी जांगिड, अर चोथमलजी कीर्तनियां मुंबई

सर्वश्री गजाननजी मालपाणी अर गणपतजी बंसाली सूरत

श्री विश्वनाथजी मारोठिया राउरकेला श्री गणेशजी कंदोई कटक श्री वावू वोहरा टाटानगर, सर्वश्री रमेशजी वंग अर पं. भवानीशंकरजी केरिया हैदराबाद श्री श्यामसुन्दर गोइन्का बैंगलोर श्री देवकी नन्दनजी हिम्मतरामका वैधन (म.प्र.) सर्वश्री एन. के. शर्मा अर सी. पी. हरलालका रेणु सागर श्री एस. डब्ल्यू. एम. रिजवी रेणुकूट श्री जुगलजी गटट्राणी अमरावती

सर्वश्री कन्हैयालालजी जैन, महावीरजी शर्मा (वी.एम.टी) वी.सी.शर्मा आर.सी.'गोपाल' रतनजी जांगिड अर विनोदजी नाटाणी जयपुर

श्री रामदेवजी चोयल अजमेर श्री ओ. पी. वरवाडिया कोटा

श्री राधेश्यामजी शर्मा वापी सर्वश्री कल्याणसहायजी शर्मा अर सतीशजी शर्मा नानी दमण सर्वश्री गुरुदत्तजी, मोहनजी अर नेमीचंदजी शर्मा गांधीधाम

सर्वश्री जानकीजी इन्दोरिया, जगदीशजी चोकड़ीका, सांवरमलजी मोर अर दामोदरजी शर्मा सीकर श्री अशोकजी चांडलिया चित्तौरगढ श्रीयज्ञदत्तजी स्वामी वांसवाडा श्री देवजी कोठारी उदयपुर अर डा.कीर्ति जैन अमेरिका आद नै भी घणै हेत स्यूं याद करूं हूं।

—ताऊ शेखावाटी

अथ श्री हम्मीर महाकाव्य

मंगळाचरण

रणस्तंभनाथं[1] त्रिनेत्रं गणेशं
महाकायलंबोदरं वक्रतुण्डम्।
सदासिद्धिदं मंगलायैकदन्तं
नमो शंभुगौरीसुतं विघ्नराजं।।

स्थूलखर्वदेहं गजेन्द्रं वरेण्यं,
शूर्पकर्णकं सुन्दरं धूम्रवर्णं।
सर्ववन्दितं मोदकं भालचन्द्रं,
मूषकध्वजं श्रीगणेशं नमामि।।

पूजूँ पै'ली पोत, गौरी पुत्र गणेस नैं।
पार लगावै पोत, भव सागर स्यूँ भगत री।।

गणनायक गणराज, बगसौ विद्या बुद्धि बळ।
करो सिद्ध सब काज, करी कुंभ कल्याणमय।।

माँय मंगळाचार, सादर सुमरूँ सुरसती।
विन्ती वारम्यार, वसो कलम वागेसरी।।

नमोस्तुते माँ भक्त सुभैपिणि
शुभ्र कमल पल्लव-दल वासिनि
हे मति-गति सारथी शारदे !
हंस वाहिनी नमोस्तुते माँ !

1- राजस्थान राज्य रै दक्षिणी पूर्वी कूणै में सवाई माधोपुर जिलै
मांय अरावली परवत श्रेणी री दो सुप्रसिद्ध पहाड़्या
रण अर थंभ (स्तंभ) जिणमें स्यूं ओक पहाडी थंभ
पर बणै अैतिहासिक रणथभ (रणथभौर)
दुर्ग रा अधिपति त्रिनेत्र गणेस

निःशुल्क वितरण

प्रवेस

(राधिका - छंद)

कूँचो-कूँचो बतळाण करै,
बस तीर तोप समसीरॉ री।
भारत रो राजस्थान रयो,
नित जलमभौम रणधीरॉ री।।१।।

ई धरती रो राणो प्रताप,
अकबर नैं धूळ चटाई ही।
मेवाड़ धरा 'आजादी हित,
रोटियॉ घास री खाई ही।।२।।

जीवण भर जॅगळॉ में भटक्यो,
नाहरियो गरद दहाड़ंतो।
चेतकड़े चढ्यो फिर्यो हरदम,
दुसमण–दळ र'यो पछाड़ंतो।।३।।

चौहाण प्रिथ्थवीराज वीर,
राठोड़ो दुर्गादास जठै।
जयमल पत्ता बादळ जिसडा,
रणधीरॉ रो हो वास अठै।।४।।

जद ज्यान हथेळी पर लेय'र,
वै वीर आण पर अडज्याता।
तो आण–बाण निज री खातिर,
बै महाकाळ स्यूॅ भिड़ज्याता।।५।।

बै अगारॉ स्यूॅ खेलणियॉ,
जळणै री चिंत्या कद करता ?
बै कफन बॉधकै सोवणियॉ,
मरणै रै डर स्यूॅ के डरता ? ६।।

खुद मौत डर्या करती हरदम,
बॉ महाकाळ रै दूतॉ स्यूॅ।
ई धरती मॉ रा लाडेसर,
बॉ बेटॉ सिंघ सपूतॉ स्यूॅ।।७।।

बै आजादी रा परवाना,
आजादी तॉई ही मरग्या।
निज कुळ री आण निभावंता,
जगती में नाम अमर करग्या।।८।।

जलम्यों है बो तो मरसी ही,
दुनियाँ में जिन्दो कुण रै'सी।
पण मातभौम पर खेत हुया,
बाँ री तो गाथा जग कै'सी।।६।।

इतिहास गवाही देर्यो है,
आ धरा खाण है वीरॉ री।
जो आण बाण हित लड़्या मर्‌या,
बाँ राजपूत रणधीरॉ री।।१०।।

बै राजपूत ज्यॉरी गरदण,
कटणै कटगी पण झुकी नहीं।
कद्‌दै भी दुसमण रै आगै,
रजपूती पगड़ी ढुकी नही।।११।।

बॉ रजपूतॉ मे सिरैमौर,
हम्मीर हुयोड़ो नामी है।
जो आज सुणाऊँ हूँ थानैं,
आ बीं री अमर कहाणी है।।१२।।

ऑ पूरै रजपूतॉ मॉई,
वचणॉ तॉई मरज्यावणियों।
नी हुयो और कोई दूजो,
निज हठ पर यूँ अडज्यावणियों।।१३।।

जो भारत री संस्क्रती धरम,
निज कुळ री मरजादा ताँई।
खुद ज्यान लुटा बैठ्यो अपणी,
सरणागत री रिच्छ्या मॉई।।१४।।

वी राजस्थानी गौरव नैं,
आओ सब मिलकै नमन करॉ।
गाथा ई धरती रै बेटै,
हम्मीर हठी री स्रवण कराँ।।१५।।

है आज जरूरत युवकॉ नै,
अै वातॉ सभी बताणै री।
ई वीर धरा रै बेटॉ नैं,
वीरॉ री कथा सुणाणै री।।१६।।

है आज जरूरत इणॉ मॉय,
सुत्योडो जोस जगाणै री।
इण मॉय छुप्योडी ताकत रो,
ऑ नै आभास कराणै री।।१७।।

आजादी री के कीमत है,
ओजूँ आनैं समझाणै री।
निज देस प्रेम रो इण सब नैं,
अब साँचो पाठ पढाणै री।।१८।।

है आज जरूरत ज्वानाँ नैं,
फिर स्यूँ चेतो करवाणै री।
अर देस भगति री मन माँई,
आँ रै फिर जोत जगाणै री।।१६।।

है आज जरूरत दुनियाँ में,
भारत रो मान बढाणै री।
निज मातभौम नैं चोटी पर,
हर छेत्र माँय पूँचाणै री।।२०।।

है माँग समय री अब गूंजै,
सुर देसप्रेम रा घर-घर में।
म्हापुरुसाँ रा जीवण चरित्त,
नित गाया जावै हर घर में।।२१।।

ई भारत रै टाबरियाँ रा,
हो वीराँ हाळा संसकार।
यूँ देसप्रेम स्यूँ भरी अेक,
भावी पीढी हो ज्याय त्यार।।२२।।

बीं भावी पीढी रै रगत्त,
जीं दिन उबाळ आज्यावैगो।
बीं दिन भारत रो हर बाळक,
हम्मीर हठी वण ज्यावैगो।।२३।।

किण री हिम्मत है जद कोई,
दुसमण हमलो कर पावैगो।
किण री माँ खाई सूंठ अठै,
जो इण स्यूँ आ टकरावैगो।।२४।।

ओ ही मन में उद्देस ले'र,
लिखणै बैठ्यो हूँ वीर काव्य।
इतिहास पुरुस हम्मीरदेव,
कीरत गाथा हम्मीर-काव्य।।२५।।

यूँ सँमदर–सो फैल्योड़ो ओ,
हम्मीरदेव जीवण चरित्त।
है सहज नही ढूंढ'र ल्याणो,
रत्नाकर स्यूँ मोती-कवित्त।।२६।।

पण हंसवाहिणी सुरसत माँ,
वीणापाणी नैं चित ध्या'कै।
ई सत किरतण री सरूआत,
कर र्‌यो हूँ मन में हरसा'कै।।२७।।

कवि धरम निभावण रै तॉई,
छोटो-सो कर र्‌यो हूँ प्रयास।
गुरूजण परिजण जण-जण सब स्यूँ,
आसीस मिलण री लियॉ आस।।२८।।

ओ बिघन हरण मंगळकारी,
गढ रणतभँवर रा बिन्दायक।
सब स्यूँ पै'ल्यॉ सुमरूँ थानैं,
थे दास जाण बणज्यो सायक।।२६।।

जिण रै प्रताप सूरज चमकै,
अर धरा धान नित निपजावै।
जिण री माया रो भेद कदे,
सुर नर मुनि संत नही पावै।।३०।।

बॉ महादेव बिरमा विसणू,
तीन्यॉ नैं सीस नवाय'र मैं।
गुरु चरण वंदना कर र्‌यो हूँ,
हिरदै में ध्यान लगाय'र मै।।३१।।

कुळ देव विश्वकर्माजी री,
वंदना करंतो बार-बार।
मैं रिसी स्रेस्ठ अंगीरा री,
पादुका-चरण निज सीस धार।।३२।।

निज इस्ट पवनसुत बजरंगी,
अंजनाँ मात रै लालै रो।
सुमरण कर र्‌यो हूँ साँचै मन,
बाबै सालासर हाळै रो।।३३।।

सिरधा स्यूँ माथै संतॉ रै,
चरणॉ री धूळ लगार्‌यो हूँ।
सब मीनमेख काढणियाँ नैं,
मैं लुळकै सीस नवार्‌यो हूँ।।३४।।

जिण रो रिण सात जलम में भी,
नीं चुका सक्यो कोई जग में।
बॉ मात-पिता री सुभासीस,
रै'वै बसियोडी रग–रग में।।३५।।

मन मिंदरियै में बस ज्यावै,
सब देवि-देवता क्रिपा करै।
सुरसती बसी रै कलम मॉय,
जद काव्य धरम रो काज सरै।।३६।।

आ मानतो हरखाणतो अर थामतो निज कलम कर।
इतिहास सिद्ध प्रसिद्ध गाथा ईं हठी हम्मीर पर।।
म्हाकाव्य रो लेखण करूँ मैं अब सरू विसतार में
'हम्मीर कुळ' गुणगाण करतो बुद्धि निज अनुसार मैं।।३७।।

हम्मीर वंस

चौहाण वंस रो सिखर पुरुस,
जिण नैं इतिहास बतायो है।
सम्राट आखरी दिल्ली रो,
जो हिंदुवॉ मॉय कुहायो है।।३८।।

बो तीजो प्रिथवीराज हुयो,
चौहाणॉ मॉय घणो नामीं।
हो अजयमेरु अर दिल्ली रै,
गढ रायपिथोरा रो स्वामीं।।३६।।

ओ प्रिथवीराज ब्याव अपणो,
संयुक्ता संग रचायो हो।
कन्नोज धणी जयचंद कुँवरि,
चौडैधाड़ै हर ल्यायो हो।।४०।।

जिद चढ्याँ बुरो हो ओ राजा,
सासक जबरो हठधरमीं हो।
बैयॉ मन स्यूँ हो साफ घणो,
माणस सीधो सतकरमीं हो।।४१।।

हो पोसक कळा – संस्क्रती रो,
विद्वानाँ रो गुणग्राही हो।
सोभित ई रै दरबार मॉय,
कविराज चंद्रवरदाई हो।।४२।।

बो सुपनैं में भी बैरी रै,
हो कर्‌यो पीठ पर वार नहीं।
रण छोड भागतै गौरी पर,
जिण री चाली तलवार नही।।४३।।

बो सौळह बार परास्त कर्‌यो,
सुलतान मुहम्मद गौरी नैं।
फैरूँ भी बीं नैं बगस दियो,
कर दया अधरमीं घौरी नैं।।४४।।

पण अंत मॉय गौरी बीं नैं,
धोखै स्यूँ जिन्दो पकड़ लियो।
अर दोनूँ ऑख निकळवाकै,
ल्या जंजीराँ मे जकड़ दियो।।४५।।

फिर संग चंद्रवरदाई रै,
प्रिथवी नैं गजनी लेग्यो बो।
जीत्योडी दिल्ली निज गुलाम,
अैबक नै जातो देग्यो बो।।४६।।

गजनी रै कारावास मांय,
प्रिथवी बोल्यो— रै चंद्र ! जाग।
'तेवड' होवै जे तेरै में,
तेवड़ कोई निज नुवों राग।।४७।।

तद चतुर चंद्रवरदाई चट,
अपणी चतुराई दिखळाई।
सुलतान मुहम्मद गौरी नै,
लिखकै पाती इक भिजवाई।।४८।।

सुलतान ! मेरो आंधो राजा,
अैसो है तीरन्दाज अेक।
जो छेद सकै है अब भी झट,
उडतै पंछी नैं तीर फैंक।।४६।।

थे चावो तो ई हूनर री,
ले लियो परिच्छ्या जद चाए।
आ बात कणा पितवाण लियो,
थॉरी हो इंच्छ्या तद चाए।।५०।।

गौरी जद निज दरबार मॉंय,
प्रिथ्थवीराज नैं बुलवायो।
खग बिठा पींजरै मॉय अेक,
ऊँची खूँटी पर टॅंगवायो।।५१।।

अर, क'यो चंद्रवरदाई नैं,
रै चंद्र ! थारलै स्वामीं रो।
कुछ करतब नुवों दिखाय अठै,
आँधळै धनुर्धर नामीं रो।।५२।।

आ चिडी पीजरै मॉय देख,
कैयॉ चूँचाट मचा'री है।
सुलतानें गजनी नैं ई री,
चूँचाट दाय नीं आ'री है।।५३।।

ओ अंधो प्रिथवीराज आज,
अपणो इक तीर चलाय'र जे।
पीजरै मॉय आ बंद चिडी,
दिखलादे मार गिराय'र जे।।५४।।

तो गौरी रो ओ वादो है,
मै ई री ज्यान बगस द्यूँगो।
नीं तो ई नैं तडफा-तड़फा,
यूँ ई मरवाय'र जक ल्यूँगो।।५५।।

मन ही मन मुळक्यो वरदाई,
सुरसत री ई अनुकम्पा पर।
कै'सी उल्टी मत फेरी है,
गौरी री अत समय आय'र।।५६।।

फिर हुयो तमासो झट्ट सरू,
कविराज चंद्रवरदाई रो।
प्रिथवी रै हाथाँ गौरी नैं,
ई जग स्यूँ देण बिदाई रो।।५७।।

बो जाय'र प्रिथवीराज कनैं,
हाथाँ में धनुस थमाय दियो।
अर खींच प्रतंच्या प्रिथवी भी,
धनुवाँ पर बाण चढाय लियो।।५८।।

फिर हाथ पकड़ बो प्रिथवी रो,
दरबार बीच ल्या खड़्यो कर्‌यो।
कुछ कर'र इसारो धीरै स्यूँ,
झट क'यो कान में खड़्यो-खड़्यो।।५९।।

कुल चार बाँस[1] री दूरी पर,
गज होदै जितणी ऊँचाई।
उतरादो बैठ्यो है गौरी,
चौहाण चूक अब नाँ जाई।।६०।।

अर इणी बीच चीख्यो गौरी,
रै आँधळिया अब चला तीर।
जे असल धनुर्धर है तो आ,
चीखंत चिडकली दिखा चीर।।६१।।

आ सुणतॉई अंधो प्रिथवी,
अपणो कौसल दिखलाग्यो हो।
अर तीर चलाय सबद भेदी,
गौरी नैं मार गिराग्यो हो।।६२।।

बीं प्रिथवीराज धनुर्धर रो,
इक हो बेटो गोविन्दराज।
ई वंस मॉय बो ही पै'लो,
हो सासक गढ रणथंभ राज।।६३।।

गोविन्दराज सुत वाल्हण रै,
दो पुत्र हुयोडा है सुभट्ट।
हो नाम अेक रो प्रहलादण,
अर हो दूजै रो वागभट्ट।।६४।।

बीं वागभट्ट रो जैत्रसिंघ,
सासक जबरो रणधीर हुयो।
अर जैत्रसिंघ रै घर पैदा,
इतिहास पुरुस हम्मीर हुयो।।६५।।

या यूॅ कै'द्यो बीं प्रिथवी रो,
इक वागभट्ट पडपोतो हो।
अर महाहठी हम्मीरदेव,
बी वागभट्ट रो पोतो हो।।६६।।

हम्मीर जणा घर जैत्रसिंघ,
ई कुल रै मॉय जलमिंयो हो।
गढ रणतभँवर स्यूँ बूंदी तक,
चौहाणो राज जमलियो हो।।६७।।

ई जैत्रसिंघ रो अनुज एक,
रणधीरसिंघ रणबंको हो।
बीं री बहादुरी रो तो जद,
दिल्ली तक बजतो डंको हो।।६८।।

बो रणतभँवर री ढाल रये,
छाण रै किलै रो स्वामीं हो।
दिल्ली अर रणथंभोर बीच,
ओ गढ अजेय हो, नामीं हो।।६९।।

जद तक जिन्दो रणधीर र'यो,
कोई दिल्ली सुलतान कदे।
रणथंभ पूग नीं चला सक्यो,
अपणो सैनिक अभियान कदे।।७०।।

चौहाण कुळ री वॉ दिनाँ जग मॉय तूती बाजती।
अर जैत्रसिंह री छेत्र माँईं हद्द गाई गाजती।।
वीं स्वर्ण जुग-चौहाण में ईं काव्य रो नायक हठी।
'हम्मीर' जळम्यों जैत्रसिंह घर स्रेस्ठ सुन्दर सुभ घड़ी।।।७१।

आ सुणताँई अंधो प्रिथवी,
अपणो कौसल दिखलाग्यो हो।
अर तीर चलाय सबद भेदी,
गौरी नैं मार गिराग्यो हो।।६२।।

बीं प्रिथवीराज धनुर्धर रो,
इक हो बेटो गोविन्दराज।
ई वंस माँय बो ही पै'लो,
हो सासक गढ रणथंभ राज।।६३।।

गोविन्दराज सुत वाल्हण रै,
दो पुत्र हुयोडा है सुभट्ट।
हो नाम अेक रो प्रहलादण,
अर हो दूजै रो वागभट्ट।।६४।।

बीं वागभट्ट रो जैत्रसिंघ,
सासक जबरो रणधीर हुयो।
अर जैत्रसिंघ रै घर पैदा,
इतिहास पुरुस हम्मीर हुयो।।६५।।

या यूँ कै'द्यो बीं प्रिथवी रो,
इक वागभट्ट पड़पोतो हो।
अर महाहठी हम्मीरदेव,
बीं वागभट्ट रो पोतो हो।।६६।।

हम्मीर जणा घर जैत्रसिंघ,
ई कुल रै मॉय जलमियो हो।
गढ रणतभॅवर स्यूं बूंदी तक,
चौहाणो राज जमलियो हो।।६७।।

ई जैत्रसिंघ रो अनुज अेक,
रणधीरसिंघ रणबंको हो।
वीं री बहादुरी रो तो जद,
दिल्ली तक बजतो डंको हो।।६८।।

बो रणतभॅवर री ढाल रये,
छाण रै किलै रो स्वामीं हो।
दिल्ली अर रणथंभोर बीच,
ओ गढ अजेय हो, नामीं हो।।६९।।

जद तक जिन्दो रणधीर र'यो,
कोई दिल्ली सुलतान कदे।
रणथंभ पूग नीं चला सक्यो,
अपणो सैनिक अभियान कदे।।७०।।

चौहाण कुळ री वाँ दिनाँ जग मॉय तूती बाजती।
अर जैत्रसिंह री छेत्र मॉई हद्द गाई गाजती।।
वीं स्वर्ण जुग-चौहाण में ई काव्य रो नायक हठी।
'हम्मीर' जळम्यों जैत्रसिंह घर स्रेस्ठ सुन्दर सुभ घड़ी।।।७१।

हम्मीर जलम

ही जेत्रसिंघ नैं बहुत घणी,
प्यारी निज राणी हीराँदे।
ई महाकाव्य रै नायक री,
माँ ही पटराणी हीराँदे।।७२।।

ही वीरांगना विदूसी बा,
तन–मन स्यूँ साँची छत्राणी।
सुन्दर सुडोळ गुणसील घणी,
हर भाँत जोग पद पटराणी।।७३।।

ई राणी स्यूँ घर जैत्रसिंघ,
समयानुसार सुत तीन हुया।
बैयाँ तो निज बूतै सारू,
बै तीनूँ वीर प्रवीण हुया।।७४।।

पण बिचलो बेटो जीं रो हठ,
इतिहास माँय परसिद्ध हुयो।
ई जगती माँय बडो सब स्यूँ,
सरणागत रच्छक सिद्ध हुयो।।७५।।

गुण–अवगुण निज रो पळकारो,
मारै हर अेक अवस्था में।
पगल्या सपूत पालणिएँ क्यूँ,
दिखज्यावै गरभावस्था में।।७६।।

आ बात सिद्ध बॉ दिनॉ जणा,
घर जैत्रसिंघ होयोड़ी है।
रणथंम वासियॉ सगळाँ री,
ऑखडल्यॉ स्यूँ जोयोड़ी है।।७७।।

संजोग दूसरी बार जणा,
होई हीरॉदे गरभवती।
बा दंग हुई आभास कर'र,
गरभस्थ सिसू री परवरती।।७८।।

बो कई बार चा'तो बीं स्यूँ,
धोबो भर माटी खावण री।
अर इंच्छ्या करतो बार–बार,
दुसमीं रै रगत नहावण री।।७९।।

नित सुवै – साम वो राणी नैं,
सैलेस्वर जावण उकसातो।
अर सुणणो सिवमहिमनस्त्रोत,
हर पल राणी रै मन भातो।।८०।।

अै वातों इक दिन राणी जद,
मन मॉय जरा सकुचाती-सी।
राजा नैं दी सारी वताय,
कुछ डरती-सी, घवराती-सी।।८१।।

बोली– अबकाळै जाणै के,
बजराक पेट में पळ'री है।
जद स्यूँ पग भारी होयो है,
स्वामी! मम ज्यान निकळ'री है।।८२।।

म्हाराज कुँवर सुरताण जणा,
ई कूख मॉयनैं आया हा।
जापो पैलड़ो हुवंताँ भी,
कद इतणा कस्ट उठाया हा ? ८३।।

पण ओ गरभस्थ कुँवर तो कुछ,
ज्यादा ई खैबी कर र्‌यो है।
बैयाँ भी ई नैं गर्भ मॉय,
ग्यारवों महीनों चल र्‌यो है।।८४।।

जाणै कद करसी सच सुपनो,
ओ गढ री दाई–माई रो।
घूँमै ही नेगण आस लियाँ,
बा कद स्यूँ नाळ कटाई रो।।८५।।

ताळी पटक्या करता हिंजड़ा,
गढ पोळी नाचण–गावण नैं।
यूँ तरस–तरस नित जार्‌या है,
ज्यूँ तरसै करसो सावण नैं।।८६।।

दासियाँ बिचारी कद स्यूँ ई,
रावळै माँय अजवाण–सूंठ।
चाव स्यूँ बरणियाँ माँय भर'र,
रखदी है सावळ छाँट–कूट।।८७।।

सथिया देवण रो कोड लियाँ,
मन माँय भाण सब तरसै है।
बीं सुभ दिन रो तो इन्तजार,
नित गाँव–गळी हर फळसै है।।८८।।

काँसी री थाळी रो खुडको
ई राजमहल रै आँगण स्यूँ।
सुणणै उतावळी हो'री है,
जाणै सारी पिरजा कद स्यूँ।।८९।।

पण आस पूरतो सगळाँ री,
जाणै वो सुभ दिन कद आसी।
वीं री उडीक में मेरी तो,
स्वामी ! आ ज्यान निकळ ज्यासी।।६०।।

राणी री इण सब बाताँ स्यूँ,
चिंतित होयोड़ो-सो राजा।
जा राजगुरु स्यूँ बतळायो,
दुख मे खोयोड़ो-सो राजा।।६१।।

मन हीं मन हरख्यो राजगुरु,
राजा री सारी बात सुण'र।
अर ऑख बंद करतो बोल्यो,
हर भाँत सकल सुभ-असुभ गुण'र।।६२।।

राजन! सुभ ही सुभ है सब कुछ,
चिंत्या री कोई बात नहीं।
जीं रो नीं हुयो प्रभात कदै,
इसड़ी कोई भी रात नहीं।।६३।।

गर्भस्थ सिसू पॉख्यॉ बा'रै,
बस ईं ग्यारवै महीनै मे।
होवण हाळो है जल्दी
धर धीरज थोड़ो सी

राणी रा सारीरिक लच्छण,
बाळक रो गरभाधान समय।
दोन्याँ रो करतॉ विसळेसण,
है मन मेरो हर भॉत अभय।।६५।।

बळ जोग म्हारलो साफ–साफ,
मन्नैं आभास करावै है।
गरभस्थ सिसू नैं पुल्लिँग अर,
आतमॉ महान बतावै है।।६६।।

हर बडी विभूती जगती में,
जलमैं सुभ ग्रह संजोग बण्या।
ओ सिसु भी हो'सी गरभ मुक्त,
बणसी सुन्दर संजोग जणा।।६७।।

इसड़ी विभूतियॉ बैयॉ तो,
जद भी धरती पर आवै है।
घर स्रेस्ट मॉय चाल'र सारा,
ग्रह खुद भेळा हो ज्यावै है।।६८।।

फेरूँ भी मूरत सुन्दर नै,
घडणै में बगत घणो लागै।
माळी सींचो सौ बार घडा,
फळ तो रुत आयॉ ही पाकै।।६९।।

है प्रस्न जठै तक ई पख में,
राणी रै कस्ट उठाणै रो।
स्वाभाविक पीड़ा है आ तो,
है विसय नहीं घबराणै रो।।१००।।

कुछ अति विसिस्ट चोखी'र बुरी,
आतमॉ गरभ में आवै है।
तो निज महतारी पर इसडो,
अपणो परभाव जतावै है।।१०१।।

फिर ओ तो अंस अग्नि रो है,
अपणी तासीर दिखासी ही।
जद तक नीं होसी गरभ मुक्त,
राणी रो डील तपासी ही।।१०२।।

चौहाण वंस री उतपत्ती,
अगनी स्यूँ मानीं जावै है।
आ तनैं सुणाऊँ कथा जिकी,
त्रेता स्यूँ चाली आवै है।।१०३।।

भ्रगुवंस-मणी मुनि परसराम,
क्रोधी सुभाव रा स्वामीं हा।
मुनि ऋचक पौत्र जमदग्नि पुत्र,
सब रिसि-मुनियॉ में नामीं हा।।१०४।।

बै अेक बार हो क्रोधवंत,
जो धरम विमुख होयोडा हा।
सगळा छत्री संघार दिया,
जो विसयाँ में खोयोड़ा हा।।१०५।।

यूँ सासन - कर्ता छत्रिय कुळ,
हो ज्याणै स्यूँ सम्पूर्ण नस्ट।
राजा विहीन पिरजा सारी,
भुगतण लागी जग माँय कस्ट।।१०६।।

घणघोर अराजकता छागी,
धरती रै कूँणै - कूँणै में।
राकस उतपात मचाण लग्या,
जगता मुनियाँ रै धूणै में।।१०७।।

जद होय दुखी रिसि-मुनि सगळा,
सोचण लाग्या अब तो कोई।
फिर स्यूँ पैदा हो छत्रि वंस,
आ बिगड़ी बात बणै तोई।।१०८।।

आ सोच'र आबू परवत पर,
इक दिन सगळा भेळा होग्या।
निज मनस्या पूरण रै खातिर,
सब सिव आराधन में खोग्या।।१०९।।

त्रोटक - छंद

भज रै मन संभु उमॉ सहितं
'हर' नाम सदाँ हर भॉत सुभं
किरपालु दयालु सदॉ विमलं
निज भक्त जणॉ हित कल्प समं।।११०।।

भज नित्त सदॉ सिव ओढर नैं
अज आदि अनादि अगोचर नैं
अचलं अभयं वरदं द्रविणं
सव ताप'र व्याधि व्यथा समनं।।१११।।

भगती सिव संकर मॉय रम्यॉ
सिव ही सिव है 'सिव' नाम भज्यॉ
सुख सांति क्रिपा परमायत्तनं
करुणामय रूद्र पवित्र परं।।११२।।

सिर जूट जटा ससि गंग वहे
गळ नाग कराळ भुजंग रहे
कर मॉय त्रिसूळ सजै डमरू
वृष - वाहननाथ भवं सुमरूँ।।११३।।

म्रिग छाल लपेट भभूत रमा
दिन-रात रमै सॅग सैल-सुता
गिरिजा पति दीन दयाल विभुं
सव भक्तन रो रखवाळ प्रभुं।।११४।।

सब देवन में तुम देव महा
मिल ध्यान धरै हरि लोक-पिता
सगळा नर-देव'र संत जती
सुमरै सिव संकर पारवती।।११५।।

नित नेम स्यूं संकर नाम रटै
सबळा भव बंधन पाप कटै
सगळा मनवांछित काम सरै
दुख दारुण रोग-वियोग हरै।।११६।।

धुन ॐ नमः सिवाय मंत्र
आकास मार्ग स्यूं पवन चढी।
हळवॉ - हळवॉ उडती - उडती,
कानीं पावन सिव धाम बढी।।११७।।

जद प्रगट्यो भोळो भंडारी,
अपणै भगताँ री टेर सुण'र।
अर आय बिराज्यो अचल रूप,
बीं हरे - भरे अर्बुद गिरि पर।।११८।।

अर बोल्यो– भगतो ! डरो मतॉ,
कामनॉ सफळ हो'सी थारी।
कर अग्निदेव आह्वान सकल,
थे करो जिग्ग री अब त्यारी।।११६।।

यूँ सिव आज्ञा स्यूँ वठै अेक,
होयो हो जिग्ग वडो भारी।
वीं जिग्ग मॉय इक अग्निपुत्र,
प्रगट्यो हो च्यार भुजा धारी।।१२०।।

वीं दिव्य पुरुस रो नाम जणा,
ई ताँई हीं चौहाण पड्यो।
वीं रै ई बळ रजपूतॉ में,
चौहाण वंस परवान चढ्यो।।१२१।।

बीं अग्नि पुत्र रै ई तेरै,
कुळ दीपक रो उजियाळो अब।
मन्नैं लागै है गढ्ढ मॉय,
है वेगो होवण हाळो अब।।१२२।।

ई तॉई चिंत्या छोड सकळ,
अर राज–काज में चित्त लगा।
होणी नै निज बळ चालण दे,
मन स्यूँ मायूसी दूर भगा।।१२३।।

जद तिथ पुळ घड़ी मिल्या सारा,
सुभ लगन मॉय संजोग बण्यो।
तद म्हाराणी हीरॉ देवी,
चौहाण वस कुळदीप जण्यो।।१२४।।

ई सुभ अवसर पर चौतरफाँ,
महलाँ में खुसियाँ मचण लगी।
राजा नैं देण बधाई झट,
दास्याँ पर दास्याँ भगण लगी।।१२५।।

मन मोद मनायो हरकोई,
राजा रै होयो जाण कुँवर।
सोनैं रा थाळ बजण लाग्या,
गरणाय उठ्यो गढ रणतभँवर।।१२६।।

सुर मीठा छेड्या सहनाई,
नौबत नग्गारा बजण लग्या।
बाँदरवाळाँ स्यूँ गळी–गळी,
घर का दरवाजा सजण लग्या।।१२७।।

चौरावाँ केसर – कस्तूरी,
अर लाल–गुलाल उडण लागी।
ढप ले हाथाँ में निरत करण,
नरतक मंडळी सजण लागी।।१२८।।

यूँ बीं मस्ती रै आलम में,
धरती पर सुरग उतर आयो।
चप्पै - चप्पै में बहुत घणो,
गढ रणतभँवर आणँद छायो।।१२९।।

निज पुत्र जलम पर जैत्रसिंघ,
गढ रो खज्जानो खोल दियो।
दे भारी दान दळिदराँ रै,
दाळद नैं मोत्यॉ तोल दियो।।१३०।।

गुरूजण परिजण द्विजराज सकल,
कवि कोविद चारण भाट जणा।
संतुस्ट कर्‌या सबनैं राजा,
आसानुकूल धन बॉट जणा।।१३१।।

गढ़ री पोळी–पोळी में जद,
किरपा राजा री फळण लगी।
हम्मीर जलम उत्सव पर नित,
घर–घर दीवाळी मनण लगी।।१३२।।

जळता असंख्य दिवळॉ री लौ,
गढ रो अंधेरो भगा दियो।
गढ रो कंगूरो – कंगूरो,
रोसणी मॉय जगमगा दियो।।१३३।।

सुभ घडी देखकै महलॉ स्यूँ,
राजा संदेसो भिजवायो।
बाळक रै नाम करण ताँईं,
तद कुळ रो राजगुरू आयो।।१३४।।

जद नाम करण करणै खातिर,
पतड़ै नैं राजगुरू खोल्यो।
तो भाग निरखतो बाळक रो,
राजा नैं राजगुरू बोल्यो।।१३५।।

सुण जैत्रसिंघ तेरो ओ सुत,
ई कुळ में नाम कमावैगो।
अर सारी जगती में अपणो,
ओ नाम अमर कर ज्यावैगो।।१३६।।

होवैगो वीर लड़ाको ओ,
बाळक चौहाण घराणै रो।
हठ रो पक्को प्रण रो पाको,
रजपूतॉ मॉय ठिकाणै रो।।१३७।।

आ बात जलम कुंडळी साफ,
ई बाळक री दरसावै है।
ग्रह स्थिती चंद्र अर मंगळ री,
दसवैं भाव में बतावै है।।१३८।।

कुंडळी मॉय दसवैं घर में,
अै दोनूँ ग्रह भेळा होय'र।
आणै रो मतलब है जातक,
है नक्की ही बढभागी नर।।१३९।।

सागै ही तीजै भाव मॉय,
राहू पराकरमकारी है।
अर गुरु रो नौवैं घर होणो,
आ वात और भी भारी है।।१४०।।

यूॅं कै'तो बाळक रो 'हमीर',
जद नाम थरपियो, राजगुरू।
अर जैत्रसिंघ स्यूँ लेय बिदा,
निज धाम चल दियो,राजगुरू।।१४१।।

गुरु बचनॉ नैं सुण राणी रै,
मन मॉंय उमड़ियो घणो प्यार।
गोदी में सूत्योड़ै सुत रो,
मुख चूमण लागी बार–बार।।१४२।।

जद ममता फूट पडी मॉ री,
हीये मे हेत अपार भर्यो।
राणी री दोनूॅं छात्यॉ स्यूॅं,
बण धार दूध री छळक पड्यो।।१४३।।

जद घणो सहन नीं करण सकी,
तो मॉय ढोलिये जाय'र बा।
झट लेय कुॅंवर नैं पोढ गई,
निज छाती स्यूॅं चिपकाय'र बा।।१४४।।

आकंठ डूब वात्सल्य मॉय,
सुत नैं स्तनपान कराण लगी।
बहुभॉत कुँवर नैं लाड लडा,
मन मॉय घणो सुख पाण लगी।।१४५।।

कद्दै गुदगुदी करै छेडै,
कद्दै हुलरावै पुचकारै।
हो गई बावळी–सी राणी,
कद्दै भींचै थपकी मारै।।१४६।।

आ वात स्यात जगत्त में सच ही कही है तव अठै।
टाबर खिलाती टेम टावर जाय वण है सव अठै।।
राजा'र राणी रात-दिन हद ले कुँवर नैं गोद में
हरखंत काटै निज वखत सुत संग डूब्या मोद में।।१४७।।

युवावस्था अर ब्याव

यूँ वगत वीततो गयो और,
हम्मीर बडो होवण लाग्यो।
इतिहास नुवों गढ़ रणतभॅवर,
पसवाड़ो फेरतडो जाग्यो।।१४८।।

बीत्यो बाळकपण अर ज्वानी,
तद चै'रै पर छळकण लागी।
ताकत स्यूँ भरियोड़ै तन री,
बोटी–बोटी नाचण लागी।।१४६।।

सुन्दर तेजस्वी मुखमंडळ,
पाथर सी भीम बजर छाती।
मतवाळो हाथी–सो चलतो,
तो दस्यूँ दिसावॉ थर्राती।।१५०।।

अैयाँ को जबर ज्वॉन हो बो,
जे मन में मत्तो कर लेतो।
नाहर को पकड़ जबाड़ो झट,
दो टुकड़ा करकै धर देतो।।१५१।।

हो सध्यो निसाणैबाज जणा,
तरकस स्यूँ तीर चला देतो।
पींपळ - पत्तै री नौक बींध,
धरणी पर झट्ट गिरा देतो।।१५२।।

फींकेड़ो दुसमण पर खाली,
जातो कोई भी वार नहीं।
हो असल सिंघणी रो जायो,
ताकत रो हो सुम्मार नहीं।।१५३।।

गरजण करतो जद जोस भरी,
भीतड़ल्यॉ गढ़ हिला देतो।
हो मरद गाबरू खड़्यो ऊँट,
मुक्कै स्यूँ मार गिरा लेतो।।१५४।।

अर पकड़ हाथ में झटकै स्यूँ,
जद बो तलवार चला देतो।
तो अेक वार में हीं माथो,
हाथी रो काट गिरा देतो।।१५५।।

धीरै - धीरै हुँसियार हुयो,
पग राजनीत में धरण लग्यो।
जद राज - काज में निगराणी,
अपणै बूतैसिर करण लग्यो।।१५६।।

जा गॉव - गाँव भेळा करकै,
सगळा हमउम्र जुवानॉ नैं।
ई धरती माँ रा पूत असल,
बेटॉ मजदूर-किसानाँ नैं।।१५७।।

हळ सागै सस्त्र चलाणै री,
विद्या सबनैं दिलवाई बो।
यूँ अपणी न्यारी-निरवाळी,
भारी इक फौज बणाई बो।।१५८।।

बीं फौज संग बो कई बार,
फैलाण बाप रो राज--पाट।
करिया सैनिक अभियान कई,
निज बैर्‌यॉ रा सिर काट-काट।।१५९।।

तद आसपास रजवाड़ॉ में,
जिक्कर हमीर रो होण लग्यो।
ब्याह् जोग उमर ही ईं तॉई,
कन्या पख मौको टोण लग्यो।।१६०।।

कितणॉ हीं राजा–रजवाड़ा,
निज कुँवर्यॉ रा नारेळ जणा।
हम्मीर नाम भिजवाया तो,
हा लिया जैत्रसिंह झेल जणा।।१६१।।

अर देख च्यार सुन्दर कुँवर्यॉ,
'रगादे' सहित ठिकाणै री।
ब्याह् ल्यायो झट हम्मीर संग,
मानीता राज – घराणै री।।१६२।।

आँगणिएँ बहुऑ च्यार साथ,
अपणी पायल छमकाई जद।
तो सासू राणी हीरॉदे,
मन फूली नहीं समाई तद।।१६३।।

बळ बुद्धि रूप गुण च्यारूँ ई,
ईस्वर री देन कुहावै है।
पण मिनख कर्याँ उद्यम नक्की,
इण में सुधार तो आवै है।।१६४।।

बै च्यारूँ बहुराण्याँ बैयॉ,
सासू–सुसरै नैं प्यारी ही।
पण सेवा भाव सहज अपणै,
पड़गी रंगादे भारी ही।।१६५।।

बा राजमहल में सब स्यूँ हीं,
खुस होय सदाँ बतळाती ही।
सब दास–दासियाँ तक स्यूँ भी,
जी भरकै हेत जताती ही।।१६६।।

बाणी मिठास बळ बा अपणै,
यूँ गढ में चर्चित हो'गी ही।
राजा–राणी रै साथ–साथ,
मन पुरवास्यॉं रो मो'गी ही।।१६७।।

हम्मीरदेव पर तो जाणै,
कोई जादू ई कर'गी ही।
घी और खीचडी री नॉई,
मन मॉय मिजाजण रळ'गी ही।।१६८।।

बीनणी ब्यावली बण जी दिन,
बा कामण ई गढ में आई।
इक भॅंवर कमल पॉखड़ल्यॉं में,
होग्यो हो बंद सदॉं तॉई।।१६९।।

निज रंग महल में रतन जड़ित,
ढोलिए चढी बा कळी जणा।
चंदा–चकोर रै प्रथम मिलण,
नैणा रातडली ढळी जणा।।१७०।।

कुंडळियो - छंद

।।१७१।।

मदमाती मधुयामिनी, मौसम हो मधुमास
मुळकंती मधुमालती, महकंती मधुवास
महकंती मधुवास, दियो कर तन-मन पागल
तिरियाँ-मिरियाँ भरी, छळकणै लागी गागळ
कह ताऊ कविराज, हियै में हद हुळसाती
मधुकर लियो रिझाय, कळी-कामण मदमाती

छप्पय - छंद

।।१७२।।

जद लोभीड़ो भँवर, तान छेड़ंतो माच्यो
हरखंतो मन मॉय, करंतो तांडव नाच्यो
कळी पँखुडियॉ चढ्यो, मुळकतो मधरॉ-मधरॉ
अधरॉ-अधरॉ जाय, धर्‌या अधरॉ नैं अधरॉ
लपटण - झपटण मॉय यूँ जद, हुयो उदित कंदरप तन
लग्यो करण रसपान भँवरो, मोवीड़ो हुय मुदित-मन

दुर्मिल - सवैयो

।।१७३।।

रतिकाल चढ्यो रितुराज जणा जड़-चेतन सै मदमाण लग्या
मधुवंत वसंत बयार बही नर-नारि हिया हुळसाण लग्या
वन-बागन में खिलती कळियॉ तितली भँवरा मॅंडराण लग्या
चकवो-चकवी मिल आपस में बतळावत चूंच भिड़ाण लग्या

मत्तगयंद - सवैयो (मालती)

।।१७४।।

सीतळ स्वच्छ सरोवर मॉय सरोज सरूप खिल्या महकंता
नाचत मोर किलोळ करै बहु कीर अकास उडै चहकंता
कुंजन-कुंजन लोग रम्या मन भावन कोयल तान सुणंता
छोड'र लाज भया सगळा बस में निज रै मन काम भरंता

सुमुखी - सवैयो

।।१७५।।

मदांध हुयो जद मौसम तो मनड़ा सब रा भरमाण लग्या
सज्या सब छैल जणा मिलकै गळियॉं हुड़दंग मचाण लग्या
बजावत चंग म्रिदंग सभी कुरजॉ'र धमाळ सुणाण लग्या
घुमंत सुठौर कुठौर जणा सब ईसर गौर लुभाण लग्या

मदिरा - सवैयो (मालिनी)

।।१७६।।

रंग बसंत बहार जणा धरती पर आ बिखराण लगी
ओढ'र चूनड़ धानि जणा धरती मन में हरखाण लगी
खेतन गेहुँन और चणा पकती फसलॉं लहराण लगी
घूंघट ओट खडी फिररााण वधूटि हिये सरमाण लगी

राज्याभिसेख

हो जैत्रसिंघ रो जेस्ठ–पुत्र,
सुरत्राण बियां तो सूर घणो।
पण राज-काज स्यूं बीं रो मन,
बचपण स्यूँ रै'यो दूर घणो।।१७७।।

होयो जुवान जद बो अपणो,
सिव भगती में चित लगा लियो।
अपणै जीवण नै दीन–दुखी,
माणस सेवा हित लगा दियो।।१७८।।

बी तत्वज्ञान रै स्वामी नै,
लौकिक सुख आयो दाय नहीं।
रणथंभ राज रो मोह् तक भी,
बीं रो मन सक्यो रिझाय नहीं।।१७९।।

ई मजबूरी में जैत्रसिंघ,
निरणय लेय'र इक भारी जद।
हम्मीरदेव नैं मान लियो,
अपणो उत्तराधिकारी तद।।१८०।।

अर इक दिन राजगुरू सनमुख,
जुड़वाय'र राज सभा भारी।
सब सभासदाँ रै सामीं बो,
रख दीन्हीं मन इच्छ्या सारी।।१८१।।

बोल्यो– मानीता सभासदो !
अब मनै बुढापो आण लग्यो।
ई राज काज रै बंधन स्यूँ,
अब जी मेरो उकताण लग्यो।।१८२।।

'साँसा' ई जग रा अंतहीन,
दिन–रात बढंता जार्‌या है।
साँसा जीवण रा भजन बिनाँ
छिण-छिण छीजंता जार्‌या है।।१८३।।

ई ताँई आजं सभी नैं मैं,
मेरी मनस्या बतळार्‌यो हूँ।
जे आप सभी सरदाराँ रै,
जचती व्है तो मैं चा'र्‌यो हूँ।।१८४।।

अब रणतभँवर रो राजपाट,
हम्मीरदेव नैं सँभळाकै।
मैं इस्टदेव सिव भगती में,
रमज्याऊँ सैलेस्वर जाकै।।१८५।।

आ सुणतॉई सा राजसभा,
गद–गद होय'र हुंकार उठी।
जय मातभौम, जय जैत्रसिंघ,
करती घाट्यॉ गुंजार उठी।।१८६।।

तद राजगुरू बोल्यो– राजन!
तूँ उत्तम बात विचारी है।
म्हाराज कुँवर हम्मीर सही,
तेरो उत्तराधिकारी है।।१८७।।

सुरताण वडो म्हाराज कुँवर,
बचपण स्यूँ ही वैरागी है।
अपणी हीं धुन मे जीवणियों,
माणस कोई बडभागी है।।१८८।।

हीये में बीं रै कूट–कूट,
सिव भगती भाव भर्‌योड़ो है।
लागै है पिछळै जळम मॉय,
बो भारी पुन्न कर्‌योडो है।।१८६।।

है राजकाज रै वैभव स्यूँ,
बीं नैं ज्यादा कुछ मोह नहीं।
निरणय इसडै हालात मॉय,
ओ है तेरो हर भॉत सही।।१६०।।

है धीर–वीर हम्मीर घणो,
सब भाँत निपुण है, लायक है।
जयघोस सभासद साख भरै,
ओ समाचार सुखदायक है।।१६१।।

है माँग समय री भी आ ही,
अब पात पुराणा झड़ ज्यावै।
अर मातभौम री रिच्छ्या हित,
अब युवा सगति आगै आवै।।१६२।।

आ सुण'र गुरू री राय नेक,
मन जैत्रसिंघ रो हरखायो।
सुभ म्हूरत राजतिलक रो तद,
अविलंब बठै ही निकळायो।।१६३।।

आ बात हवा–सी फैल गई,
पोळी–पोळी हर कूँचै में।
जण माणस में आणँद छायो,
जद गढ रणथंभ समूचै में।।१६४।।

हम्मीर देव राजा बणसी,
रणथंभ राज रो जाण जणा।
राज्यारोहण त्यारी में सब,
जा जुट्या लगा जी-ज्यान जणा।।१६५।।

ई सुभ अवसर गढ रणतभॅवर,
दुलहण सो गयो सजायो हो।
निरखंतो सोभा राजभवन,
इन्दर मन मॉय लजायो हो।।१९६।।

दिन राजतिलक तड़काऊ ही,
हम्मीर जणा जाग्यो सोय'र।
आ पूग्या राजमहल में हा,
सब बिप्र ब्रिन्द भेळा होय'र।।१९७।।

हळदी चंदण गौगव्य मिल्यो,
उबटण हम्मीर लगायो सब।
जळ सात नदी–सरवर–औसध,
मिसरित असनान करायो तब।।१९८।।

फिर मंत्रोच्चारण करता सब,
राज्यारोहण जिग करवायो।
हम्मीर देव नैं चौहाणो,
राजा रो बागो पहणायो।।१९९।।

मिल सात सुहागण मळरी ही,
उबटण रंगादे राणी तन।
पट बंद कक्ष में पट विहीन,
हम्मीरदेव पटराणी तन।।२००।।

रूप रो खजानो खुलियोडो,
सॉपरत रूप रै मॉय जणा।
निरख्यो तो ग्राम वधूटी बै,
सातूं रह गई लजाय जणा।।२०१।।

अर भोळै मन कळपणॉ करी,
बेमाता आँ मरज्याण्यॉ नैं।
सायद फुरसत रै माँय घड़ै,
बैठी ठाली इण राण्यॉ नैं।।२०२।।

जद ही तो इसड़ो रूप–रंग,
अपछरा जिस्या अै पावै है।
सुन्दरता ऑ री निरख–निरख,
मन कामदेव ललचावै है।।२०३।।

नित केसर चंदण रो उबटण,
अर इतर–फुलेल लगावै है।
कुछ जीं स्यूं भी अै यूं चिकणी,
अर गौरीगट हुयज्यावै है।।२०४।।

पण राणी रंगादे री
साच्याई वात निराळी
देखो तो हिरणी–सी ईं
आँख्यॉं कितणी कजराळी है।

भौवाँ कमाण–सी तणियोड़ी,
कोमळ काळी'र सघन पलकाँ।
अर अरध–चंदराकार भाल,
लहराती घुँघराळी अलकाँ।।२०६।।

सूवै–सी नाक नुकीली अर,
अै विम्बाफळ–सा होंठ लाल।
दाड़िम, मोती–सा धवल दाँत,
रस भर्या गुलाबी गोळ गाल।।२०७।।

यूँ रगत कमल री सी लाली,
पगथळ्याँ–हथेळ्याँ छाई है।
जाणै तपती दोपारी में,
चल पगाँ उभाणै आई है।।२०८।।

बळ खाती इन्द्र धनुस जिसड़ी,
लचकीली नाजुक छीण कमर।
गंभीरी नाभ, कंबु–कंठी,
भुज, जंघ, नितंब सुडौल सकल।।२०६।।

दो पीन पयोधर कनक सैल,
स्यामल कुचमुख मद छायोड़ो।
सर्वांग सुन्दरी चंद्रमुखी,
मखमली बदन गदरायोड़ो।।२१०।।

ई अवसर पर पग जैत्रसिंघ,
धरती पर टेक न पार्‌यो हो।
राज्याभिसेख जलसो हमीर,
लख मन हीं मन हरखार्‌यो हो।।२११।।

नाचंता – गाता पुरवासी,
मन मॉय बावळा होर्‌या हा।
राज्याभिसेख हम्मीर देव,
जोवण उतावळा होर्‌या हा।।२१२।।

बीं दिन भेळा हो भूप घणॉ,
हा दूर–दूर स्यूं आयोड़ा।
ई राजतिलक रै अवसर पर,
हा न्यूंतो देय बुलायोडा।।२१३।।

बै सकळ सजै दरबार मॉय,
उतसव रो आणंद लेर्‌या हा।
हरखंत वधाई [illegible]
वारी–वारी स्यूं देर्‌या

सुभ घडी [illegible]
महलॉं
दरवार [illegible]
हम्मीरदेव

सज–धज्ज चल्यो हम्मीर झट्ट,
हो सुन्दर रथ्थ सवार जणा।
भाई बीरम – सुरताण संग,
पूग्यो आय'र दरबार जणा।।२१६।।

तद लोग देखता ई रैग्या,
बीं जैत्रसिंघ रै लालै नैं।
बीं नुवैं–नुवैं होवण हाळै,
गढ रणतभँवर रखवाळै नैं।।२१७।।

मोट्यार सजीलो गौर वरण,
उत्तम कद–काठी सजियोड़ी।
चौडी छाती अर भुज विसाल,
पोसाक राजसी पहर्योडी।।२१८।।

ओजस्वी चै'रै पर सुन्दर,
रतनाळी आँखडल्याँ मोटी।
बॉकडली मूँछ्यॉ रो जुवान,
केसरी कंध, मॉसल ठोड़ी।।२१९।।

रथ छोड चाल हम्मीरदेव,
दरबार मॉयनैं आयो, जद।
गुंजित जैकाराँ बीच सीस,
गुरु चरणॉ जाय झुकायो, तद।।२२०।।

ई अवसर पर पग जैत्रसिंघ,
धरती पर टेक न पार्‌यो हो।
राज्याभिसेख जलसो हमीर,
लख मन हीं मन हरखार्‌यो हो।।२११।।

नाचंता – गाता पुरवासी,
मन मॉय बावळा होर्‌या हा।
राज्याभिसेख हम्मीर देव,
जोवण उतावळा होर्‌या हा।।२१२।।

बी दिन भेळा हो भूप घणॉ,
हा दूर–दूर स्यूॅ आयोड़ा।
ई राजतिलक रै अवसर पर,
हा न्यूॅतो देय बुलायोडा।।२१३।।

बै सकळ सजै दरबार मॉय,
उतसव रो आणॅद लेर्‌या हा।
हरखंत बधाई जैत्रसिंघ,
बारी–बारी स्यूॅ देर्‌या हा।।२१४।।

सुभ घडी जाण जद राजगुरू,
महलॉ संदेसो भिजवायो।
दरबार मॉय हित राजतिलक
हम्मीरदेव नैं बुलवायो।।२१५।।

सज–धज्ज चल्यो हम्मीर झट्ट,
हो सुन्दर रथ्थ सवार जणा।
भाई बीरम – सुरताण संग,
पूग्यो आय'र दरबार जणा।।२१६।।

तद लोग देखता ई रैग्या,
बीं जैत्रसिंघ रै लालै नैं।
बी नुवैं–नुवैं होवण हाळै,
गढ रणतभँवर रखवाळै नैं।।२१७।।

मोट्यार सजीलो गौर वरण,
उत्तम कद–काठी सजियोड़ी।
चौडी छाती अर भुज विसाल,
पोसाक राजसी पहर्योड़ी।।२१८।।

ओजस्वी चै'रै पर सुन्दर,
रतनाळी ऑखडल्यॉ मोटी।
बॉकडली मूँछ्यॉ रो जुवान,
केसरी कंध, मॉसल ठोडी।।२१६।।

रथ छोड चाल हम्मीरदेव,
दरबार मॉंयनै आयो, जद।
गुंजित जैकारॉ बीच सीस,
गुरु चरणॉ जाय झुकायो, तद।।२२०।।

फिर आज्ञा पाय गुरूजी री,
मन मॉय इस्ट रो ध्यान धर्‌यो।
ऊबा सब विप्र बड़ेरॉ नैं,
बो आदर सहित प्रणाम कर्‌यो।।२२१।।

अंकुस अनुसासन बँधियोडो,
मतवाळो हाथी—सो चाल'र।
जद जाय बिराज्यो रतन जड़ित,
गढ रणतभॅवर सिंघासण पर।।२२२।।

ई बीच पधारी म्हाराणी,
हीरॉदे सै—परिवार बठै।
च्यारूँ बहुराण्यॉं आई ही,
करकै सोळा सिणगार बठै।।२२३।।

रूपाळी रंगादे को तो,
सिणगार गजब ई ढार्‌यो हो।
छळकंतो चाव बदन रूपी,
गागर में नहीं समार्‌यो हो।।२२४।।

ही नार पदमणी अंग—अंग,
चंदण सुवास मैं'कार्‌यो हो।
चंपा वरणी मुखचन्द्र निरख,
पून्यूं रो चॉद लजार्‌यो हो।।२२५

भौवाँ कमाण–सी तणियोड़ी,
चंचल चितवन मिरगा नैणी।
गुंथ्योड़ी लाम्बी अर काळी,
नागण–सी लहराती बेणी।।२२६।।

मीठै रसभरियै होठाँ पर,
नथली रो मोती लटकंतो।
रक्तिम कपोळ बाएँ पर हो,
सजतो स्यामल तिल मटकंतो।।२२७।।

माथै पर बिन्दी सिन्दूरी,
सिर सीसफूल सुन्दर रखड़ी।
हाथाँ में चुडलो गजदंतो,
बाजूबंद'र पूँची बँगड़ी।।२२८।।

कानाँ में सोभित कर्णफूल,
नग जड़्या झेरळा झूमंता।
लाम्बी गरदण नौलक्खो अर,
टिमणियों – झालरो झूलंता।।२२६।।

कटि छीण दक्छिणावर्त नाभ,
ऊपर कसियोड़ा कसणाँ में।
कुच–कमल दोय काँचळी माँय,
हा सज्या राजसी वसनाँ में।।२३०।।

फिर आज्ञा पाय गुरूजी री,
मन मॉय इस्ट रो ध्यान धर्‌यो।
ऊबा सब बिप्र बड़ेराँ नैं,
बो आदर सहित प्रणाम कर्‌यो।।२२१।।

अंकुस अनुसासन बँधियोडो,
मतवाळो हाथी–सो चाल'र।
जद जाय बिराज्यो रतन जड़ित,
गढ रणतभँवर सिंघासण पर।।२२२।।

ई बीच पधारी म्हाराणी,
हीरॉदे सै–परिवार बठै।
च्यारूँ बहुराण्यॉ आई ही,
करकै सोळा सिणगार बठै।।२२३।।

रूपाळी रंगादे को तो,
सिणगार गजब ई ढार्‌यो हो।
छळकंतो चाव बदन रूपी,
गागर में नहीं समार्‌यो हो।।२२४।।

ही नार पदमणी अंग–अंग,
चंदण सुवास मैं'कार्‌यो हो।
चंपा वरणी मुखचन्द्र निरख,
पून्यूँ रो चॉद लजार्‌यो हो।।२२५।।

भौवाँ कमाण–सी तणियोड़ी,
चंचल चितवन मिरगा नैणी।
गुंथ्योड़ी लाम्बी अर काळी,
नागण–सी लहराती बेणी।।२२६।।

मीठै रसभरियै होठाँ पर,
नथली रो मोती लटकंतो।
रक्तिम कपोळ बाएँ पर हो,
सजतो स्यामल तिल मटकंतो।।२२७।।

माथै पर बिन्दी सिन्दूरी,
सिर सीसफूल सुन्दर रखड़ी।
हाथाँ में चुड़लो गजदंतो,
बाजूबंद'र पूँची बँगड़ी।।२२८।।

कानाँ में सोभित कर्णफूल,
नग जड़्या झेरळा झूमंता।
लाम्बी गरदण नौलक्खो अर,
टिमणियों – झालरो झूलंता।।२२९।।

कटि छीण दक्छिणावर्त नाभ,
ऊपर कसियोडा कसणाँ में।
कुच–कमल दोय काँचळी माँय,
हा सज्जा राजसी वसनाँ में।।२३०।।

हथफूल हथेळी राच्योड़ी,
ऑगळ्यॉ ॲंगूठी रतन जड़ी।
पगल्याँ में बाजंता बिछिया,
छमकत रमझोल'र कनक लड़ी।।२३१।।

अपसरा लजाई मन हीं मन,
निरखत बीं रूप धिराणी नैं।
ई सुभ अवसर होवण हाळी,
रणथंभ राज म्हाराणी नैं।।२३२।।

फिर घोसित राजगुरू री बा,
आज्ञा अनुसरण करंती–सी।
सज्जित पटराणी सिंघासण,
बैठी झट जाय लजंती–सी।।२३३।।

सब बिप्र ब्रिन्द तब अेक साथ,
सुर स्वस्तिगान रो उच्चार्‌यो।
अर राजगुरू हम्मीर भाल,
हरखंतो राजतिलक सार्‌यो।।२३४।।

ई राजतिलक नैं निरखंती,
गॉवतड़ी मंगळ गाण जणा।
दरबार झरोखॉ कामणियॉ,
सब लगी सुमन बरसाण जणा।।२३५।।

मन मुदित जैत्रसिंह बेटै रै,
सिर पर चौहाणो ताज धर्‌यो।
विधिवत घोसित हम्मीरदेव,
गढ रणतभँवर म्हाराज कर्‌यो।।२३६।।

रणथंभ राज तलवार फेर,
हम्मीर हवालै करकै बो।
बीं रणतभँवर रै राजा नैं,
दीन्हीं आसिस जी भरकै बो।।२३७।।

अर बोल्यो– सुण रणथंभ धणी!
आ ऊँची थाती चौहाणी।
जीतैजी नहीं लजावै ई,
तलवार दुधारी रो पाणी।।२३८।।

राजा रो पै'लो धरम सदाँ,
पिरजा रो लालण – पालण है।
जगती में सब स्यूँ पूज धाम,
निज मातभौम रो आँगण है।।२३६।।

रणथंभ राज रै ई आँगण,
दुसमण धरग्यो हो पग्ग कदे।
तेरै जीताँ–जी नीं लिखज्या,
इतिहास माँय ओ जग्ग कदे।।२४०।।

फिर कवि विजयादित ओज मॉय,
चौहाण बंस गुण–गाण कर्‌यो।
गुरु विस्वरूप त्रिप–धरम जणा,
विस्तार समेत बखाण कर्‌यो।।२४१।।

बाहर स्यूॅ आयोडा नरेस,
ई राज्यारोहण अवसर पर।
बारी–बारी स्यूँ जणा फेर,
नजराणो पेस कर्‌यो जी भर।।२४२।।

गढ रा सब सेठ–महाजन भी,
राजा री जी–हज्जूरी में।
ई औसर जणा करी हळकी,
बूतैसिर बंद तिजूरी नैं।।२४३।।

आयोड़ा साधू – सन्यासी,
जी भरकै दी आसीस घणी।
अर जातो–जातो जती ओक,
देग्यो अलभ्य इक परस मणी।।२४४।।

ई राज्योत्सव पर जैत्रसिंघ,
जी भरकै दान लुटायो जद।
भरियोडी मुट्ठी रत्नॉ स्यूॅ,
विप्रॉ रो नेग चुकायो जद।।२४५।।

जितणो भी निजराणो गढ में,
ई सुभ अवसर पर आयो, बो।
इक परस मणी नैं छोड सकल,
निज पिरजा मॉंय लुटायो, बो।।२४६।।

यूँ दीन–हीन पर राजा री,
फळपी बरसंती दया जणा।
तो याचक बणकै आयोडा,
सब दाता बणकै गया जणा।।२४७।।

मनचाई दान – दक्षिणा पा,
गढवासी मालामाल हुया।
अर दास – दासियाँ तक सारा,
बखसीस पाय हो न्हयाल गया।।२४८।।

दे राज-पाट हमीर नैं न्रिप जैत्रसिंह पुलकित मनाँ।
जा धाम सैलेस्वर जुट्यो हो मॉंय सिव आराधनॉं।।
सासक हठीलो अर जवॉं पा राज जद रणथंभ गढ।
करवट लग्यो लेणै नुर्वी नित छेत्र हर इक मांय बढ।।२४६।।

हम्मीर अपणी सैन्य सगती जद बढातो रात-दिन।
लीन्हीं जुटा इक फौज भारी झट करंतो स्रम कठिन।।
नित सोंवतो अर जागतो तद मॉंय मन हरखाण-तो।
बो देखणै सुपनो लग्यो हो दिग्विजय अभियान रो।।२५०।।

दिग्विजय अभियान

ईसवि बा'रा सौ वैयासी,
तारीख दिसम्बर री सौळा।
हम्मीर सँभाळ्यो सिंघासण,
ई गढ रो बाजंतै ढोलाँ।।२५१।।

बाँ दिनाँ सल्तनत दिल्ली में,
मचरी ही उलट–पुलट भारी।
होंवण री अस्त गुलाम वंस,
जद बठै चालगी ही त्यारी।।२५२।।

बलबन मरणै रै बाद बठै,
कोई भी अस्यो बडो सासक।
नीं हुयो जिको हम्मीर संग,
टकरातो रणतभँवर आकर।।२५३।।

दक्खिणी छेत्र गढ रणतभँवर,
मालवा माँय भी जद इसडो।
टक्कर हमीर स्यूँ लेवणियों,
हो कोई बंक नहीं तगडो।।२५४।।

अै सगळी वातॉ निज्ज हक्क,
अनुकूल जणा हम्मीर लगी।
विस्तार राज्य निज करणै री,
इंच्छ्या मन माँय हमीर जगी।।२५५।।

बो झट अपणी जद आ मनस्या,
जा राजसभा में वतळाई।
सम्मत लेवण सब सरदारॉ,
बिस्तार सहित सा समझाई।।२५६।।

जद बैठक राज परीसद री,
ई मुद्‌दै पर मंत्रणा हुई।
इक सुर में सगळी सभा माँय,
'हॉ' बोल सिंघ गरजणा हुई।।२५७।।

अर राजगुरू बोल्यो– राजन !
सेना री समुचित त्यारी कर।
विजयाभियान री सरूआत,
सुभ विजया दसमी रै दिन कर।।२५८।।

अब धीरै–धीरै ढळतो ओ,
रुतराज लग्यो है जाणै में।
है बगत हाल तो पड़्यो घणो,
बाकी दसरावो आणै में।।२५६।।

गीतिका - छंद

राय गुरु री नेक सिर पर, धारकै हम्मीर जद
जुद्ध री त्यारी करण में, जा जुट्यो वो वीर तद
बदळग्यो ईं बीच मौसम, और ग्रीसम आयगी
कोप सूरज रो बढ्यो सब, घाटियाँ गरमायगी।।२६०।।

सुळगणै लागी दुपैरी, जीव घबराँवण लग्या
दरखतॉं री छाँव ठंडी, बैठ सुसताँवण लग्या
सेक धॉणी-भूँगड़ा सब, लोगड़ा खाँवण लग्या
राबड़ी-रोटी, दही-छा, दाय मन आँवण लग्या।।२६१।।

आम पकती डाळ कोयल, कूकणै लागी घणी
खेजड़ाँ री डाळ साँगर, लूँमणै लागी घणी
फूल काळीदास रो प्रिय, सिरिस लाग्यो महकणै
रोहिड़ो होयो सुरंगो, रूप लाग्यो दहकणै।।२६२।।

दिन ढळंताँ पाण छैला, गाँव रा हरखाँणता
जा बगीच्याँ में चिलमडी, भाँग-बूंटी छाँणता
साँझ रो सिणगार करती, हद्द मिरगा नैणियाँ
मोगरै चंपा-चमेली, माँय गूँथै बेणियाँ।।२६३।।

रोळो - छंद

होई ग्रीसम खतम, चाल चोमासो आयो
ताप मुक्त हुय जगत, मॉय मन में सुख पायो
उट्ठ घटा घणघोर, छायगी लीलाम्बर पर
नाचण लाग्या मोर, ताणकै छतरी सुन्दर।।२६४।।

काढ़ंती मन झाळ, बीजळी अंबर चमकी
भरिया जौहड़-खाळ, घटा जद बरसी जमकी
झर-झर झरणा झरण, लग्या मीठी धुन गाता
कळ-कळ करती वहण, लगी नंदी दिन-रातॉं।।२६५।।

धरती हुई निहाल, हुया हरियल सब बोजा
चल्या गॉंव रा ग्वाळ, बजॉबतडा अळगोजा
फळी कळी कचनार, बिरछ डाळ्यॉं बेलड़ली
झूलण लागी नार, डाळ आम'र खेजड़ली।।२६६।।

ठंडी चाली बाळ, गई सब रो मन हरखा
आई बणकै काळ, विरहणी तॉई बरखा
सावण साजन संग, भलो लाग्यो सजनी नैं
करग्यो सावण तंग, विनॉं साजन रजनी में।।२६७।।

हरिगीतिका - छंद

परभाव पावस रो जणा कुछ, कम हुयोडो जाणकै
लागी पसरणै रुत 'सरद' ही, जद धरा पर आणकै
कर घोसणा सब घन-घमंडी, पूर्ण जुद्ध - विराम री
आकास तज झट जाय पकड़ी, राह अपणै धाम री।।२६८।।

रंजन करत खंजन अकासाँ, चहकणै लाग्या जणा
वन-बाग उपवन वाटिका सब, महकणै लाग्या घणा
गुंजण करंता भँवर कळियाँ, हुळस मँडरावण लग्या
मन-भाव घूँघट में नवेली, नार मदमावण लग्या।।२६६।।

उनमादणी नंद्याँ सभी थक, सांत चित वहणै लगी
तन-मन हुयोडी त्रिप्त धरती, नव फसल फळणै लगी
पकती 'खरीफ' निहार करसो, मन हुयो जद बावरो
मक्का, जुँवार-गुँवार, चूला, मूँग-मोठ'र बाजरो।।२७०।।

रुत चक निज गति स्यूँ सहज जद, यूँहिं घूमंतो रयो
तो देखताँ हीं देखताँ झट, आय दसरावो गयो
होया सरादाँ बाद चालू , जद सरद नव रातरा
हम्मीर होयो त्यार करणै, तद सरु जुध जातरा।।२७१।।

दुमदार दूहो - छंद

आयो दसरावो जणा, राजपूत रणधीर
पूग्या सब रणथंभ गढ, होय घराँ स्यूँ भीर
माँय मन जोस भरंता
चल्या जयघोस करंता।।२७२।।

राज महल स्यूँ चालियो, सज-धज जणा हमीर
तिलक लगायो लाल रै, गूंठो अपणो चीर
आप हाथाँ हीराँदे
राज माता हीराँदे ।।२७३।।

घाव कदे भी पीठ पर, खा मत आयो नाथ !
भाव जताया नैण स्यूँ, चरण नवाती माथ
मुळक रंगादे राणी
गढ़ री या पटराणी।।२७४।।

गुरु चरणाँ में सिर नवा, घोड़ै चढ़्यो हमीर
थाम्याँ लाम्बी हाथ में, दूधारी समसीर
सुमरकै मात भवानी
लिखणनैं नुवीं कहाणी।।२७५।।

तद धार दिसा जीतण री बो,
अपणी सेना ले चाल पड़्यो।
अर नगर धनाढ्य भीमरसपुर,
कॉकड स्यूँ सीधो जाय अड़्यो।।२७६।।

फिर जंग मचाय बठै राजा,
अरजुन नैं धूळ मिलायो बो।
अर ठट्ठै स्यूँ बीं री भारी,
कुंजर सेना हर ल्यायो बो।।२७७।।

अर फेर बठै स्यूँ बो सीधो,
धावो बोल्यो मांडळ रै गढ़।
कर भेंट वसूळी मांडळ स्यूँ,
तत्काळ गयो दिखणादो बढ।।२७८।।

हो नगर धार रो सासक तब,
त्रिप भोजराज परमार बठै।
बीं नै हराय हम्मीर झट्ट,
कर बैठ्यो खुद अधिकार बठै।।२७६।।

बीं वैभवसाळी धरती पर,
दिन–रात मचातो लूट जबर।
कर कूच बठै स्यूँ बो सीधो,
धावो बोल्यो उज्जैणी पर।।२८०।।

बीं म्हाकाळेस्वर नगरी में,
कुछ दिवस जणा विसराम कर्‌यो।
सीतळ–पावन सिप्रा जळ में,
निज सेना संग सनान कर्‌यो।।२८१।।

बॉ दिनाँ माळवा री धरती,
ही सीत–लहर में जकड़्योडी।
लाम्बै चलतै विजयाभियान,
सेना भी ही कुछ थकियोड़ी।।२८२।।

सूत्योड़ा सैनिक सिविर मॉय,
ठिठुराग्या सरदी रा मार्‌या।
जद पड़ी कड़ाकैदार ठंड,
जम गया ताळ–पोखर सारा।।२८३।।

कवित्त (मनहरण - छंद)

।।२८४।।

हाड़तोड़ ठंड जीं में, सूत्योड़ा सिविर माँय
ठिठुरण लाग्या जद, सारा रण-वॉकड़ा
तंवूआ स्यूँ वा'रै आता, आपस में वतळाता
काटै सारी रैण वैठ्या, सुळगाता लाकडा
विसम तुसार मार, मावठ अपार संग
कुपित हेमंत चाल्यो, पीटतो ई ताफड़ा
चाली जद वण काळ, ठंडी उतरादी वाळ
मिनख चितारी कठै, सूखग्या हा ऑकड़ा

आँ सब बातॉ नैं सोच बठै,
पूरो 'हेमंत' बितायो वो।
नित महाकाळ रा दरसण कर,
मन मॉय घणो हरखायो वो।।२८५।।

जद जाडो जरा हुयो कमती,
आगै हौंसला बुलंद बढ्यो।
अर चित्रकूट नैं कूटंतो,
सीधो आबू पर जाय चढ्यो।।२८६।।

आल्हा - छंद

दरसण कर जद रिखबदेव रा, मंदाकिणी कर्यो असनान
अचलेस्वर री पूजा कर जद,कर्यो बठै कुछ दिन बिसराम।।२८७।।

उणी दिनॉं रुतवॉं री राणी, 'सिसिर' करण चाली प्रस्थान
धरती छायो मीठो मौसम, सरदी-गरमी अेक समान।।२८८।।

पेड-पेड़ पर फूटी कूंपल, लता-लता लागी हरखाण
फूल-फूल मॅडराया भॅंवरा, छेड़ण लाग्या मीठी तान।।२८९।।

मंद - मंद हिचकोळा खातो, ठंडो-सीतळ वह्यो समीर
जोबन छायोडी धरती रो, लहरायो जद हरियल चीर।।२९०।।

मतवाळा सगळा नर-नारी, हॅंस बतळावै खेलै फाग
कंत - पंथ निरखंत विरहणी, रोज उडावै बैठी काग।।२९१।।

सिसिर सुरंगी जीव-जीव रै, कर्यो मनॉं में नव-संचार
जोस भर्या रजपूत हुया जद, फिर स्यूं जुद्ध करण तैयार।।२९२।।

बजण लग्या नौबत नग्गारा, नभ में गूंजी जय-जयकार
चल्या सूरमा समर मॉय हुय, हाथी घोड़ॉ रथ असवार।।२६३।।

'हर-हर महादेव' बोलंता, चल्या सकळ रणबंका वीर
सुमर भवानी सज्ज-धज्ज जद, सेना लेकर वढ्यो हमीर।।२६४।।

यूँ आगै स्यूँ आगै पग बो,
विजयाभियान हित टेकै हो।
जद मिली जीत पर जीत जणा,
पाछो मुड़कै क्यूँ देखै हो ? २६५।।

फिर बरधनपुर नैं निरधनपुर,
करतो बो जमकै जंग कर्‌यो।
खॅंडवा नैं करतो खंड–खंड,
चंगा रो रॅंग विदरंग कर्‌यो।।२६६।।

फिर पाछो मुड़्यो घरॉ कानी,
अजमेर होय पुसगर न्हायो।
अर जगत विधाता ब्रह्मा री,
पूजाकर मन में हरखायो।।२६७।।

गढ़ अजयमेरु में कुछेक दिन,
रुककै थोड़ो विसराम कर्‌यो।
बीं जळमभौम पुरखॉ री नैं,
सिरधा रै साथ प्रणाम कर्‌यो।।२६८।।

अर पुळकित मन हित दीन जणाँ,
मन चायो करतो दान हरख।
जी भरकै करियो नित्त बठै,
कुळ देवी साकंभरी दरस।।२९९।।

फिर चाल बठै स्यूँ बो सीधो,
गढ़ रणतभँवर कानी धायो।
आ खबर मिलंताँ पाण सकळ,
पुरवास्याँ में आणँद छायो।।३००।।

राजा रै स्वागत रै माँई,
नौबत नग्गारा बजण लग्या।
बाँदरवाळाँ स्यूँ हाट–बाट,
चौरावा सगळा सजण लग्या।।३०१।।

राजा रो लसकर आय जणा,
काँकड़ गढ रणतभँवर पूँच्यो।
जैकाराँ स्यूँ गुंजार उठ्यो,
हर गाँव–गळी, कूँचो–कूँचो।।३०२।।

रणजीत पधार्‌या रणबंका,
सुण कामणियाँ हरखाण लगी।
साजन घर आया जाण जणा,
रळ-मिलकै चौक पुराण लगी।।३०३।।

बीं दिवस बठै बीं कॉकड़ पर
मिनखाँ रो रेळो मचग्यो हो।
निज राजा रै दरसण तॉईं,
पिरजा रो मेळो भरग्यो हो।।३०४।।

हम्मीरदेव री अेक झळक,
पाय'र गॉवाँ रा नर–नारी।
यूँ खुस होया जाणै बॉनैं,
मिल गयो खजानो हो भारी।।३०५।।

हम्मीर जणा निज हाथ उठा,
मुळकंती निजरॉ स्यूँ न्हयार्यो।
जयकारा करती पिरजा रो,
मन स्यूँ अभिवादन स्वीकार्यो।।३०६।।

ई अवसर पर खुद राजगुरू,
सुरताण–विरम सब पूग्या हा।
अगवाणी में हम्मीरदेव,
गढ रै कॉकड़ पर ढूक्या हा।।३०७।।

गज पीठ सवार हमीरदेव,
मन मुदित लेण आसीस जणा।
हाथी होदै स्यूँ उतर झट्ट,
गुरु चरण नवायो सीस जणा।।३०८।।

विजयी भव ! कै'तो राजगुरू,
आणंद विभोर भयो भारी।
जी भरकै दी आसीस घणी,
अर कुसळ छेम वूझी सारी।।३०६।।

फिर मिल्यो हमीर बठै ऊबा,
सब लोगाँ स्यूँ बारी–बारी।
अगवानी में आयोड़ा हा,
जो खास महाजण-अधिकारी।।३१०।।

अर भुजा पसार लगाय गळै,
मिलियो मायड जायाँ स्यूँ बो।
दाऊ सुरताण, अनुज बीरम,
अपणै दोनूँ भायाँ स्यूँ बो।।३११।।

अर फेर गुरू रै कै'णै पर,
बो पूग्यो गढ री पोळ जणा।
बाँची बिरदावळि 'न्हाळ' भाट,
वाणी में मिसरी घोळ जणा।३१२।।

हम्मीर सामनैं खड़्यो निरख,
यूँ हरख्या सगळा पुरवासी।
ज्यूँ दवा कारगर चाणचुकै,
हो'गी हो रोग–विरह नासी।।३१३।।

सज–धज्ज सवारी राजा री,
जद राजमहल कानी चाली।
धुनि जयकाराँ'र नगाड़ाँ स्यूँ,
अंबर धूज्यो, धरती हाली।।३१४।।

बा राज सवारी देखण नैं,
बाळक बूढ़ा'र जुवान सभी।
भाज्या सगळा तज छोड–छोड,
निज काम मुकाम दुकान सभी।।३१५।।

जा चढी अटार्‌याँ पर ऊँची,
भू – बेट्‌याँ भेळी हो सारी।
घूँघटाँ लुक्योड़ा चाँद लग्या,
पळकणै झरोखाँ अर बारी।।३१६।।

जयकारा करतो बो जुलूस,
जद नेडै भूप भवन आयो।
होता बारूद धमाकाँ स्यूँ,
सगळी घाट्‌याँ गढ गरणायो।।३१७।।

ऊँचै सजियोड़ै मंडप पर,
सहनाई छेड़ी तान जणा।
सुर मे कूकी कोयल कंठ्याँ,
गाँवतड़ी मंगळगाण जणा।।३१८।।

निज महल पधार्‌यो जद राजा,
सज–धज्ज खड़ी राणी सारी।
पति पदरज सीस चढाय धन्न,
मानीं खुद नैं बारी–बारी।।३१९।।

आरतो उतारंती हरखी,
पटराणी रंगादे मन में।
ज्यूं हरखै धरती देख–देख,
अंबर चढ आए बादळ नैं।।३२०।।

ई सफळ विजय अभियान बाद,
हम्मीर जरा–सो सुसतायो।
अर राजगुरू रो मान क'यो,
जद बठै कोटि जिग करवायो।।३२१।।

अर मॉय कोटि जिग बो गढ रो,
सारो खज्जानों लुँटा दियो।
दे भारी दान दळिदराँ रो,
सगळो दाळद ही मिटा दियो।।३२२।।

अर फेर विजय अभियान मॉय,
जो वंक वीरगति पाग्या हा।
हित मातभौम हँसता–हँसता,
जो अपणो सीस चढाग्या हा।।३२३।।

बॉ सब री आतम सांति हेतु,
निज इस्टदेव रो ध्यान धर्‌यो।
अर अेक महीनैं रो अखंड,
रख मौन बरत विसराम कर्‌यो।।३२४।।

होयो सफल लंबो चल्योडो ओ विजय अभियान जद।
हम्मीर ई निज दिग्विजय पर राय गुरु री मान तद।
हरखंत छतरी अेक सुन्दर ई विजय री याद में।
बत्तीस खंभा री वणाई मौन-व्रत रै बाद में।।३२५।।

दिल्ली क रड़की आंख में आ दिग्विजय हम्मीर की।
सुलतान खिलजी रो गई ले या कळेजो चीर की।।
हो खिलजियॉ रो राज दिल्ली मॉंयनैं वीं वखत पर।
काबिज अलाउद्‌दीन खिलजी हो लियो हो तखत पर।।३२६।।

खिलजी वंस अर दिल्ली

ईसवि छ्याणवैं – वा'रा सौ,
वो दिन हो वीस जुलाई रो।
जद सुसरै री गरदण ऊपर,
खांडो चल पड़्यो जॅवाई रो।।३२७।।

वॉ दिनॉ तखत दिल्ली ऊपर,
करतो हो खिलजी वंस राज।
वीं वंस मॉयनैं अलादीन[1],
धार्यो ओ रगत चुवंत ताज।।३२८।।

बो अलादीन जामाता हो,
सुलतान जलालू[2] खिलजी रो।
हो सगो भतीजो भी सागै,
बलवान जलालू खिलजी रो।।३२९।।

1 - अल्लाउद्दीन, 2 - जलालूद्दीन

पण ताज–तखत रो लालच ओ,
अपराध अणूँतो करा दियो।
अर अलादीन रै हाथाँ स्यूँ,
सुलतान जलालू मरा दियो।।३३०।।

बी अलादीन नैं बचपण स्यूँ,
सुलतान जलालू पाळ्यो हो।
सिर हाथ अनाथ भतीजै रै,
धरकै हरदम्म रुखाळ्यो हो।।३३१।।

होयो जुवाँन जद बीं सागै,
बेटी भी अपणी ब्या'दी ही।
अर प्रान्त 'कड़ा' री राजी मन,
सूबेदारी सँभळादी ही।।३३२।।

आ सूबेदारी पा बीं री,
पद महत्वकाँच्छ्या बढगी ही।
बीं री आँख्याँ में सीधी ही,
दिल्ली री गद्दी चढगी ही।।३३३।।

सोचणै लग्यो बो रात'र दिन,
जद कोई जुगत बिठाणै री।
बूढै सुसरै स्यूँ जियाँ–तियाँ,
सुलतानीं तक हथियाणै री।।३३४।।

बैयॉ वो भारी जोधो हो,
बळसाली वीर लड़ाकू हो।
दुसमण नै मारण–लूँटण में,
बो निरो निरदई–डाकू हो।।३३५।।

बो आज्ञा स्यूँ सुलतान कई,
जग्गॉ सैनिक अभिमान कर्‌यो।
अर लूँट–लूँट धन लोगॉ रो,
साही खज्जानैं मॉय भर्‌यो।।३३६।।

सुलतान प्रभावित हुयो घणो,
बीं रीं यूँ निस्टा जोय जणा।
जागीर 'अवध' री भी दे दी,
बीं नैं भारी खुस होय जणा।।३३७।।

ले चाचै नै बिसवास मॉय,
सुलतान भतीजो तोड हद्‌द।
दक्खिण में देवगिरी लूँटण,
कर गयो झट्ट प्रस्थान तद्‌द।।३३८।।

बॉ दिनॉं नगर बो देवगिरी,
सोनै री खाण कुहातो हो।
बीं रै वैभव री वातॉ सुण,
नित अलादीन ललचातो हो।।३३९।।

बो देवगिरी स्यूँ मणाँ स्वर्ण,
साँचा मोती अणमोल रतन।
लूँट'र ल्या निजू खजानैं में,
भर लिया करंतो सहज जतन।।३४०।।

ओ अतुळ खजानो पाय'र बो,
सोची दिल्ली हथियाणै री।
मन हीं मन ली योजना बणा,
बो खिलजी नैं मरवाणै री।।३४१।।

बट्टीनैं खिलजी बीं री आ,
वीरता लख्ख इतरार्‌यो हो।
दामाद सहज ही पाय अस्यो,
बेटी रो भाग सरार्‌यो हो।।३४२।।

ई मोटी विजय सफळता पर,
खुस होय जलालूदीन जणा।
बीं वीर भतीजै नैं बुलाय,
करियो निज बगल नसीण जणा।।३४३।।

अर बाँथ भरंतो उठ बीं रो,
तैदिल स्यूँ इस्तकबाल कर्‌यो।
बस इणी बीच बो धोखै स्यूँ,
बूढो सुलतान हलाल कर्‌यो।।३४४।।

ई दिल्ली रै इतिहास माँय,
मुसलिम सासन री सरूआत।
ही करी कदे मोमदगौरी,
प्रिथ्थवीराज नैं कर परास्त।।३४५।।

बैयाँ तो ई स्यूँ पै'ली भी,
ई सोन–चिड़कली भारत पर।
हमलो बोल्यो हो घणी बार,
गजनी स्यूँ तुरक कई आय'र।।३४६।।

ऑ तुरकॉ मॉई नाम अेक,
महमूद गजनवी रो भी हो।
लेकिन बो फकत लुटेरो हो,
अर धन–दौलत रो लोभी हो।।३४७।।

गौरी भी गजनी वासी हो,
भारत लूँटण नैं आयो हो।
मैदान तराइन जुद्ध मॉय,
प्रिथ्वीराज नैं हरायो हो।।३४८।।

कुछ दिनाँ र'यो गौरी दिल्ली,
पण वो तद अंत माँय जाय'र।
जीत्योडी दिल्ली निज गुलाम,
अैबक रै गयो हवालै कर।।३४९।।

अर भीर हुयो गजनी पाछो,
फिर मुड़कै कदे नहीं आयो।
दिल्ली पर जणा गुलाम वंस,
यूँ सहज जमा बैठ्यो पायो।।३५०।।

ई वस मॉय पै'लो सासक,
अैबक कुत्तुब्बुद्दीन हुयो।
फिर हुयो अल्तमस समसुदीन,
बलवन्न गयासुद्दीन हुयो।।३५१।।

अर इणी बीच ई वंस मॉय,
बेगम रजिया सुलतान हुई।
जिण री बहादुरी सुन्दरता,
चर्चाए इस्क जहॉन हुई।।३५२।।

ई वंस मॉंय यूँ दिल्ली में,
कुल नौ सुलतान हुयोड़ा है।
सत्ता–सुन्दरी वरण तॉई,
भारी घमसाण मच्योड़ा है।।३५३।।

बॉं नौ मैं स्यूँ बस तीन जणा,
अपणी स्वाभाविक मौत मर्‌या।
अर सेस सब्ब होय'र सिकार,
सडयंतर रा बेमौत मर्‌या।।३५४।।

होयो जद अस्त गुलाम वंस,
अपणो लंबो जीवण जीकर।
सूर्योदय खिलजी वंस हुयो,
दिल्ली सत्ता सिघासण पर।।३५५।।

अै खिलजी सारा सेवक हा,
बॉ सत्ताधारी तुरकाँ रा।
मौको पाय'र बण बैठ्या बै,
प्रतिद्वंदी भारी तुरकॉ रा।।३५६।।

ई तुरक वंस मे जद ताणी,
बलवन दिल्ली सुलतान र'यो।
मन में दिल्ली वासियॉ जणा,
बीं रो डर अर सम्मान र'यो।।३५७।।

बीं रै मरणै रै बाद बठै,
दिल्ली नैं आयो रास नहीं।
उत्तराधिकारी तुरक वंस,
कोई भी ज्यादा खास नहीं।।३५८।।

वै सगळा ही गद्दी तॉई,
आपस में लड़ता र'या सदॉ।
निज रंजिस में इक दूजै रै,
हाथॉ स्यूं मरता र'या सदॉ।।३५९।।

ऐयाँकै वातावरण माँय,
सासन हो डावाँडोल उठ्यो।
चौतरफ अराजकता असांति,
बहसीपण रो बज ढोल उठ्यो।।३६०।।

छोटाँ स्यूँ ले'र बडेरा तक,
सब अपणी-अपणी ढपली अर।
अपणो हीं राग अळापंता,
दिल्ली में आवण लग्या नजर।।३६१।।

जद इणी बीच अवसर पाय'र,
बै खिलजी मौको जुटा लियो।
हा ताक मॉय बैठ्या सगळा,
झट लाभ बगत रो उठा लियो।।३६२।।

खिलजियाँ मॉय पै'लो सासक,
सुलतान जलालूदीन हुयो।
बो सन बा'रा सौ नब्बै में,
दिल्ली पर तखत नसीन हुयो।।३६३।।

पण 'खिलजी' संबोधन स्यूँ जो,
इतिहास मॉय मसहूर हुयो।
बो अलादीन खिलजी जबरो,
सुलतान सूर अर क्रूर हुयो।।३६४।।

ई महाकाव्य रै नायक रो,
बो मुख्य समर प्रतिदुंदी हो।
मन–वचनाँ स्यूँ काळो–झूठो,
निज करमाँ स्यूँ छळ–छंदी हो।।३६५।।

बो मिनख मारकै हाथ नही,
धोवणिएँ मन रो स्वामीं हो।
दुसमण नैं जड़ामूळ स्यूँ हीं,
खो देणै तक रो हामीं हो।।३६६।।

बो नाग मारकै नागण नैं,
जिन्दी छोडणियों कोनी हो।
बीं रा जायोड़ा तक स्यूँ भी,
खतरो ओढणियों कोनी हो।।३६७।।

बदळो लेणै री भूखी बा,
नागण जाणै कद डस ज्यावै।
या बीं रा सपळोटिया आ'र,
कद आसतीन में बस ज्यावै।।३६८।।

ओ साफ मानणो हो बीं रो,
दुसमणी संग कोई पाळो।
दुसमण रै बीबी–बच्चों तक,
बस पड़ताँ जिंदा मत टाळो।।३६९।।

जद ही तो गद्दी मिलतॉ ईं,
सुलतान जलालू री विधवा।
बूढी बेगम मलिका–जहान,
बो झट्ट कैद में दी भिजवा।।३७०।।

हो दंत–विहीन नहीं विसधर,
बो काट सकै है कद भी आ।
हो दंत–विहीन, नही विसधर
बो काट सकै है कद भी आ।।३७१।।

यूँ सोच अर्कलि – कद्रखान,
दोनूँ साळा–सहजादॉ री।
जिन्दॉं री ऑख निकळवादी,
हद तोड़ सकळ मरजादॉ री।।३७२।।

जितणॉ सरदार–जलाली हा,
चुण–चुणकै मरवा दीन्यॉ बो।
बॉरा कच्चा–बच्चॉ तक नैं,
घाणी में पिलवा दीन्यॉ बो।।३७३।।

यूँ होय निसकंटक सफा वो ताज दिल्ली सिर धर्‌यो।
अर बेधड़क हिन्दूसतॉं में राज जीवण भर कर्‌यो।।
पण 'दिग्विजय' हम्मीर फँसगी काळजै में फॉस वण
अर लोटणै छाती लगी ही रात अर दिन सॉप वण।।३७४।

पै'लो जुद्ध

हम्मीर मौन व्रत री बातॉं,
पूगण लागी दिल्ली तॉई।
तो मौको चोखो पा खिलजी,
सोचणै लग्यो निज मन मॉई।।३७५।।

हम्मीर कदे भी जीवण में,
सिव पूजा भंग करै कोनी।
यूॅं अेक महीनैं पैल्यॉं बो,
खुद आय'र जंग करै कोनी।।३७६।।

गढ रणतभॅंवर पर इणी बीच,
जे अब घेरो डाल्यो जावै।
तो कदे मौन–व्रत धारी बो,
हम्मीर करण रण नीं आवै।।३७७।।

के सुभ संजोग बण्यो है वाह !
यूँ सोच हुयो खुस मन मॉई।
अर भारी सेना भिजवादी,
बो रणतभँवर जीतण तॉई।।३७८।।

सेना बनास तक पूगी तो,
गढ रणतभँवर बेरो पड़ग्यो।
तद धरमसिंघ सेना सामीं,
जा भीमसिंघ सागै अड़ग्यो।।३७६।।

हो धरमसिंघ मंत्री प्रधान,
जबरो हम्मीर हठीलै रो।
सेना नायक हो भीमसिंघ,
गढ रणतभँवर रै किल्लै रो।।३८०।।

बॉ दोन्याँ रो रण देख जवन,
सारा होग्या हक्का–बक्का।
रजपूत लड़्या जद खिलजी री,
सेना रा छुडा दिया छक्का।।३८१।।

जद जवनॉ पर रजपूतॉ रै,
तीखै बाणॉ री लगी झडी।
तो रण मॉई हथियार छोड,
खिलजी री सेना भाग पड़ी।।३८२।।

यूँ साही सेना नैं खदेड़,
जद धरमसिंघ पाछो आग्यो।
अर भीमसिंघ पीछै हटती,
वीं सेना नैं लूँटण लाग्यो।।३८३।।

यूँ लूँटपाट करतो भारी,
जद भीमसिंघ घर आण लग्यो।
जवनाँ स्यूँ खोसेड़ा बाजा,
भर मस्ती में बजवाण लग्यो।।३८४।।

रण जीत्योड़ो बो भीमसिंघ,
बस अठै आय धोखो खाग्यो।
आखिर बो ठाकुर भी तो हो,
ठाकुर ठकुराई पर आग्यो।।३८५।।

रणभौम मॉय जमगी मैफिल,
सैनिक दारू में धुत होया।
बाजॉ री धुन पर नाच उठ्या,
सब राग–रागणी में खोया।।३८६।।

जद चाणचुकै रणभौम मॉय,
गूंजण लाग्या साही बाजा।
तो जोस आयग्यो जवनॉ में,
भागता तुरक पाछा आग्या।।३८७।।

जुध मॉय घिर गयो भीमसिंघ,
अर मरग्यो रण करतो–करतो।
बो धुत होयोड़ो दारू में,
रणभौम मॉय कद तक लड़तो? ३८८।।

जद भीमसिंघ रै मरणै री,
हम्मीरदेव नैं पड़ी खबर।
तो धरमसिंघ नैं बुलवाकै,
डाटणै लग्यो गुस्सै में भर।।३८९।।

रै धरमसिंघ! जिन्दो आयो,
क्यूँ भीमसिंघ नैं खोय'र तूँ ?
क्यूँ पीठ दिखाई रण मॉई ?
सुत राजपूत रो होय'र तूँ।।३९०।।

आयो तूँ बी नै बोल बठै,
रण मॉय अेकलो छोड किंयॉ ?
मंत्री–प्रधान होय'र भी तूँ,
आयो रण स्यूँ मुँह मोड़ किंयॉ? ३९१।।

रै कायर! भीमसिंघ नैं तूँ,
जवनॉ रै हाथॉ मरवाकै।
मन्नैं चै'रो क्यूँ दिखलायो,
ऑधळा! अठै तूँ यूँ आकै ? ३९२।।

यूँ कै'तो धरमसिंघ नैं वो,
साच्याँई अंधो करा दियो।
नामर्द करार देय वींनैं,
मंत्री पद स्यूँ हीं हटा दियो।।३६३।।

अर तद प्रधान मंत्री रो पद,
वो भोजराज नैं थमा दियो।
अर सेना नायक नुँवों जणा,
झट रतीपाल नैं बणा दियो।।३६४।।

वो 'भोज' दूर कै रिस्तै में,
हम्मीरदेव रो भाई हो।
छत्री रणबंको राजा रै,
बिसवासपातरॉ मॉई हो।।३६५।।

पण भोजराज कोई चोखी,
नीं अर्थ–व्यवस्था करण सक्यो।
जितणो भरणो चाए उतणो,
बो नहीं खजानों भरण सक्यो।।३६६।।

तद मजबूरण हम्मीरदेव,
वीं नैं भी पद स्यूँ दियो हटा।
अर पद परधान–मंतरी पर,
जद बो रणमल नैं दियो बिठा।।३६७।।

पद देय'र यूँ पाछो लेणो,
नीं भोजराज जद सह पायो।
हम्मीरदेव रै सामीं पण,
डरतो कुछ भी नीं कह पायो।।३६८।।

चुपचाप बठै स्यूँ भीर हुयो,
अर अंत माँय दिल्ली आय'र।
निज भाई पीथसिंघ सागै,
बो मिलग्यो खिलजी स्यूँ जाय'र।।३६६।।

तो कूटनीत खिलजी बीं नै,
खुस हो छाती स्यूँ लगा लियो।
'जगरा' री दे जागीर झट्ट,
अपणी सेना में मिला लियो।।४००।।

आ बात समझर्यो हो खिलजी,
लो'वो, लो'वै नैं काटैगो।
देणी जागीर भोज नै यूँ,
है काम नहीं कुछ घाटै को।।४०१।।

रजपूत खार खायोडो ओ,
मौकै पर देगो काम कदे।
ओ पट्यो रयो तो मेरै हित,
दे ज्यागो इक दिन प्राण कदे।।४०२।।

'ताऊ' खिलजी रा अै विचार,
सौळाणॉ सॉचा हा भाई।
इतिहास गवाह् है दुनियॉ में,
घर को भेदी लंका ढाई।।४०३।।

होणि रै वळ दिनमान घूमैं ई सकल संसार में।
जद दिन बुरा आज्याय खूंटी निंगळ ज्यावै हार नैं।।
इक मीर खिलजी प्रिय जिकै रो नाम मोमदस्याह हो।
वळ चाल हौणी कोप भाजन वण गयो पतिस्याह हो।।४०४।।

राजा'र जोगी अगनि जळ कद होय है किण रा सगा?
पतिस्याह मान्यो जद्द वींनैं मौत री देय'र सजा।
वो वेकसूर पठाण दर-दर भीख अपणै प्राण री।
जद मॉगतो डोल्यो जगत में दे दुहाई आण री।।४०५।।

दिल्ली भगोडै नैं सरण दे तद्द हिन्दुस्तान में।
कुण डाळ देतो यूँ हिं जोखम मांय अपनी ज्यान नैं।।
वीं नैं सरण हम्मीर दीन्हीं वेधडक रणथंभ में।
अर जाय कूद्यो वीर यूँ वो झट पराई जंग में।।४०६।।

मोमदस्या नैं सरण

अल्लाउदीन खिलजी इक दिन,
आखेट करण री ले मन में।
निज हरम सहित करणै सिकार,
जा पूग्यो इक सुन्दर बन में।।४०७।।

अर जाय'र डेरा डाळ दिया,
बो अेक नदी रै ढावै पर।
तद जंगळ में मंगळ होग्यो,
बीं साही म्रिगया कावै पर।।४०८।।

मोकळा दास–दासियाँ खास,
कुछ ठावा मीर–सिकार[1] जणा।
आयोड़ा हा ई सिविर मॉय,
सागै अमीर–उमराव घणा।।४०६।।

1-शिकार प्रबंधक

दिन भर करतो खिलजी सिकार,
दिन ढळियाँ मैफिल जम ज्याती।
छळकंता जामाँ बीच जणॉ,
नरतक्यॉ निरत करती गाती।।४१०।।

ऊँठीनैं साही हरम छोड़,
हर 'बेगम' भी होय'र बे-गम।
रमणीय बनथळी में सुतंत्र,
करती बिहार रै'ती हरदम।।४११।।

मनमोद मनाती निरख–निरख,
बिरछॉ री लदी–पदी डाळी।
चोकड़ी भरंता मिरग झुंड,
कूकाती कोयलडी काळी।।४१२।।

ई मोज–मस्ति रै आलम मे,
दिन पर दिन बीत्यॉ गया घणॉ।
जी भरकै मनचाया सिकार,
खुस होय'र खिलजी कर्‌या जणॉं।।४१३।।

पण होणी नै कुण जाण सक्यो,
कुणसी करवट ले–लेय कणॉ।
आ सुख मे दुख अर दुख में सुख,
बाळणजोगी दे–देय कणॉ।।४१४।।

इक दिन खिलजी री हुरम सकल,
सज–धजकै रथ पर हो सवार।
जा पूगी दूर घणी बन में,
चहकंती करती बन–बिहार।।४१५।।

जद देख सरोवर अेक वठै,
सगळी रळ–मिल'र नहाण लगी।
अर आपस में करती किलोळ,
जळ में उत्पात मचाण लगी।।४१६।।

इतणै में ही अणचाणचुकै,
काळी–पीळी ऑधी आगी।
जद बदहवास–सी बै सगळी,
पोखर स्यूं निकळ–निकळ भागी।।४१७।।

ई तेज भंयकर ऑधी मे,
बादळ बण धूळ उडण लागी।
तपती धोळी–दोपारी पर,
बणकै काळी रजनी छागी।।४१८।।

कितणा ई ऊँचा–बडा पेड,
तूफान झेल ओ नीं पाया।
बॉरा मोटा–भारी डाळा,
टूटंत मोरिया गरळाया।।४१६।।

अर इणी बीच इक पेड टूट,
जद साही रथ पर आण पड्यो।
रथ स्यूँ जुतियोड़ो घोडो इक,
तद छिण में खाय पछाड़ मर्यो।।४२०।।

ई चाणचुकै री आफत स्यूँ,
हुरमाँ रै सागै आयोड़ा।
सगळा ही साही सेवक तद,
हा मन ही मन घबरायोड़ा।।४२१।।

रथ चालक खोजा अर बांदी,
जद ताबड़तोड मचाता–सा।
झट थूक मुट्ठियॉ में भाग्या,
सगळा निज प्राण बचाता–सा।।४२२।।

यूँ होग्या तेरा – तीन सकल,
बी घुप्प अँधेरै मॉय जणा।
जीं नैं भी ठौर मिली जीं दिस,
बीं ठौर पूगग्यो जाय जणा।।४२३।।

ई भगदड में इक बेगम जद,
जा पूगी इसड़ी ठौर जठै।
धाडंता हिंसक जीवॉ रै,
हो सिवा नहीं कुछ और यठै।।४२४।।

थर–थर कॉपंती नार जणा,
भयभीत होयकै मन मॉंई।
अपणै अल्लाह् नैं कर्‌यो याद,
निज प्राण बचावण रै तॉंई।।४२५।।

संजोग पाय इक घुडसवार,
सज्जीलो जबर–जुवान जणा।
सामीं आवंतो दीख्यो जद,
जी में आई कुछ ज्यॉन जणा।।४२६।।

बा अपणी पूरी ताकत स्यूँ,
जद रोवण अर कुरळाण लगी।
दे–देय'र झालै पर झालो,
बीं नैं खुद पास बुलाण लगी।।४२७।।

बीं घोर भयंकर जंगळ में,
यूँ बेहवास तन बिन लिबास।
बिलखंती नारी देख जणा,
बो घुडसवार आ गयो पास।।४२८।।

पूछ्यो– मो'तरमॉं ! कुण है तूँ ?
ई जंगळ में के कर'री है ?
कुण कर्‌यो हाल है ओ तेरो,
बेखोफ बता क्यूँ डर'री है ? ४२९।।

जद हुरम आप री व्यथा–कथा,
सगळी समझाई रो–रोकर।
परिचय पाय'र झट घुड़सवार,
घोडै स्यूँ नीचै गयो उतर।।४३०।।

अर बोल्यो– मलिकाए जहान !
मै मोमदस्या जाती पठाण।
दिल्ली री साही सेना रो,
हूँ वफादार सॉचो गुलाम।।४३१।।

यूँ कह अपणो इक अंग वस्त्र,
बो जा बेगम नैं उढा दियो।
अर बिठा जीन पर जद बीं नैं,
घोड़ै नै आगै बढ़ा दियो।।४३२।।

पण इणी बीच इक नौ–हथ्थो,
म्रिगराज सामनैं धाड़ंतो।
आ निकळ्यो झाड्यॉ स्यूँ अपणो,
बिकराळ जबाडो फाड़ंतो।।४३३।।

यूँ खडी सामनैं देख मौत,
बेगम री सॉस अटक'गी ही।
बा बॉथ घाल मोमदस्या रै,
सीनैं स्यूँ जणा लिपट'गी ही।।४३४।।

बोल्यो मोमदस्या– मोतरमाँ!
कुछ बात नहीं है डरणै री।
आ'गी सायद है आज घड़ी,
ई सेर–बबर रै मरणै री।।४३५।।

यूँ कह उतर्यो झट घोड़ै स्यूँ,
धनुऑं पर तीर चढाय लियो।
अर अेक बाण में धाडंतै,
नाहर नैं मार गिराय दियो।।४३६।।

मोमदस्या री मरदानी पर,
बा फिदा होयगी हुरम जणा।
जाणै कुण–कुण सा सुपना में,
यूँ जाय खोयगी हुरम जणा।।४३७।।

टकटकी लगा निरखती रयी,
बा बीं नैं हो आतम–विभोर।
बिन झपकाए पळकाँ अपणी,
चंदै नैं ज्यूँ निरखै चकोर।।४३८।।

मोमदस्या जद बीं कामण रै,
नैणाँ री भासा ताड़ गयो।
बाअदब बेधड़क साफ–साफ,
यूँ कै'तो पल्लो झाड़ गयो।।४३९।।

जो हुवै असल बेटो पठाण,
बो माल परायो नीं ताकै।
माँ–भाण बहू–बेटी समान,
हर नार पराई नै ऑकै।।४४०।।

बा हुरम दाव हार्योड़ी जद,
निज तिरिया चरित दिखा बैठी।
अर पाक साफ मोमदस्या पर,
खोटो इळजाम लगा बैठी।।४४१।।

मद रो लोभी भँवरो खिलजी,
आग्यो जानम री बातॉं मे।
फरमान मौत रो लिख्यो झट्ट,
खुद कलम उठाकै हाथॉं में।।४४२।।

'ताऊ' तिरिया रो प्यार पाय,
छळकंतो तिरिया–मिरिया जद।
देवता भूल ज्यावै विवेक,
मिन्नख री रयी चितारी कद ? ४४३।।

जद जैयॉं–तैयॉं बो पठाण,
दिल्ली स्यूँ ज्याँन बचा भाग्यो।
अर कई जगॉं रजवाड़ॉं में,
जा सरण मॉंगणै बो लाग्यो।।४४४।।

पण बीं खिलजी रै बागी नैं,
कोई भी सरण न दे पायो।
तो मोमदस्याह पठाण भाग,
सीधो गढ रणतभॅवर आयो।।४४५।।

ऊँचै रणथंभ किलै रो जद,
सासक हम्मीर हठीलो हो।
सरणागत रच्छक, महाहठी,
रणबंको वीर सजीलो हो।।४४६।।

सरणागत पाल क्रिपाल अरै,
राजा हम्मीर दुहाई है।
ओ रजपूताणॉ कुळ दीपक,
सुण ओ रणधीर दुहाई है।।४४७।।

मैं मीर मुहम्मदस्या पठाण,
हूॅ खिलजी हाथ सतायोड़ो।
प्राणॉं री रिच्छ्या रै तॉई,
हूॅ सरण आप री आयोडो।।४४८।।

दिल्ली स्यूॅं जीं दिन बिन कसूर,
दाणै—पाणी रो सीर छुट्यो।
घूम्यायो दसूॅ दिसावॉ में,
मैं सरंण मॉगतो पिट्यो-लुट्यो।।४४९।।

वस छोड तनैं नीं दिख्यो मनैं,
दूसरो समथ्थ जगत्त मॉय।
ई विपदा में दे साथ अठै,
कोई भी आज लगत्त नॉय।।४५०।।

यूँ कहकै गिरग्यो चरणॉ में,
आय'र गढ़ रणतभॅवर मॉई।
रो–रोय'र मॉंगी भीख जणा,
निज प्राण बचावण रै तॉई।।४५१।।

हम्मीर समझकै सरणागत,
बीं नैं छाती स्यूँ लगा लियो।
परिवार सहित दे अभयदान,
जीवण रिच्छ्या रो बचन दियो।।४५२।।

जा मोमदस्या ! निरभय सोज्या,
लाम्बी सौ हाथ रिजाई में।
जद तॉई बळ है बरकरार,
ई भुजा म्हारली दॉई में।।४५३।।

मेरै जीतॉजी तनैं अठै,
कोई खिलजी नीं साळ सकै।
किण री मॉ खाई सूंठ अठै,,
कर बॉंको तेरो बाळ सकै।।४५४।।

गढ मेरै वखतरवंद माँय,
कुण–कद तेरी ढिग आ'र तकै ?
मेरी मरजी रै बिनाँ अठै,
जद चिड़ी चूँच नीं मार सकै।।४५५।।

धन है राजन तूँ अर तेरो,
धन है यूँ देणो सरण मनैं।
मैं जिती सुणी ही वीं स्यूँ भी,
बढकै पायो हूँ आज तनैं।।४५६।।

फेरूँ भी सोच लिए सावळ,
मेरो इतणो–सो कै'णो है।
मन्नैं यूँ देणी सरण साफ,
दिल्ली स्यूँ टक्कर लेणो है।।४५७।।

मैं जीं खिलजी रो बागी हूँ,
दिल्ली पतिसाह कुहावै है।
है जिता भूप उमराव बंक,
सगळा वीं स्यूँ भय खावै है।।४५८।।

ई कड़वी सच नै सात बार,
सोच'र ओ झगडो मोल लिये।
पग आगै धरणै स्यूँ पै'ल्याँ,
अपणी ताकत नैं तोल लिये।।४५९।।

मोमदस्या ! साँचो रजवट जद,
दे–दे कोई नैं सरण जणा।
मरणै मरज्यावै पण सोचै,
खुद रो हित-अणहित बोल कणा?४६०।।

हम्मीर बढाकै पग आगै,
पाछो हट ज्याय, असंभव है।
बो जीतैजी इक बार बचन,
देय'र नट ज्याय, असंभव है।।४६१।।

दिल्ली पतिसाह् स्यूँ भय खायो,
कद कोई गढ रणथंम–धणी।
है दिल्ली अर चौहाणाँ में,
बरसाँ स्यूँ आई चली तणी।।४६२।।

है हठी घणो चौहाण बंस,
छोड़ै नी पलड़ो सत्त कदे।
तन तजणो करै कबूल हरख,
पण तजै न सरणागत्त कदे।।४६३।।

बोल्यो मोमदस्या– सुण राजन !
जद तूँ भी द्रिढ इंच्छ्या मेरी।
निज साँस बच्योड़ा जीवण रा,
कर र्‌यो हूँ आज नजर तेरी।।४६४।।

उपकार कर्‌योड़ो ओ तेरो,
जीवण भर नहीं भुलाऊँगो।
जे हूँ पठाण तो रिण तेरो,
मैं ब्याज समेत चुकाऊँगो।।४६५।।

आ बात म्हारली समझ लिए,
कोरो मेरो अभिमान नहीं।
खा कसम खुदा री कै'र्‌यो हूँ,
मै फरामोस–अहसान नहीं।।४६६।।

मौको आयाँ आ बात कदे,
मै करकै सिद्ध दिखाद्‌यूँगो।
इक बूँद पसीनै पर तेरै,
मै खुद रो खून बहाद्‌यूँगो।।४६७।।

हम्मीरदेव रो ओ निरणय,
कुछ सरदाराँ मन कम भायो।
गढ रै महाजनाँ रै तो ओ,
इक मत स्यूँ दाय नहीं आयो।।४६८।।

इक तो सरणागत मुसळमान,
ऊपर स्यूँ खिलजी रो बागी।
अरथात करेलो नीम चढ्‌यो,
लाग्यो बो मोमदस्या सागी।।४६९।।

देणी ई नैं यूँ सरण साफ,
आफत नैं गळै लगाणो है।
अर बिनॉ वात ही ओ झूठो,
दिल्ली स्यूँ वैर वढाणो है।।४७०।।

सगळा ही पुरवास्यॉ रै भी,
आ बात जरा-सी रडकी ही।
करती विरोध ई मुद्दै रो,
मन खिडक्यॉ सब री खड़की ही।।४७१।।

यूँ धीरै-धीरै चाल'र आ,
चरचा चौरावॉ जाय चढी।
अर बढती – बढती बात जणा,
हम्मीर कान में जाय पड़ी।।४७२।।

जद जुड़वाकै इक आम सभा,
सबनैं सावळ समझाया बो।
जनता जनारदण नै अपणा,
हीये रा भाव जताया बो।।४७३।।

बोल्यो- मेरी प्यारी पिरजा !
गढ रा म्हाजन-सिरदार सकल।
ई आम सभा रो मुद्दो है,
सरणागत मोमदस्याह असल।।४७४।।

आ आण सकल छत्रियॉ मॉय,
सदियॉ स्यूँ चाली आई है।
सरणागत रच्छक रामकथा,
रिसि वालमीक खुद गाई है।।४८०।।

बीं कुळ री पावन परंपरा,
हम्मीर देंवतो तोड किंयॉ ?
रणथभ पूगतो मोमदस्या,
मै पाछो दे'तो मोड कियॉ?।।४८१।।

"बध्यं प्रपन्नं न प्रतिप्रयच्छन्ति",
आ बात बेद समझावै है।
सरणागत बध–जोगो भी हो,
तो भी मोड्यो नी जावै है।।४८२।।

है बात जठै तक ई पख में,
खिलजी स्यूँ बैर बढावण री।
हिम्मत राखै रणथंभ हाल,
दिल्ली स्यूँ टकरा जावण री।।४८३।।

अब तो चाये जो हो ज्यावै,
पग पाछो नहीं हटाऊँ मैं।
जी'तै जी तो वीं खिलजी नैं,
मोमदस्या नीं लौटाऊँ मै।।४८४।।

ओ पतो चल्यो जद खिलजी नैं,
है मोमदस्या हम्मीर सरण।
तो लिखकै पाती भिजवाई,
बीं नैं झट सावळ चेत करण।।४८५।।

हम्मीर ! आग स्यूँ मत खेलै,
जीवण री चावै खैर अगर।
मैं तनै झ्यॉन स्यूँ खोद्यूँगो,
मेरै स्यूँ बॉध्यो बैर अगर।।४८६।।

मेरै स्यूँ टक्कर लेय'र क्यूँ,
बेमतलब मरणो चावै है।
आवै जद मौत गादडै री,
गावॉ कानीं आज्यावै है।।४८७।।

मैं सदॉ मरंता देख्या है,
निबळॉ नैं सबळॉ संग लड्यॉ।
तूँ भी कुण सो जी पाणो है,
सुलतानें दिल्ली संग भिड्यॉ।।४८८।।

किण रै बूतै पर बोल इयॉ,
मन मॉय घणो इतरायो है ?
दिल्ली पतसाह भगोडै नैं,
अपणै गढ मॉय छिपायो है ? ।।४८९।।

ओ सुलतानें दिल्ली खिलजी,
जाणै कितणा गढ ढाया है।
किल्ला दुर्भेद — अजेय कई,
जीत्या अर धूळ मिलाया है।।४६०।।

बळ छोटी–सी रणथंम गढी,
तूँ जवनपती स्यूँ तण बैठ्यो ?
क्यूँ अेक गाँठ हळदी री ले,
मन में पंसारी बण बैठ्यो ?।।४६१।।

तुझसा कितणा हीं राव भरै,
पाणी म्हारलै परींडै में।
परबत स्यूँ टक्कर नी लेवै,
समझा अपणै मन–मींडै नैं।।४६२।।

जे चाऊँ तो इक पळ में हीं,
सुण तन्नैं मार गिराऊँ मैं।
अर जद चाऊँ मोमदस्या नैं।
दिल्ली हॉक'र ले आऊँ मै।।४६३।।

हठ पकड़ मताँ हम्मीर हठी,
नीं तो पाछै पछतावैलो।
मेरी सेना मकडी जाळो,
तूँ माखी ज्यूँ फँस ज्यावैलो।।४६४।।

क्यूँ जाण बूझ रजपूतण नैं,
वेवा विन बात बणावै है ?
क्यूँ मेरै बंदी रै तांई,
तूँ अपणी ज्यॉन गॅवावै है।।४६५।।

सुलतानें दिल्ली होय'र भी,
मैं तनैं देख समझार्‌यो हूँ।
आ पॉती साख भरै है मैं,
रण करणो कोनीं चार्‌यो हूँ।।४६६।।

हम्मीरदेव जद सुणी खबर,
दिल्ली स्यूँ कोई आयो है।
गढ रणतभँवर री ड्योढी पर,
खिलजी निज दूत पठायो है।।४६७।।

तो झट आदेस कर्‌यो जारी,
जाओ'र उचित सतकार करो।
म्हैमान दूत है इज्जत स्यूँ,
जल्दी हाजिर दरबार करो।।४६८।।

झट हुकम बजायो गयो दूत,
आ झुक आदाव – अरज कीन्हीं।
हम्मीरदेव नैं तद निकाळ,
खिलजी री बा पॉती दीन्हीं।।४६६।।

ओ सुलतानें दिल्ली खिलजी,
जाणै कितणा गढ ढाया है।
किल्ला दुर्भेद -- अजेय कई,
जीत्या अर धूळ मिलाया है।।४६०।।

बळ छोटी-सी रणथंम गढी,
तूँ जवनपती स्यूँ तण बैठ्यो ?
क्यूँ अेक गाँठ हळदी री ले,
मन में पंसारी बण बैठ्यो ?।।४६१।।

तुझसा कितणा हीं राव भरै,
पाणी म्हारलै परींडै में।
परबत स्यूँ टक्कर नीं लेवै,
समझा अपणै मन-मीडै नै।।४६२।।

जे चाऊँ तो इक पळ में हीं,
सुण तन्नैं मार गिराऊँ मैं।
अर जद चाऊँ मोमदस्या नै।
दिल्ली हॉक'र ले आऊँ मैं।।४६३।।

हठ पकड़ मतॉं हम्मीर हठी,
नीं तो पाछै पछतावैलो।
मेरी सेना मकड़ी जाळो,
तूँ माखी ज्यूँ फँस ज्यावैलो।।४६४।।

क्यूँ जाण बूझ रजपूतण नै,
बेवा बिन बात बणावै है ?
क्यूँ मेरै बंदी रै तांई,
तूँ अपणी ज्यॉन गॅवावै है।।४६५।।

सुलतानें दिल्ली होय'र भी,
मैं तनैं देख समझार्यो हूँ।
आ पाँती साख भरै है मै,
रण करणो कोनीं चार्यो हूँ।।४६६।।

हम्मीरदेव जद सुणी खबर,
दिल्ली स्यूॅ कोई आयो है।
गढ रणतभॅवर री ड्योढी पर,
खिलजी निज दूत पठायो है।।४६७।।

तो झट आदेस कर्यो जारी,
जाओ'र उचित सतकार करो।
म्हैमान दूत है इज्जत स्यूॅ,
जल्दी हाजिर दरबार करो।।४६८।।

झट हुकम बजायो गयो दूत,
आ झुक आदाब – अरज कीन्हीं।
हम्मीरदेव नै तद निकाळ,
खिलजी री बा पॉती दीन्हीं।।४६६।।

खिलजी रै कागद रा आखर,
गोळी-सा लाग्या छाती में।
नस–नस में आग लगा दीन्हीं,
समचार लिख्योड़ा पाँती में।।५००।।

निकळी चिणगारी आँख्याँ स्यूँ,
चै'रो लपटाँ-सो लाल हुयो।
भ्रकुटी तणगी मुट्ठी भिंचगी,
भुज फड़की मुख विकराळ हुयो।।५०१।।

जद धाड़ मारतो नाहर-सी,
हम्मीर क'यो गुस्सै में भर।
जा दूत सुणादे खिलजी नैं,
दिल्ली जाय'र मेरो उत्तर।।५०२।।

राखै जो ज्यान हथेळी पर,
गीदड़ भभक्याँ स्यूँ डरै नहीं।
ई राजपुतानै री माटी,
आ बात गवारा करै नहीं।।५०३।।

आ होणी कदे न होय सकै,
हम्मीर बचन दे नट ज्यावै।
सरणागत कोनीं लौटाऊँ,
आ नाड़ भलाँई कट ज्यावै।।५०४।।

जद दिया बचन तो दिया बचन,
देय'र बचनॉ स्यूं के टळणो ?
बचनाँ स्यूँ प्राण नहीं प्यारा,
बचनॉ ताँईं जीणो–मरणो।।५०५।।

हिमगिरि स्यूँ गिरती गंगधार,
चाए तो उल्टी बहण लगै।
समँदर मरजाद छोड देवै,
या मौत कहर बण ढहण लगै।।५०६।।

जद तॉई ई तन पिंजर मे,
ओ प्राण–पखेरू वास करै।
मैं सरणागत लौटादयूँगो,
सुपनैं में भी क्यूं आस करै ?।।५०७।।

जो लिख भेज्यो तूॅ पाती में,
बो कदे न उल्टो हो ज्यावै।
सुण रजपूतण रै बदलै में,
बेगम बेवा नीं होज्यावै।।५०८।।

मरणो तो सब नैं है खिलजी !
जो ई धरती पर जायो है।
अम्मरपट्टो लिखवाय अठै,
तूँ भी सायद नीं आयो है।।५०९।।

ई सच्च – सासवत री सगळा,
मिल वेद–पुराण भरै साखी।
धरती पर आवण–जावण री,
चाली आई जग में चाकी।।५१०।।

तेरै जिसड़ा सुलतान कई,
ई वीर धरा पर आया है।
गौरी स्यूं ले'र जलालू तक,
चौहाणॉ स्यूं टकराया है।।५११।।

कुण बच्यो सेस ? तूं वता अेक,
सारा ही गया समाय धरा।
ई लिए 'बोल' सभळ'र बोल,
तूं खोळी मॉय समाय जरा।।५१२।।

अपणी कीरत खुद आप कर्यॉ,
कुण सूर कुहायो जग्ग मॉय।
जो हुवै बंक, जाय'र निसंक,
निज पग्ग धरै रण मग्ग मॉय।।५१३।।

अब तो पाळा मॅडग्या खिलजी,
अब ओ रण डाद्यो कद डटसी।
कुण निरबळ है कुण बळसाली,
रणभौम मॉय वेरो पडसी।।५१४।।

जे माँ रो दूध पियो है तो,
मत गाल बजा अर आगै बढ।
जे असल बाप रो जायो है,
तो आ रण में मेरै स्यूँ लड।।५१५।।

मेरा अै मुट्ठी भर जुवॉन,
तेरी सेना स्यूँ टकरासी।
तो तेरी सेना नैं खिलजी !
छट्ठी रो दूध याद आसी।।५१६।।

अै पळ में साही सेना नै,
खिलजी रण मॉय छका देसी।
मींडॉ री टक्कर रो सुवाद,
भिड़तॉ ई तनैं चखा देसी।।५१७।।

लागै है तेरो जवनराज !
मींडॉ स्यूँ पाळो पड्यो नही।
तूँ फकत गादडा मार्या है,
बब्बर सेरॉ स्यूँ भिड्यो नहीं।।५१८।।

तूँ हरम मॉय बेगमॉ संग,
बैठ्यो चूडी खणकाई है।
बूढै सुसरै की नाड काट,
गद्दी दिल्ली हथियायी है।।५१६।।

तन्नैं ओ स्यात पतो कोनी,
जीवण में बस इक बार चढ़ै।
तिरिया रो तेल हमीरी–हठ,
नीं चढै दूसरी बार कदै।।५२०।।

ओ प्रण है मेरो सुण खिलजी !
जे महाकाळ भी आवैलो।
मेरे जीतै–जी मोमदस्या,
वीं रै भी हाथ न आवैलो।।५२१।।

जो बंक होवै वो कणा बळ मांय आवै स्याळ कै।
हम्मीर उत्तर सुण'र खिलजी रह गयो झुंझळायकै।।
दिल्लि रै आई दाय कोनी हेकडी रणथंभ री।
यूं भूमिका फिर बण चली ही बिन बणाए जंग री।।५२२।।

दूसरो जुद्ध

हम्मीरदेव रो जद उत्तर,
जा दूत सुणायो खिलजी नैं।
तो अेक बार तो मन मॉई,
बिसवास न आयो खिलजी नै।।५२३।।

के आज जमीं पर अब भी है,
मन्नैं यूँ उत्तर देवणियो ?
जिन्दो है कोई सूरवीर,
मेरै स्यूँ टक्कर लेवणियों ? ५२४।।

सुलतानें दिल्ली नै अैयाँ,
जो आगै हो ललकार्‌यो है।
लागै है ओ रणथंम धणी,
हम्मीर मरद तो भार्‌यो है।।५२५।।

अब तो कुछ करणो हीं पडसी,
यूँ सोच हुयो सुलतान विकळ।
लागै है अब तो ओ पाणी,
सिर स्यूँ भी ऊँचो गयो निकळ।।५२६।।

वैयाँ खिलजी री ऑख्यॉ में
रडकै हो रणथम्भौर सदॉ।
ई गढ पर टेढी निजराँ स्यूँ,
झॉक्यो वीं रो मन-मोर सदॉ।।५२७।।

ओ खास गद्ध हो जी नै वो,
रण में सर करणो चावै हो।
हम्मीरदेव स्यूँ जुद्ध मॉय,
जाय'र खुद भिड़णो चावै हो।।५२८।।

ई रा तद खिलजी रै सॉमीं,
कारण भी हा पुखता अनेक।
जीं मॉय जलालू खिलजी री,
ही 'हार' प्रथम कारण विसेख।।५२९।।

जद बो सुलतानें दिल्ली हो,
ओ दुर्ग जीतणै आयो हो।
सन बा'रा सौ नब्बै'र अेक,
हम्मीर संग टकरायो हो।।५३०।।

पण जणा भिड़्यो हम्मीर संग,
लेणै का देणा पड़ग्या हा।
गढ रणतभँवर नैं जीतण रा,
सारा मंसूबा झडग्या हा।।५३१।।

पाछो भाग्यो दिल्ली कानीं,
वो ज्यान बचाकै मुसकिल स्यूँ।
सुसरै री बीं 'हार' रो दंस,
पाऱ्यो हो नहीं निकळ दिल स्यूँ।।५३२।।

दूजो कारण जो लागै हो,
खिलजी नैं ज्यादा नीक घणो।
वो ओ हो कै गढ रणतभँवर,
दिल्ली स्यूँ हो नजदीक घणो।।५३३।।

दिल्ली स्यूँ रणतभँवर गढ तक,
कुल पन्द्रा दिन रो रस्तो हो।
सेना नै कूच करण तॉई,
पडऱ्यो कुछ सरळ'र सस्तो हो।।५३४।।

तीजो कारण हो रणतभँवर,
दुर्गम हो राजपुतानैं मे।
नामी दुर्भेद किलो ओ ई,
मानीज्यो उणी जमानैं मे।।५३५।।

हम्मीरदेव रै पास जणा,
इक 'पारस–पत्थर' न्यारो हो।
बीं परस मणी रो लालच भी,
झगड़ै रो कारण भाऱ्यो हो।।५३६।।

सुन्दर कुँवरी–हम्मीर जणा,
चढ'री जोवण रै माळै ही।
कामीं खिलजी नैं कुछ–कुछ आ,
चरचा भी फोडा घालै ही।।५३७।।

पण सब स्यूँ मोटो कारण जो,
खिलजी नैं घणो सतावै हो।
रणथंभ धणी हम्मीर जणा,
दिग्विजयी मान्यो जावै हो।।५३८।।

आ बात जणा दिल्ली पतिसाह,
करतो भी तो बरदास कियॉ ?
सहजॉ ई धरती पर छाज्या,
दूजो कोई आकास इयॉ।।५३६।।

ई लिए चढाई करणै रो,
गढ रणतभॅवर पर कई बार।
अपणै मन में पक्को–पक्को,
खिलजी कर राख्यो हो विचार।।५४०।।

पण क्यूँ तो लडणै रो कोई,
चोखो मौको नीं मिलर्‌यो हो।
क्यूँ भिड़णै में हम्मीर संग,
काळजियो थोडो हिलर्‌यो हो।।५४१।।

पण यूँ उत्तर हम्मीर जणा,
चुभग्यो खिलजी रै कॉटो-सो।
जाणै तो मार दियो होवै,
गालॉ पर कोई चाँटो-सो।।५४२।।

सुलतानीं मद जद अपणो ओ,
अपमान नहीं यूँ सह पायो।
अगनी-सी लागी तन-मन में,
ऑख्याँ में खून उतर आयो।।५४३।।

ज्यूँ भूखो कोई नाहरियो,
भर झाळ मॉय धाड्यो होवै।
काळियो छेड़ताँ पाण जियॉ,
झैरीळो फूँकार्‌यो होवै।।५४४।।

बैयाँई खिलजी गुस्सै में,
धाडण अर फूँकारण लाग्यो।
बेचैन होयग्यो बहुत घणो,
अर मन ही मन सोचण लाग्यो।।५४५।।

जद इक अदनो-सो राजपूत,
देर्‌यो है मन्नै यूँ उत्तर।
है बात डूब मरज्याणै री,
लाणत है ई सुलतानीं पर।।५४६।।

सेना तैयार करी जावै,
जद झट फरमान कर्‌यो जारी।
गढ रणतभँवर सर करणो है,
करली जावै सगळी त्यारी।।५४७।।

फिर समाचार भेज्यो जगरा,
अर भोजराज नैं बुलवाकै।
उकसाण लग्यो बीं नै विठा'र,
निज मन री पीडा समझाकै।।५४८।।

बोल्यो– रै भोज ! लडा कोई,
तिकड़म जीं स्यूँ करल्यूँ मै सर।
यूँ सहज मॉय हीं रण करकै,
हम्मीर हठी रो रणतभँवर।।५४९।।

अपमान कर्‌यो हो बो तेरो,
अब मौको है जे चावै तो।
बदळो तेरो ले लेऊँ मैं,
जे तूँ तरकीब सुझावै तो।।५५०।।

तद भोज कै'ण लाग्यो खिलजी!
जीं री सेनॉ में बीरमदे।
अर हो जाजो सो सूरवीर,
वो कुण स्यूँ जीत्यो गयो कदे।।५५१।।

जीं स्यूँ भयभीत र'वै हरदम,
कुंतळ'र अंग कांची नरेस।
जीं री सेनाँ स्यूँ भिडणै में,
थर्रावै पूरो मध्यदेस।।५५२।।

जो ऑख मींच मालवा धणी,
अरजुन स्यूँ जा टकरायो हो।
अर बीं री हस्ती सेना नैं,
जा ठड्डै स्यूँ हरल्यायो हो।।५५३।।

बीं रणबंकै नैं कोई भी,
रण में तो सकै पछाड़ नहीं।
रणथंभ धणी स्यूँ जा भिडणो,
टाबरियॉ रो खिलवाड नहीं।।५५४।।

बो छै गुण अर सगतियॉ तीन,
हाळी सेना रो नायक है।
कितणाँ ई राजा–रजवाडा,
जिण रा रण मॉय सहायक है।।५५५।।

है विकट घणो रणथंम दुर्ग,
उड पूग सकै नीं खग्ग जठै।
किण रै दो सिर है सहजॉ ई,
जाय'र धर देवै पग्ग बठै।।५५६।।

तूँ जिस्यो समझर्‌यो है मन में,
उतणो सौ'रो ओ काम नहीं।
पण मैं जे बदळो नहीं लियो,
तो भोजराज मम नाम नहीं।।५५७।।

अब काळ बणैलो सुण खिलजी !
ओ भोज हमीर–हठीलै रो।
अब दिन खोटो आ ग़यो समझ,
गढ रणतभँवर रै किल्लै रो।।५५८।।

ई गढ नैं जीतण रो तन्नैं,
मैं अेक उपाय जतार्‌यो हूँ।
तूँ ध्यान लगाकै सुण सावळ,
कांटै री बात बतार्‌यो हूँ।।५५६।।

ई साल जमानो चोखो है,
खेताँ हरियाळी छारी है।
अर नुंवीं फसल नैं निरख-निरख,
हरसित बा पिरजा सारी है।।५६०।।

बा फसल कटै जीं स्यूँ पै'ल्याँ,
तूँ अपनी सेना भिजवाकै।
हम्मीरदेव स्यूँ चाणचुकै,
झट करदे जंग सरू जाकै।।५६१।।

यूँ सहजाँ अर सस्तै में ई,
थारलो काम पट ज्याणो है।
हम्मीर जुद्ध में फँस ज्यागो,
तो फसल काट नीं पाणो है।।५६२।।

जद बिन रासन रै कद ताँई,
आखिर बो रण कर पावैलो ?
भंडार अन्न खाली होया,
अर बो ढीलो पड़ ज्यावैलो।।५६३।।

पण जल्दी कर जे किल्लै में,
बा फसल पूग सा जावैगी।
तो तेरी सोचैड़ी सगळी,
योजना धरी रह ज्यावैगी।।५६४।।

तूँ सुपनैं में भी फेर कदे,
ओ गढ्ढ जीत नहिं पावैगो।
है समझदार तो चेत जरा,
नीं तो पाछै पछतावैगो।।५६५।।

बीं भोजराज री वाताँ में,
जद बजन लग्यो कुछ खिलजी नैं।
तो सेना रणतभँवर भेजी,
बो ओजूँ सन तेरा–सौ में।।५६६।।

ई बार जुद्ध जीतण रो जद,
कुछ ठाडो मंसूबो बणा'र।
लक्खी सेना सागै भेज्या,
बो घुड़सवार अस्सी हजार।।५६७।।

सब अस्त्र–सस्त्र बारूद रसद,
साही सेना लायक भेज्या।
अर साथ अलूग[1]'र नुसरतखॉ
दौ–दौ सेना नायक भेज्या।।५६८।।

पै'लो सेना नायक अलूग,
हो छेत्र *बयाना* रो रुखाळ।
अर दूजो नायक नुसरत खॉ,
हो गॉव 'कडा' जागीरदार।।५६९।।

मंगोळ नसल अल्लूग खान,
खिलजी रो साडू भाई हो।
बो म्रित सुलतान जलालू रो,
रिस्तै में सगो जॅवाई हो।।५७०।।

चंगेजखान रो ओ पोतो,
भारत में हीं आ बसग्यो हो।
सुलतान जलालू निजर मॉय,
बेटी तॉई वर जॅचग्यो हो।।५७१।।

1- अलूग खॉन

जद अलादीन निज सुसरै स्यूँ,
दिल्ली गद्दी हथियाई ही।
साही परिवार जलालू पर,
बो जम'र कहर बरसाई ही।।५७२।।

इक बर तो जणा लपेटै में,
ओ अलूगखाँ भी आग्यो हो।
पण निज चतुराई रै बळ पर,
बो खुद नैं साफ बचाग्यो हो।।५७३।।

अर आज जोगता अपणी स्यूँ,
पद बड़ो पायग्यो भारी हो।
दिल्ली री साही पलटण में,
बो खास सैन्य अधिकारी हो।।५७४।।

नुसरत खिलजी रो अंध-भगत,
अर साँचो वीर सिपाई हो।
अर किणी दूर कै रिस्तै में,
खिलजी रो लागै भाई हो।।५७५।।

दोनूँ ईं वीर लड़ाका हा,
झट हुकम मान सेना लेकर।
चल दिया बाँधकै कफन सीस,
बै 'अल्ला हो अकबर' कै'कर।।५७६।।

टिड्डी दळ-सी साही सेना,
ऑधी-सी आगै बढ आई।
देखतॉं-देखतॉं ई चाल'र,
जद बा झॉंई तक चढ आई।।५७७।।

अधिकार जमाकै झॉंई पर,
बा सेना लूँट मचा भारी।
तद कूच करण गढ रणतभँवर,
करणै लागी झटपट त्यारी।।५७८।।

झॉंई स्यूँ थोडी दूरी पर,
आथूणो हो गढ रणतभॅंवर।
सेना बीं कानीं हुई भीर,
दिखळाती अपणो जोर-जबर।।५७६।।

यूँ आगै बढ़ती गई फौज,
गढ रणतभॅंवर नेड़ै आयो।
तो अलूगखॉं अणचाणचुकै,
अपणै लसकर नैं रुकवायो।।५८०।।

उत्साहित जणा जवन सैनिक,
मिल बैठ बठै बतळाण लग्या।
सगळा अपणा न्यारा–न्यारा,
मनड़ै रा भाव जताण लग्या।।५८१।।

कोई बोल्यो– लागै है ओ,
राजा हम्मीर निरो सठ है।
अदणो-सो होकै राव कर्‌यो,
सुलतानें दिल्ली स्यूँ हठ है।।५८२।।

कोई बोल्यो– दिनमान जणा,
कोई रा खोटा आवै है।
जद यूँ हीं न्यूँतो देय'र बो,
घर बैठ्यो मौत बुलावै है।।५८३।।

इक बोल्यो– कुछ भी हो ओ जुध,
ज्यादा दिन तो नीं धिक पासी।
ई भारी सेना रै सामीं,
कुछ राजपूत के टिक पासी ? ५८४।।

अजगर-सी आ साही सेना,
जद झाळ खाय मुंडो बासी।
तो एक साँस में हीं सब नै,
जिन्दा पळ मॉय निगळ ज्यासी।।५८५।।

ईं जवन फौज रै मॉय कई,
बै सैनिक भी हा आयोडा।
हा जिका पै'लडै जुद्ध मॉय,
रजपूताँ स्यूँ टकरायोड़ा।।५८६।।

बै रजपूतॉ रै बळ नैं निज,
कस्सोटी मॉय कस्योड़ा हा।
बॉ री तलवार दुधारी रै,
पाणी रो स्वाद चख्योड़ा हा।।५८७।।

वै बोल्या– मनड़ै रा लाडू,
यूँ मतॉ गुडावो बढ–चढ की।
जीं स्यूँ भिड़णो है बा जंगी,
सेना है रणतभँवर गढ की।।५८८।।

रणथंम थळी मे आय अठै,
लो'वो लेणो रजपूतॉ स्यूँ।
है सहज नही करणी भिड़ंत,
आँ जबरा जंगी भूतॉ स्यूँ।।५८६।।

ई खाटी सच्चाई नैं वो,
अल्लूगखान भी जाणै हो।
सिंघ नैं मॉद में जा छेड़्यॉ,
के हो'सी हसर पिछाणै हो।।५६०।।

आ खूब समझर्‌यो हो अलूग,
मुँह–मौत मॉय है जा पड़णो।
रणथंभ पूगकै यूँ सीधो,
हम्मीरदेव स्यूँ जा भिडणो।।५६१।।

ई स्यूँ तो चोखो है कोई,
अब अैसी जुगत भिडाई जा।
हम्मीर संग झूठी–सॉची,
संधी री बात चलाई जा।।५६२।।

यूँ कुछेक दिन बीं नै अपणै,
चक्कर में उळझायो राखूँ।
अपणी झूठी मीठी कपटी,
बातॉ में बिलमायो राखूँ।।५६३।।

अर इणी बीच मौको पाय'र,
सेना नैं कूच कराई जा।
चुपकै–चुपकै सारी सेना,
किल्लै ताँई पूँचाई जा।।५६४।।

यूँ सोच चाल चलतो अपणी,
कुछ मन हीं मन हरखायो बो।
अर लिख परवानो झट्ट अेक,
हम्मीर कनैं भिजवायो बो।।५६५।।

हम्मीर देव ! मैं अलूग खाँ,
हूँ सेनापति दिल्ली पतिसाह।
मैं दूत हाथ भिजवार्‌यो हूँ,
लिखकै तन्नैं निज नेक सलाह।।५६६।।

ई पॉती नैं हरगिज मेरी,
तूँ कमजोरी नाँ मान लिए।
ठंडे दिमाक स्यूँ सोच-समझ,
मेरी सलाह पर ध्यान दिए।।५६७।।

जे सुख स्यूँ जीणो चावै तो
मेरे स्वामी स्यूँ यूँ नॉ पज।
हठ छोड हठी हम्मीर देव !
गहराई स्यूँ आ बात समझ।।५६८।।

सुलतानें दिल्ली है खिलजी,
तूँ बीं स्यूँ जे टकरावैगो।
बींरो तो कुछ नीं बिगड़ैगो,
तूँ बिना मोत मरज्यावैगो।।५६६।।

वैयॉ भी सीधो खिलजी स्यूँ,
तेरो कोई झगडो कोनी।
थाँ दोन्यॉ बीच कदे कोई,
कुछ अस्यो-वस्यो रगडो कोनी।।६००।।

क्यूँ झूठ-मूठ में हीं जद तूँ,
दे र'यो बात नैं तूल बता ?
क्यूँ बिना बात खुद रस्तै में,
रै'यो तूँ बोय बबूळ बता?।।६०१।।

तूँ आंधो होय'र बेमतलब,
क्यूँ गळै मौत रै पड़र्‌यो है ?
'आ साँप मनैं खा' हाळी आ,
कैबत साँची क्यूँ कर र्‌यो है ? ६०२।।

दिल्ली री आ साही सेना,
कद रण में खाई मात कठै ?
ई जंगी सेना स्यूँ भिड़णो,
तेरै बूतै री बात कठै ? ६०३।।

कूकर हो'कै हाथी सामी,
घुर्राय'र ऑख निकाळ मतॉं।
यूँ बिनॉं बात ही 'पाळ' देख,
मेरै स्वामीं स्यूँ पाळ मताँ।।६०४।।

सुल्तानें दिल्ली रै सामी,
तूँ के खाकै यूँ अड़र्‌यो है ?
क्यूँ जाण-बूझकै बिनाँ बात,
कुचमाद मौत स्यूँ कररयो है ?६०५।।

तेरै जिसड़ा रणथंभ धणी,
जाणै कितणॉं नित आवै है।
अर दिल्ली रै दरबार मॉय,
आय'र निज सीस झुकावै है।।६०६।।

खिलजी स्यूँ जीतण रा झूठा,
मत मन–हींडै में झोटा ले।
अर मेरी जे मानैं तो तूँ,
बीं मोमदस्या नैं लौटादे।।६०७।।

तूँ सोच जरा बो मोमदस्या,
आखिर तेरो के लागै है ?
अर कुणसो अस्यो अंदरूणी,
रिस्तो तेरो बीं सागै है ? ६०८।।

जद मुसळमान होय'र भी बो,
खिलजी रो कोनी रयो सगो।
के न्हयाल करैगो बो तन्नैं,
दे ज्याणो है इक रोज दगो।।६०६।।

बीं स्यूँ रखणी उम्मीद भली,
ओ तेरै मन रो धोखो है।
ई लिए तनैं समझार्‌यो हूँ ,
तूँ चेत हाल भी मौको है।।६१०।।

तूँ अब भी जे चावै तो बीं,
साही बागी नैं लौटादे।
अपणी ई गळती रै बदळै,
खिलजी नैं बेटी परणादे।।६११।।

दायजै मॉय इक लाख मुहर,
सौ हाथी अर घोड़ा हजार।
करले कबूल भरणो नियमित,
दिल्ली नैं कर नियमानुसार।।६१२।।

तो यूँ सहजाँ ई सिर पर स्यूँ,
तेरै आ आफत कट ज्यासी।
छाती पर चढियोड़ी तेरै,
आ साही सेना हट ज्यासी।।६१३।।

अर नीं तो तेरी तूँ जाणै,
मैं तेरै हित री कै'र्‌यो हूँ।
बस तेरी हाँ या नाँ सुणणै,
मैं इन्तजार में रै'र्‌यो हूँ।।६१४।।

जे लिखी सरत मंजूर नहीं,
तन्नैं तो रण करणै ताँई।
जा होय त्यार हम्मीर देव !
रणभौम मॉय मरणै ताँई।।६१५।।

संदेसो अलुग खॉन रो पा,
हट्ठी हमीर मुसकायो है।
अर जणॉ पडूत्तर खुद रो यूँ,
बीं दूत हाथ भिजवायो है।।६१६।।

म्हे राजपूत हाँ अलूगखाँ !
जद बचनाँ में बँध ज्यावाँ हाँ।
तो प्राण देयकै भी अपणो,
दीयोडो वचन निभावाँ हाँ।।६१७।।

म्हे कै'दी सरणागत रिच्छ्या,
करस्याँ तो फेरूँ करस्याँ हीं।
निज आण-बाण खातिर अपणी,
मरस्याँ तो फेरूँ मरस्याँ हीं।।६१८।।

तूँ तो के है अल्लूग खाँन।
खुद मौत चला रण आज्यावै।
तो वीं स्यूँ भी भय खाय कदे,
हम्मीर बचन नीं टळ पावै।।६१६।।

म्हे खिलजी सेना स्यूँ सुणले,
डटकै ही टक्कर लेवाँगा।
ईंट रो जवाब तनैं म्हे सुण,
रण में भाठै स्यूँ देवाँगा।।६२०।।

कुण मरसी कुण जिन्दो रै'सी,
तूँ ई पचडै में मतनाँ पड़।
हौणी तो होय'र ही रै'सी,
जे हिम्मत है तो आगै बढ।।६२१।।

म्हे ज्यॉन हथेळी पर लेय'र,
हाँ त्यार लड़ण – मरणै तॉई।
दिल्ली री साही सेना रो,
रण में स्वागत करणै तॉई।।६२२।।

है इस्टदेव संकर मेरो,
दुसमण स्यूँ घबराऊँ कोनीं।
है मात भवानी री सौगन,
सरणागत लौटाऊँ कोनीं।।६२३।।

ई बातचीत रै बीच जणा,
रात रै अँधेरै मे छुपकै।
किलमीं सेना हुय भीर गई,
किल्लै कानीं चुपकै–चुपकै।।६२४।।

अर पार करंती दुर्गम पथ,
ऊँचा परबत गै'री खाई।
दिन–रात चाल सारी सेना,
गढ रणत भँवर तक बढ आई।।६२५।।

आ बठै तळहटी मॉय अेक,
बा अपणो डेरो लगा दियो।
अर सगळा साही सैनिक जद,
मोरचो आप रो जमा लियो।।६२६।।

यूँ रजपूताँ रा पासा जद,
सहजॉ ई सुलटा पड्ग्या हा।
उन्दरा चालकै खुद ही जद,
सांपाँ रै बिल में वड़्ग्या हा।।६२७।।

निज कूटनीति पर जवन जठै,
फूल्या ही नहीं समार्या हा।
रजपूत मूढता पर बॉरी,
मन हीं मन में हरखार्या हा।।६२८।।

अलूग अर् नुसरत खॉन जणा,
हम्मीरदेव रो सुण उत्तर।
रण करणै तॉई हुया त्यार,
अपणी–अपणी सेना लेकर।।६२६।।

हम्मीर देव भी ऊँठीनैं,
करली ही अपणी सब त्यारी।
यूँ दोनूँ ईं कानीं स्यूँ जद,
घमसाण मचण लाग्यो भारी।।६३०।।

रजपूत करै हा रिच्छ्या रण,
अर वार करै हा ऊपर स्यूँ।
सब चला–चला प्रच्छेपणास्त्र,
ऊँचै गढ रणतभँवर पर स्यूँ।।६३१।।

अणचाणचुकै ही तीर अेक,
नुसरत री छाती चीर गयो।
अर खिलजी रो सेना नायक,
वो छिण में जग स्यूँ भीर हुयो।।६३२।।

सेना नायक रै मरताँ ई,
मुरदानी सेना में छा'गी।
रण माँय जूझता जवनाँ में,
भावना पराजय री आ'गी।।६३३।।

सब जुद्ध छोड भाजण लाग्या,
मच'गी भगदड़ साही दळ में।
रणवीर बाँकुड़ा राजपूत,
हालात समझग्या हा पळ में।।६३४।।

दी गई ढील रिच्छ्या रण में,
सगळा किल्लै स्यूँ बाहर आ।
साही सेना पर टूट पड़्या,
इकदम स्यूँ भूखै नाहर–सा।।६३५।।

जद टूटकै रणथंभ बंका जंग में माच्या जबर।
तद मुट्ठियाँ में थूक खिलजी 'जाँ' बचाई भाजकर।।
अल्लूग दिल्ली नैं दुखी मन जद कर्‌या समचार दो।
अेक तो नुसरत रै निधन रो दूसरो निज हार को।।६३६।।

जगरा रो जुद्ध

यूँ अेक बार खिलजी सेना,
ओजूँ रण स्यूँ मुँह मोड़ भगी।
जुध सामगरी'र रसद भारी,
रणभौम माँय निज छोड भगी।।६३७।।

अणगिणत अस्त्र अर सस्त्र सहित,
बचियोड़ी साही धन रासी।
पल्लै पड़िया रजपूताँ रै,
भाजंता दास कई दासी।।६३८।।

बीं नारी धन नैं रतीपाल,
मानंतो जद निरदोस — भली।
आजाद करी सगळ्याँ नैं बो,
मट्ठो बिकवाय'र गळी-गळी।।६३६।।

ईं जुद्ध विजय पर खुस होय'र,
हम्मीर भरे दरबार जणा।
हित सेना नायक रतीपाल,
जी भर बरसायो प्यार जणा।।६४०।।

निज पास बिठाकै बो बीं नैं,
सोनैं री सिकरी पहराई।
रिपुसूदन री संज्ञा देतो,
खुस होय'र पीठ थपथपाई।।६४१।।

सब बंक दूसरा भी जद ईं,
मौकै पर पायो मान घणो।
अर हुया भीर घर–गाँव निजू,
करता मन माँय गुमान घणो।।६४२।।

पण केहब्रू अर बीरमदे,
दोनूँ ई बुत्त बण्योड़ा–सा।
हम्मीर सामनैं खड़्या र'या,
मन में कुछ रोस भर्योड़ा–सा।।६४३।।

मोमदस्या रो छोटो भाई,
हो ज्वॉन सजीलो, केहब्रू।
हो बीस बरस रो पट्ठो बो,
मोट्यार रँगीलो, केहब्रू।।६४४।।

हम्मीरदेव रो माँ जायो,
भाई छोटो हो, वीरमदे।
ही चढ़ती उमर सत्रुवाँ हित,
भारी खोटो हो, वीरमदे।।६४५।।

टेढी निजरॉं निरखंतो जद,
वॉं नैं हम्मीर इसारै स्यूँ।
पूछ्यो– वोलो ! कुछ कै'वण री,
अव मन में है के थारै क्यूँ ?६४६।।

वोल्यो केहव्रू– अनदाता !
गुस्ताखी माफ मगर कै'स्यूँ।
नीं माफ करैगो मनैं खुदा,
जे ई मौकै पर चुप रै'स्यूँ।।६४७।।

मेरो भाई मोमदस्या है,
थारो सरणागत मानूँ हूँ।
वीं नैं जुध री आज्ञा कोनीं,
थारै कानी स्यूँ जाणूँ हूँ।।६४८।।

पण ओ बंधन मेरै पर क्यूँ ?
आ नहीं समझ में आ'री है।
तलवार म्हारली पड़ी – पडी,
क्यूँ जंग म्यान में खा'री है ?।।६४९।।

निज मकसद पर आ केहब्रू !
झट कह जो कै'णो चावै तूँ।
निज कथनी नैं इतणी ज्यादा,
लाम्बी मतणाँ फैलावै यूँ।।६५०।।

बीरमदे बोल्यो– महाराज !
जे आज्ञा हो तो मैं बोलूँ।
ख्वाहिस केहब्रू हित जुबान,
बिन लाग–लपेट जरा खोलूँ।।६५१।।

अबकाळै ओ जुध जवनपती,
मॉड्यो जीं रै उकसाणै पर।
गढ रणतभँवर तक चढ आया,
किलमीं जीं री सै पाणै पर।।६५२।।

बो कुळ कलंक करतघ्न दुस्ट,
है घर को भेदी भोजराज।
जो सुख स्यूँ बैठ्यो जगरा री,
जागीर रयो है भोग आज।।६५३।।

आ बात सिंघ–सावक कोई,
सहजॉ ईं कैयाँ सह पावै।
बीं रै होताँ गादड़ो धूर्त,
कोई यूँ जिन्दो रह पावै।।६५४।।

ई तॉई आज्ञा चावॉ हाँ,
म्हे दोनूं जगरा जाणै री।
अर भोजराज नैं अब बीं री,
करणी रो मजो चखाणै री।।६५५।।

बाँ मोट्यारॉ रै रगत माँय,
उबळंतो देख्यो ज्वार जणा।
मनचायो करणै रो बॉ नैं,
हम्मीर दियो अधिकार जणा।६५६।।

जद दोनूं वीर लड़ाका बै,
जाय'र जगरा नैं घेर लियो।
घमसाण मचाता ल्हासाँ रो,
पळ माँय लगा बै ढेर दियो।।६५७।।

पण इणी बीच जद भोजराज,
चुपकै स्यूं ज्यान बचा भाग्यो।
अर बीं रो भाई पीथसिंघ,
ई रण में वीर गती पाग्यो।।६५८।।

भाजतो – भाजतो भोजराज,
दिल्ली जाकै फरियाद करी।
अर सीधो खिलजी चरणाँ में,
सिर स्यूं उतार निज पाग धरी।।६५६।।

बोल्यो– दिल्ली सुलतान ! जाग,
क्यूँ भरम माँय भरमायो है ?
बो देख थारलै 'जगरा' पर,
रणथंभ धणी चढ आयो है।।६६०।।

तूँ ! झूठो ई मन माँय वण्यो,
बैठ्यो है आलमगीर अठै।
लंका तेरी नैं लूँट र'यो,
चोड़े–धाड़ै हम्मीर बठै।।६६१।।

वेधड़क होयकै जे यूँ हीं,
बो आगै बढतो जावैगो।
तो आज लियो है जगरो बो,
तड़कै दिल्ली हथियावैगो।।६६२।।

खामोस भोज ! क्यूँ होर्‌यो है,
अैयाँ आपै स्यूँ बाहर तूँ।
मत भूल कि अठै मुखातिब है,
तूँ सीधो दिल्ली पतिसाह् स्यूँ।।६६३।।

अब अेक सबद भी ओर क'यो,
मेरी सान रै खिलाफ अगर।
तो जाण लिए जिँदगानी अब,
तेरी रो हुयो खलास सफर।।६६४।।

फळ वीं रै ही यूँ स्यात मनैं,
ईसर ओ दिवस दिखायो है।
रण माँय पीथसिंह सो जोधो,
भाई ओ भोज गँवायो है।।६७०।।

हूँ कायर हूँ धिक्कार मनैं,
हो रजपूतण रो जायो मैं।
हम्मीर देव रो छोड़ साथ,
तेरै स्यूँ हाथ मिलायो मैं।।६७१।।

ज्यादा पाणै रै लोभ मॉय,
घर को रै'यो नीं घाटाँ रो।
मिन्नख नित गैला बदळणियों,
मैं होग्यो बा'रा–बाटॉ रो।।६७२।।

खुद री आधी नैं छोड'र जो,
दूजॉ री पूरी नैं जोवै।
अब जाय समझ में आई है,
बो अपणी आधी भी खोवै।।६७३।।

सुण भोजराज ! इसलाम माँय,
स्वामी स्यूँ गद्‌दारी करणो।
है जुर्म काबिले मॉफ नहीं,
दुसमण स्यूँ जा यारी करणो।।६७४।।

तद भोज कयो– सुण जवनराज!
आँ लखणाँ तो यूँ लागै है।
जिंदगाणी तेरी अर मेरी,
खतरै में सागै-सागै है।।६६५।।

तूँ मनैं छोड कर जतन जरा,
इज्जत थारली बचाणै रो।
नहिं देख मजो रणथंम नाथ,
हम्मीर संग टकराणै रो।।६६६।।

मैं तो तद ही मरग्यो हो जद,
रणथंम त्याग भाग्यायो हो।
जागीर थारली रो लालच,
मन में मेरै जाग्यायो हो।।६६७।।

बेळ माँय चालतो होणी रै,
तेरी बाताँ में आ बैठ्यो।
यूँ झूठो ई निज नाम जाय,
जयचंदाँ माँय लिखा बैठ्यो।।६६८।।

जद चोखा 'करम' कर्या कोनी,
तो चोखा करम कियाँ होसी ?
फळ तो मिलसी बीं सारू ही,
जैयाँ का बीज मिनख बोसी।।६६९।।

फळ बीं रै ही यूँ स्यात मनैं,
ईसर ओ दिवस दिखायो है।
रण माँय पीथसिँह सो जोधो,
भाई ओ भोज गँवायो है।।६७०।।

हूँ कायर हूँ धिक्कार मनैं,
हो रजपूतण रो जायो मैं।
हम्मीर देव रो छोड़ साथ,
तेरै स्यूँ हाथ मिलायो मैं।।६७१।।

ज्यादा पाणै रै लोभ माँय,
घर को रै'यो नीं घाटॉ रो।
मिन्नख नित गैला बदळणियों,
मैं होग्यो बा'रा-बाटाँ रो।।६७२।।

खुद री आधी नैं छोड'र जो,
दूजाँ री पूरी नैं जोवै।
अब जाय समझ में आई है,
बो अपणी आधी भी खोवै।।६७३।।

सुण भोजराज ! इसलाम माँय,
स्वामी स्यूँ गद्दारी करणो।
है जुर्म काबिले मॉफ नहीं,
दुसमण स्यूँ जा यारी करणो।।६७४।।

बो पाजी मोमदस्या भी तो,
ओहीज पाप करियोड़ो है।
होय'र पठाण हिन्दू राजा,
हम्मीर सरण पड़ियोड़ो है।।६७५।।

आ बात गवारा कियाँ करै,
कोई दिल्ली पतिसाह, बता?
तद सोच कियाँ जिन्दो रैसी,
बो नुगरो मोमदसाह, बता? ६७६।।

बो आज मरो या काल मरो,
मरणो तो बीं नैं पड़सी ही।
कद्दे तो बो उन्दर धक्कै,
ई बन–बिलाव रै चढसी ही।।६७७।।

तूँ भी तो लालच में फँसकै,
ओ करम खोडलो कर बैठ्यो।
अपणै स्वामी नैं छोड बाँथ,
दिल्ली पतिसाह् रै भर बैठ्यो।।६७८।।

ई सच्चाई नैं अभी–अभी,
तूँ निज मुँह स्यूँ स्वीकारी है।
तन्नैं भी दंडित करणो जद,
मेरी साही लाचारी है।।६७६।।

किसमत स्यूँ तूँ खुद ही चला'र,
आ लियो म्हारलै पंजे में।
कद लाड करै म्रिगराज जणा,
फँस ज्याय सिकार सिकंजे में।।६८०।।

ई ताँई कुछ अंतिम इंच्छ्या,
हो तो ल्या पूरी करवाद्यूँ।
या नाड़ थारली पर यूँ ई,
सीधो ही खांडो धरवाद्यूँ।।६८१।।

इक राजपूत नैं सुण खिलजी !
मरणै रो भय कद व्यापै है ?
पण धरम किस्यो भी अलग-अलग,
कद करम किणी रा नापै है ?।।६८२।।

तूँ सुसरै स्यूँ गद्दारी कर,
दिल्ली गद्दी हथियाई है।
अर बीं बूढै री पीठ माँय,
धोखै स्यूँ छुरी चलाई है।।६८३।।

अंतिम इंच्छ्या में भोजराज,
आ बात जाणणी चावै है।
इसलाम माँय कुणसी पंगत,
अपराध थारलो आवै है।।६८४।।

हित ताज–तख्त संघर्स अठै,
सदियाँ स्यूँ चाल्यो आर्‌यो है।
निज ताकत रै अनुसार जुद्ध,
जीत्यो है कोई हार्‌यो है।।६६०।।

मै भी छळ स्यूँ या निज बळ स्यूँ,
सत्ता स्यूँ ब्याव रचायो है।
ई क्रित्त माँय मेरै हाथाँ,
सुलतान काम इक आयो है।।६६१।।

आ भी सच है बो मर्‌यो जिको,
सुलतान जलालुद्‌दीन अेक।
सॉचो सुभ–चिंतक हो मेरो,
सुसरो बूढो बळहीण–नेक।।६६२।।

पण हर सत्ता परिवर्तन में,
खूनी संघर्स सुभाविक है।
दो जणाँ लड़ै गद्‌दी तॉई,
तो जग स्यूँ हुवै विदा इक है।।६६३।।

हर जंग–प्यार में जीत सदा,
हरकोई अपणी चावै है।
अब सोच तूँ हिं कुणसी स्रेणी,
अपराध म्हारलो आवै है।।६६४।।

'या अल्लाह!' यूँ कै'तो खिलजी,
इकदम होयग्यो निरुत्तर जद।
अर फेर सँभळ कुछ देर बाद,
वो दियो भोज नैं उत्तर तद।।६८५।।

जा भाज भोज ! कर मोज हुयो,
अल्लाह तेरै पर म्हैरबान।
साखी कुरान मत झूठ मान,
खिलजी तेरा बकस्या पिराण।।६८६।।

पण जातो-जातो सुणतो जा,
खुद रै सवाल रो उत्तर तूँ !
अपराध तेरलो अर मेरो,
किण पंगत में आवै अर क्यूँ ?।।६८७।।

दिल्ली सत्ता सिंघासण पर,
अब तक जितणा सुलतान हुया।
मो'मद गौरी रै बाद मॉय,
ज्यादातर वंस गुलाम हुया।।६८८।।

आँ मॉय घणखरा छळ-बळ स्यूँ,
दिल्ली गद्दी हथियाई है।
आ दिल्ली रै इतिहास मॉय,
परिपाटी चाली आई है।।६८९।।

हित ताज–तख्त संघर्स अठे,
सदियाँ स्यूँ चाल्यो आर्‌यो है।
निज ताकत रै अनुसार जुद्ध,
जीत्यो है कोई हार्‌यो है।।६६०।।

मैं भी छळ स्यूँ या निज बळ स्यूँ,
सत्ता स्यूँ ब्याव रचायो है।
ई क्रित्त माँय मेरै हाथाँ,
सुलतान काम इक आयो है।।६६१।।

आ भी सच है बो मर्‌यो जिको,
सुलतान जलालुद्‌दीन अेक।
साँचो सुभ–चिंतक हो मेरो,
सुसरो बूढो बळहीण–नेक।।६६२।।

पण हर सत्ता परिवर्तन में,
खूनी संघर्स सुभाविक है।
दो जणाँ लड़ै गद्‌दी ताँई,
तो जग स्यूँ हुवै विदा इक है।।६६३।।

हर जंग–प्यार में जीत सदा,
हरकोई अपणी चावै है।
अब सोच तूँ हिं कुणसी स्रेणी,
अपराध म्हारलो आवै है।।६६४।।

ई विसय माँयनैं बैयाँ तो,
ओ साफ मानणो है मेरो।
अपराध सिरफ अपराध हुवै,
बो मेरो हो चाए तेरो।।६६५।।

पण जे थोडो–सो गळत करम,
देतो व्है लाभ घणो मोटो।
करणो पड़ज्यावै कदे – कदे,
कूकरम जणा छोटो–मोटो।।६६६।।

सत्ता सुन्दरी स्वयंबर रो,
ओहिज यथार्थ है भोजराज।
हर धरम माँय ओ करम सभी,
करता आया है भाज–भाज।।६६७।।

है नहीं धरम हिन्दू मी ई,
क्रित स्यूँ जम्मा ई साफ परै।
कितणी रामायण – म्हाभारत,
म्हारली बात री साख भरै।।६६८।।

लोगाँ रै मुँह स्यूँ मेरै तो,
जो कुछ सुणणै में आवै है।
म्हाभारत रो तो कारण ही,
सत्ता–संघर्स बतावै है।।६६९।।

अल्ला जाणै आ बात कठै,
कितणी झूठी या साँची है।
बस सुणी–सुणाई कै'र्यो हूँ,
मैं के म्हामारत बाँची है ?।।७००।।

सत्ता रो मोह् हरकोई स्यूँ,
कोई भी पाप करा देवै।
रामायण रै सुग्रीव हाथ,
अग्रज बाली मरवा देवै।।७०१।।

ई राजनीत में कूटनीत,
हर जुग में चाली आई है।
जो हुवै चतुर जितणो चाटै,
उतणी हीं घणी मळाई है।।७०२।।

मैं खुद भी तो बळ कूटनीति,
फळ सत्ता-सुख रो पार्यो हूँ।
सारी जगती में देख आज,
दिल्ली सुलतान कुहार्यो हूँ।।७०३।।

पण तूँ हमीर स्यूँ दगो कर'र,
कुण सो मार्यो है तीर बता ?
कुण सी गद्दी हथियाली ओ,
अपराध कर'र गंभीर बता ?।।७०४।।

कर करम विभीसण जिसड़ो ओ,
दुसमण नैं भेद बताणै रो।
तूँ उल्टो लियो कलंक लगा,
घर की लंका खुद ढाणै रो।।७०५।।

ई स्यूँ पै'ल्याँ कै ओ खिलजी,
पाछो अपणी पर आज्यावै।
क्रोध मेरो बण काळ तेरी,
जिंदगानी पर मॅंडराज्यावै।।७०६।।

अब चलदे तूँ दरबार छोड,
ई मैं हीं तेरि भलाई है।
अर खबरदार जे फेर कदे,
जीवण में पड्यो दिखाई है।।७०७।।

निज भूल रो अहसास ताऊ ज्ञान जाग्या हीं हुवै।
अर च्यानणो मिनख रै चोटी माँय लाग्या हीं हुवै।।
वो भोज पछतायो घणो जद निज कर्‌योड़ै करम पर।
पण भाजगी ही भैंस जद तक तो समूचो खेत चर।।७०८।।

खिलजी री रणतभँवर पर चढाई

संदेस अलूगखाँन रो पा,
खिलजी किरोध स्यूँ लाल हुयो।
नुसरतखाँ रण में हुयो खेत,
आ जाण'र घणो मलाल हुयो।।७०९।।

साही सेना पीछै हटगी,
ओ समाचार सुणताँई बो।
हम्मीर हाथ यूँ मात खाय,
तिलमिला उठ्यो मन माँई बो।।७१०।।

अपमान भरी आ हार नहीं,
बरदास कर सक्यो जद,खिलजी।
झुंझळाय चल पड्यो ले सेना,
झट रणतभँवर गढ तद,खिलजी।।७११।।

वो समझ गयो खुद गयाँ बिनाँ,
ओ काम पार नीं पड़णो है।
रणथंभ जीतणै रो मतलब,
जा जंग मौत स्यूँ करणो है।।७१२।।

आ सोच–सोच सुलतान जणा,
थोड़ो–थोड़ो घबरार्‌यो हो।
पण सहजाँ ई दुसमण सामीं,
झुकणो भी कोनीं चार्‌यो हो।।७१३।।

ई ताँई आखिर में सोची,
घबरायाँ काम चलै कोनी।
जो होगी सो देखी जागी,
होणी तो कदे टळै कोनी।।७१४।।

बाम्बी में हाथ दियो है तो,
अब नागराज स्यूँ के डरणो ?
है हाथ खुदा रै ही अब तो,
मेरो सारो जीणो–मरणो।।७१५।।

खिलजी सेना जद चाली तो,
बादळ बण धूळ उडण लागी।
साही लसकर नैं निरखंती,
गळियाँ में भीड़ जुड़ण लागी।।७१६।।

गढ रणतभँवर जीतण चाल्या,
भेळा हो जद्द जवन सारा।
नभ मंडळ माँहीं गरज उठ्या,
'अल्लाहो अकबर' रा नारा।।७१७।।

घोड़ा दौड़या गज चिंघाड़्या,
नौबत -- नग्गारा बजण लग्या।
लाखाँ ई में पैदल सैनिक,
सेना रै सागै भजण लग्या।।७१८।।

दिन–रात बिना विसराम लियाँ,
जद बढ़्याँ गई साही सेना।
कुछ दिन में ई चलती–चलती,
बा पूग गई झांई सेना।।७१९।।

झांई में मिल अलूगखाँ स्यूँ,
खिलजी रणनीत करी त्यारी।
गढ रणतभँवर नैं जीतण रो,
मंसूबो बणा लियो भारी।।७२०।।

फिर सगळी सेना लेय संग,
चल दीन्यों पूरी त्यारी कर।
अर जाय'र डेरो जमा दियो,
रण नामक अेक पहाडी पर।।७२१।।

सामीं हीं ठीक पहाडी स्यूं
दिखर्‌यो हो रणतभँवर किल्लो।
बो तीन कोस घेरै हाळो,
छूतो असमान जबर किल्लो।।७२२।।

ही सँमदर तळ स्यूं ई गढ री,
पन्द्रा–सौ फुट री ऊँचाई।
अर च्यारूँमेर दिवारॉ रै,
ही बणी घणी गैरी खाई।।७२३।।

ई ऊँचै रणतभँवर गढ नैं,
मजबूती देर्‌या हा मिलकर।
लंबा – चोड़ा – ऊँडा विसाल,
पाणी स्यूं पॉच भर्‌या सरवर।।७२४।।

दुर्गम – अजेय ई गढ नैं लख,
खिलजी री ऑख्यॉ पथरा'गी।
काळजियो कॉपण लाग्यो अर,
मन में मुरदानी–सी छा'गी।।७२५।।

जद जाय हरम में बिना काम,
पीय'र दारूड़ी सोग्यो बो।
अर नींदडली री गोद मॉय,
मीठै सुपनॉ में खोग्यो बो।।७२६।।

पण मन पंछीड़ो जल्दी ही,
बॉ सुपनॉ स्यूँ उकलाण लग्यो।
उडकै जा पूग्यो रणतभँवर,
हम्मीर संग बतळाण लग्यो।।७२७।।

हम्मीर राव ! मत खाय ताव,
करड़ो सुभाव दिल्ली पतिसाह्।
मान'ज्या सट्ट ! अब छोड हट्ट,
लोटाय झट्ट दे मोमदस्या।।७२८।।

सुण जवनराज ! मत घणो गाज,
खोळी में रह दिल्ली पतिसाह्!
सिर जाय कट्ट छोड़ूँ न हट्ट,
हम्मीर न देणो मोमदस्या।।७२६।।

हम्मीर! अकड़ मत जिद्द पकड़,
मोमदस्या साही बागी है।
मेरै बागी रै लिए प्रीत,
इतणी मन में क्यूँ जा'गी है?।।७३०।।

सुल्तान ! थारलो बागी बो,
आ गयो सरण अब मेरी है।
रणथंम आय बीं नैं छुडाय,
लेज्या जे हिम्मत तेरी है।।७३१।।

हम्मीर रंक ! होय'र निसंक,
मत समझ वंक खुद नैं मोटो।
आ मताँ भूल दयूँ मिला धूळ,
मैं खार खायड़ो हूँ खोटो।।७३२।।

खिलजी ! गरजै वै कद वरसै,
तज वाण–कुवाण निगोडी आ।
भय वता मौत रो कद खायो,
रजपूती आण अड़योड़ी आ।।७३३।।

हम्मीर ! लाय ओपरी मॉय,
क्यूँ अपणा हाथ जळावै है ?
क्यूँ अेक भगोड़ै खातिर यूँ,
जिंदगानीं दाव लगावै है ?।।७३४।।

खिलजी ! इक सॉचो राजपूत,
जद वचनॉं में वॅध ज्यावै है।
अपणा'र पराया नीं देखै,
बचनाँ पर ज्यान लुटावै है।।७३५।।

हम्मीर ! छोड़ दे मोमदस्या,
मत राखै चोर परायो यूँ।
वदळै में चाए माल–मुलक,
धाप'र लेले मन चायो तूँ।।७३६।।

तूँ राग अेक ही निज मुँह स्यूँ,
मत बारम्बार रटै खिलजी।
दिल्ली देणी करदे तो भी,
ओ सौदो नहीं पटै, खिलजी।।७३७।।

हम्मीर ! जोस में खोय होस,
मत बाँधै झूठी पाळ इयाँ।
करकै ठाडाँ स्यूँ ठसक बोल,
क्यूँ न्यूँत र'यो है काळ इयाँ।।७३८।।

गढ रणत भँवर री घाटी री,
माटी रो चंदण सीस चढा।
जो मिलै मौत स्यूँ नित्त गळै,
कद काळ सकै हौंसलो डिगा।।७३९।।

हम्मीर ! छोड ओ झोड़ मान,
दिल्ली स्यूँ नातो तोड़ मताँ।
झूठी 'मरोड़' में तण्यो खड्यो,
मूंछ्याँ नैं घणी मरोड़ मताँ।।७४०।।

खिलजी ! मरोड़ निज देय छोड़
म्हे बीं माई का लाल नहीं।
चाए जो होज्या लौटाऊँ,
सरणागत नैं हर हाल नहीं।।७४१।।

हूँ सहन्साह दिल्ली पतिस्याह,
जे अपणी पर आज्याऊँ मैं।
कर तनैं पस्त मैं करूँ ध्वस्त,
गढ रणतमँवर जद चाऊँ मैं।।७४२।।

ऊँचो गढ़ रणतमँवर खिलजी !
खाला को बाड़ो थोड़ो है।
ईं स्यूँ दिल्ली सुलतान कई,
टकराय खोपड़ो फोड़यो है।।७४३।।

हम्मीर ! चला समसीर जंग,
रख दिया चीर मैं भट अनेक।
तूँ किसे खेत री मूळी है ?
बस है छोटो–सो राव अेक।।७४४।।

कुण कितणै पाणी में खिलजी !
ईं रण में बेरो पड़ ज्यासी।
तूँ ऊँट पहाड़ी रै नीचै,
आवण तो दे भ्रम कढ ज्यासी।।७४५।।

हम्मीर ! जुद्ध दिल्ली विरुद्ध !
क्यूँ नहीं मौत स्यूँ डर र्‌यो है ?
तूँ होय'र मछली बैर बता,
क्यूँ मगरमच्छ स्यूँ कर र्‌यो है ?७४६।।

आँ थोथी बाताँ में तेरी,
कोनी खिलजी ! कुछ तंत घणो।
आ सच्चाई जग जाहिर है,
थोथळो चणो बाजंत घणो।।७४७।।

जद मोमदस्या नैं पतो पड़्यो,
खुद खिलजी रण करणै ताँईं।
आग्यो है दिल्ली स्यूँ चला'र,
बो मारण अर मरणै ताँईं।।७४८।।

तो मौको चोखो देख वीर,
हम्मीर – कचेड़ी में आयो।
आदाब बजा हो गयो खड़्यो,
आँखड़ल्याँ पाणी भर ल्यायो।।७४६।।

हम्मीर क'यो– आ मोमदस्या !
के बात है'र क्यूँ आयो है ?
आँखड़ल्याँ नम क्यूँ हुई बोल !
कुण सो गम तनैं सतायो है ?७५०।।

जद बोल्यो बो– हे धीर–वीर,
सरणागत रच्छक महाराज !
थानैं विचार मेरै मन रा,
करणो चाऊँ हूँ अरज आज।।७५१।।

हे महाबळी ! अब ओ बिनास,
मेरै स्यूँ देख्यो नीं जावै।
गढ रणतभँवर हालात देख,
आँख्याँ में आँसूँ छळक्यावै।।७५२।।

इक मेरी 'ज्याँ' खातिर कितणी,
है गई ज्यान रणधीराँ री।
देखी नीं जावै मेरै स्यूँ,
अब और मौत आँ वीराँ री।।७५३।।

रणवीर बाँकुड़ा राजपूत,
हो र'या खेत मेरै ताँई।
अर, मैं बैठ्यो – बैठ्यो देखूँ,
घर में इक कायर री नाँईं।।७५४।।

अैयाँ कै जीणै स्यूँ तो है,
चोखो मेरो यूँ मरज्याणो।
लाणत है म्हैलाँ में बैठ्यो,
सुख स्यूँ मेरो पीणो – खाणो।।७५५।।

ई ताँईं थाँ स्यूँ बिन्ती है,
मन्नैं भी रण में जाबादयो।
आँ वीराँ सागै जंग माँय,
निज रण कौसळ दिखलाबादयो।।७५६।।

है कसम खुदा री रण मॉईं,
मैं जाय'र जंग मचाऊँगो।
जद तक मेरी ज्यॉ में ज्याँ है,
मैं पीठ नहीं दिखलाऊँगो।।७५७।।

मैं भी पठाण रो जायो हूँ,
मैं भी रण लड़णो चाऊँ हूँ।
अर वीर राजपूताँ सागै,
खिलजी स्यूँ भिड़णो चाऊँ हूँ।।७५८।।

हे महाराज हम्मीर देव !
थारै चरणाँ में सीस झुका।
थाँ स्यूँ रण जाणै री आज्ञा,
लेवण आयो है मोमदस्या।।७५९।।

जे नहीं इजाजत बखसोगा,
मैं सरण छोड़कै चल द्यूँगो।
खिलजी रै खेमैं में जाय'र,
खुद आत्म-समर्पण कर द्यूँगो।।७६०।।

ओ तो कोई इन्साफ नहीं,
सरणागत जुद्ध न करण सकै।
रणभौम मॉय लड़तो-लड़तो,
वीरॉ री ज्यूँ नीं मरण सकै।।७६१।।

है बात डूब मरज्याणै री,
मेरै तरकस में तीर नहीं।
होय'र पठाण रणभौम मांय,
मैं चला सकूं समशीर नहीं।।७६२।।

सरणागत होणै रो मतलब,
ओ नहीं'क मैं हूँ वीर नहीं।
पूरी खिलजी सेना मांई,
मुझसो कोई रणधीर नहीं।।७६३।।

आ नहीं बलाई है कोरी,
रजा करता खुदा री कैर्‌यो हूँ।
बस हुकम आप रो फरमान री,
मैं इन्तजार में रैर्‌यो हूँ।।७६४।।

फेरूँ मन में सोची आखिर,
सरणागत तो सरणागत है।
ई री सहायता लेऊँ तो,
हम्मीर – आण नैं लाणत है।।७६७।।

यूँ सोच विचार हुया बदळी,
अर झट सूत्योड़ो–सो जाग्यो।
जद पास बिठा मोमदस्या नैं,
धीरज स्यूँ समझावण लाग्यो।।७६८।।

के बात करै है मोमदस्या !
म्हे राजपूत हाँ मरज्यास्याँ।
निज बचनाँ तॉई इकबर तो,
म्हे महाकाळ स्यूँ भिड़ज्यास्याँ।।७६९।।

रजपूताँ रै रैकारै री,
गाळी होवै मोमदस्या सुण !
जद म्हे म्हारी पर आज्यावाँ,
तो म्हानैं रोक सकै है कुण ?।।७७०।।

तूँ पड़कै म्हारी चिंत्या में,
बेकार दूबळो मत होवै।
तू तो महलाँ में जाय'र सो,
घरहाळी बाटडली जोवै।।७७१।।

अब तो सवाल है मूंच्छ्याँ रो,
अब बात आण पर अड़गी है।
बाजी तो बाजी होवै है।
पड़गी तो भारी पड़गी है।।७७२।।

अब खबरदार ! जे बात करी,
तूँ छोड़ सरण यूँ जाणै री।
अब तेरी ज्यान गई है बण,
इज्जत चौहाण घराणै री।।७७३।।

खिलजी स्यूँ तेरी रिच्छ्या रो,
है प्रण हम्मीर हठिल्लै रो।
मत भूल कि तूँ सरणागत है,
गढ रणतभँवर रै किल्लै रो।।७७४।।

द्रिढ होय जीवण मूल्य जींरा काळ स्यूँ भी नीं डरै।
होवै है पत्थर री लकीर जुबान देकै न टरै।।
चौहाण कुळ रै माँय तोड़ी आण कोई वीर कद ?
तज देय सरणागत्त कैयाँ वो हठी हम्मीर जद ? ७७५।।

तीसरो जुद्ध

ऊँचै परकोटै खड्यो–खड्यो,
हम्मीर निजर दौड़ार्‌यो हो।
नीचै खिलजी रण जीतण री,
अपणी कुछ जुगत भिड़ार्‌यो हो।।७७६।।

बैयाँ तो ई रण चौपड रा,
दोनूँ ई चतुर खिलाड़ी हा।
पण राजपूत जद ताणी तो,
जवनाॅ पर पड़र्‌या भारी हा।।७७७।।

पण जुद्ध तीसरो ओ थोड़ो,
ज्यादा न्यारो – निरवाळो हो।
ई रण में सुलतानें दिल्ली,
खुद आकै मांड्यो पाळो हो।।७७८।।

बॉ दिनाॅ नाम खिलजी स्यूँ सब,
जोधा थर्राया करता हा।
रणधीर कई चोखा–चोखा,
भय बीं स्यूँ खाया करता हा।।७७६।।

बो सुलतानें दिल्ली खिलजी,
गढ रणतभँवर चढ आयो हो।
तो भी मन माँहीं रत्ती भर,
हम्मीर नहीं घबरायो हो।।७८०।।

उल्टो गढ रै कंगूराँ पर,
झंडा सूप[1]रा टँगाय'र बो।
'हम्मीर–हेकड़ी' रो पळको,
बीं नैं मान्यों दिखळाय'र बो।।७८१।।

गढ़ पर लटकंता सूप धज्ज,
सीधो अहसास करार्‌या हा।
खिलजी रै डर स्यूँ तिल भर भी,
रजपूत नहीं भय खार्‌या हा।।७८२।।

के निडर मिनख स्यूँ अबकाळै,
पाळो पड़ियो है या अल्लाह् !
खीजंतो–सो मन हीं मन में,
आ सोच मलीन हुयो पतिसाह्।।७८३।।

ई हेकड़ स्यूँ दुसमणी ठान,
के हासिल कर लेसी, खिलजी।
ओ लड़तो–लड़तो मर ज्यासी,
या तनैं मार देसी, खिलजी।।७८४।।

1-छाजला

ई स्यूँ चोखो है जियॉ–तियाँ,
ई नैं अब मीत बणायो जा।
ई हठी मिनख नैं उकसाकै,
हर कीमत पर ललचायो जा।।७८५।।

आ ठान जणा मन मॉय झट्ट,
मोल्हणदे नैं बुलवायो बो।
बीं नैं सब भाव बता मन रा,
हम्मीर कनैं भिजवायो बो।।७८६।।

बो मोल्हण भाट बादस्या रै,
मुॅंह लाग्योड़ो इक पायक हो।
अपणै स्वामी रो साँचै मन,
बिसवासपात्र हो, लायक हो।।७८७।।

रणथंभ आयकै मोल्हण जद,
हम्मीर देव स्यूॅं बतळायो।
मकसद निज आणै रो बीं नैं,
बिसतार सहित सौ समझायो।।७८८।।

बोल्यो– राजन ! मैं मोल्हणदे,
आयो हूँ खिलजी दूत बण'र।
मेरै स्वामी री आज्ञा स्यूॅं,
आयो हूॅं मैं रणथंभ चल'र।।७८९।।

सुलतान अलाउद्दीन निरो,
गुण और गुणी रो ग्राही है।
बीं नैं दिल री गहराई तक,
दुसमणी थारली भायी है।।७६०।।

बो है पक्को जौहरी खास,
हीरै री कीमत जाणै है।
स्वामी मेरो चोखै – न्याऊ,
माणस नैं खूब पिछाणै है।।७६१।।

जद ही तो बो थारै ऊपर,
होर्‌यो है खुस बेहद्द आज।
सायद कुछ ज्यादा ई आग्यो,
बीं नैं पसंद थारो मिजाज।।७६२।।

हो फिदा वीरता पर थारी,
थारै स्यूँ हाथ मिलाणै री।
इंच्छ्या राखै है निज मन में,
मिंतरता आज बढाणै री।।७६३।।

ई रै बदळे थे जो चावो,
बो सब देवण नैं राजी है।
आगै अब सारी की सारी,
थारै हाथाँ में बाजी है।।७६४।।

ई विसय माँय थोड़ो–बो'ळो,
मै समझ जठै तक पार्‌यो हूँ ।
निज मति अनुसार राय अपणी,
विन लाग - लपेट बतार्‌यो हूँ।।७६५।।

खिलजी रो ओ प्रस्ताव बियॉ,
जम्मॉ ई पोचो तो कोनीं।
आगै जाय'र भी बैयॉ ओ
घाटै रो सोदो तो कोनी।।७६६।।

यो आज सरजमीं पर अपणी,
इक हस्ती जानी – मानी है।
इक दिन होवण हाळो पूरै,
हिन्दूसथान रो स्वामी है।।७६७।।

ई ताई बीं स्यूँ मेळजोळ,
हर भॉत सदाँ हितकारी है।
बो खुद चला'र आ चार्‌यो है,
आ बात और भी भारी है।।७६८।।

मेरी मानो तो थे भी अब,
ई जिद पर ज्यादा अडो मतॉ।
बीं मोमदस्या अर खिलजी रै,
झगडै में झूठा पडो मतॉ।।७६६।।

लोगाँ रै झगड़ै में पड़कै,
क्यूँ निज रो चैन गँवार्‌या हो।
अपणी ई हठ रो इसड़ो भी,
के मोटो लाभ कमार्‌या हो।।८००।।

अब छोडो सब अर खिलजी स्यूँ,
मिलकै जीवण भर मोज करो।
बरसंती साही किरपा रो,
ई गढ में बैठ्‌या भोग करो।।८०१।।

बीं मोमदस्या रै बदळै में,
जे हुवै 'माँग' कोई थारी।
ल्यो माँग बेधड़क दिल्ली स्यूँ ,
डटकै भारी स्यूँ भी भारी।।८०२।।

अर मेरै स्वामी सागै जे,
मन हुवै मानतो थारो तो।
जल्दी स्यूँ अब्ब बणा ही ल्यो,
रिस्तो भी कोई प्यारो–सो।।८०३।।

रुकज्या मोल्हणदे ! खबरदार
जे आगै कुछ भी बोल्यो तो।
जुब्बान खींचली जावैली,
जे अब तूँ मुंडो खोल्यो तो।।८०४।।

कर बंद थारली भाटगिरी,
अर दूत – धरम री हद में रै।
कहलाय'र जो भेज्यो खिलजी
तूँ मुख स्यूँ बस उतणो हीं कै।।८०५।।

बण रायचंद मन में ज्यादा,
यूँ मन चायो मत भॉख अठै।
रणथंम धणी स्यूँ बतळातो,
अपणी वाणी नैं जॉच अठै।।८०६।।

नुकसाण – नफो कद राजपूत,
सोचै है जिद पर आयोड़ो।
कद झुकै आण पर अड्यॉ फेर,
कोई रजपूतण जायोड़ो।।८०७।।

बैयॉं भी मन्नै तो तेरो,
लाग्यो सारो ही सोच गळत।
इक सॉप नेवलै रै मॉंई,
कद निभी दोसती आज तलक।।८०८।।

फेरूँ भी खिलजी मेरै पर,
होर्‌यो है इतणो म्हैरबान।
तो बणै धरम है मेरो भी,
चाहत पर बीं री धरूँ ध्यान।।८०९।।

बो ऑख मीच मेरै पर जद,
इतणो बिसवास जतार्‌यो है।
अर बिनॉ सरत कोई मन्नैं,
जो मागूँ देणो चार्‌यो है।।८१०।।

जद मै भी इसडै दाता स्यूँ,
कुछ भी पाणै स्यूँ क्यूँ चूकूँ ?
घर बैठ्‌यॉ गंगा आ'गी है,
तो अब न्हाणै स्यूँ क्यूँ चूकूँ ? ८११।।

तूँ जा अर खिलजी नैं कै'दे,
ऑ रुळ बातॉ मे कस कोनी।
हम्मीर कदे भी निज पथ स्यूँ,
होवणियों टस स्यूँ मस कोनीं।।८१२।।

अर जे बीनैं सचमुच ही आ,
दातारी फोड़ा घालै है।
मेरै पर किरपा करणै री,
ज्यादा मरोड़ ई चालै है।।८१३।।

जद मै चाऊँगो खिलजी अब,
मेरै स्यूँ दो–दो हाथ करै।
बो जुद्ध करण नै आयो है,
तो सिरफ जुद्ध री वात करै।।८१४।।

या पूँछ दवाकै भाग पडै,
पाछो अव दिल्ली कानी वो।
पण दूत भेज नित अठै नही,
अपमान करै सुलतानीं रो।।८१५।।

तूँ सोच होवणो है के अै,
संधी – सदेस भिजाणै स्यूँ।
यूँ रोज–रोज ओ 'रोज' रोय,
रणथंभ दूत पूगाणै स्यूँ।।८१६।।

अब तो मॅडग्यो ओ जंग जिको,
होय'र रै'सी टळणो कोनी।
ई रो परिणाम सुनिसचित है,
या मैं कोनीं या वो कोनीं।।८१७।।

आ यात जाणतॉ सेती भी,
मैं चाऊँ हूँ वस अेक बार।
मेरी आमी – सामीं भिडत,
होज्यावै खिलजी स्यूँ जमार।।८१८।।

बस मोल्हणदे ! मेरी तो आ,
इतणी–सी ही अभिलासा है।
जो नक्की पूरी होवैली,
मन्नैं खिलजी स्यूँ आसा है।।८१६।।

आखिर मैं भी तो देखूँ बो,
खिलजी कितणै पाणी में है।
तूँ बयाँ करी है अभी – अभी
दम कितणो बीं क्हॉणी में है।।८२०।।

हम्मीर देव रो ओ उत्तर,
खिलजी रै आयो दाय नहीं।
बीं महाहठी रै आगै पण,
चाल्यो कोई भी दाव नहीं।।८२१।।

जद बो अपणी सारी सेना,
रण छेत्र मॉंय फैला'दी ही।
अर रणतभॅंवर गढ री ऊॅंची,
दीवारॉं स्यूँ टकरा'दी ही।।८२२।।

ही बॉं दीवारॉं सटी बठै,
लंबी–चौड़ी–ऊॅंडी खाई।
बढती – बढती साही सेना,
बीं खाई मॉंय उतर आई।।८२३।।

आ ही तो चावै हो हमीर,
कद सेना खाई तक आवै।
तो चाणचुकै ही ऊपर स्यूँ,
रिच्छ्या रण सरू कर्‌यो जावै।।८२४।।

जद देख लियो अब मौको है,
दुसमण फँसग्यो है चक्कर में।
मुळकंतै मन हम्मीर देव,
ली बणा योजना पळ भर में।।८२५।।

अर जद आदेस कर्‌यो जारी,
रिच्छ्या रण सरू कर्‌यो जावै।
गढ रो कंगूरो – कंगूरो,
सैनिक दळ भेज भर्‌यो जावै।।८२६।।

सैनिक तो पैल्याँ स्यूँ ई हा,
रण करणै सगळा खड़्या त्यार।
बैरी मारण रो चाव लियाँ,
करर्‌या हा कद स्यूँ इन्तजार।।८२७।।

संभाळंता प्रक्षेपणास्त्र,
अर करकै धनुस – बाण धारण।
परकोटै रै कंगूराँ पर,
चढग्या झट दुसमण नैं मारण।।८२८।।

जद अेक साथ ही चल्या बाण,
प्रक्षेपणास्त्र छूट्‌या प्रचंड।
फैंकण लाग्या राब उठा–उठा,
भारी–भारी रा शिला खंड।।८२९।।

भट्टी पर चढी कडायाँ स्यूँ,
कुछ लेय उबळतो तेल जणा।
ऊँचै गढ रै कंगूरॉ स्यूँ,
जवनॉ पर दियो उडेळ जणा।।८३०।।

तो हा–हाकार मचण लागी,
खिलजी री सेना रै मॉहीं।
ई जोरदार हमलै स्यूँ जद
चौ–तरफ मची त्राही–त्राही।।८३१।।

हज्जारूँ जोधा झुळस–झुळस,
यूँ गरम तेल स्यूँ खेत हुया।
हज्जारूँ सिला – खंड नीचै,
दबग्या अर मटियामेट हुया।।८३२।।

हज्जारूँ तीर चल्या सागै,
हज्जारॉ रा लेगया प्राण।
कुछ बच्या खुच्या घायल जोधा,
भाग्या पाछा ले बचा ज्यान।।८३३।।

ई जोरदार टक्कर स्यूँ तद,
खिलजी निज सेना सँग हटकै।
ओजूँ स्यूँ हमलो करणै री,
झट त्यारी करण लग्यो डटकै।।८३४।।

कुछ दिन तॉई रण बंद र'यो,
जद गरमीं री रुत आण लगी।
आमॉ पर मींजर फूट पड़ी,
काळी कोयल कूंकाण लगी।।८३५।।

'लू' चालण लागी रात'र दिन,
तपती चट्टाणॉं भभक उठी।
अर सारी की सारी घाट्यॉ,
भीसण गरमीं में धधक उठी।।८३६।।

सुळगंतै सूरज री किरणॉ,
अंगार लगी बरसाण जणा।
रणथंभ तळहटी मॉंय बस्यो,
हर जीव लग्यो घबराण जणा।।८३७।।

साही सेना री झुळस गई,
तपती दोपैरी में काया।
मरहम-पट्टी रो काम कर्यो,
तद बिरछॉं री सीतळ छाया।।८३८।।

ओ गढ न जीत्यो जाय सोच'र जवन घबराणै लग्या।
रण जीत जद रजपूत निज मन मॉय हरखाणै लग्या।।
रणथंभनाथ हमीर नैं जद जंग स्यूं फुरसत मिली।
मन मॉय जद इंच्छ्या धणी रै हित मनोरंजन जगी।।८३९।।

नरतकी धारादे री कथा

हम्मीर भारती संस्क्रती'र,
साहित्य, कळा रो हामीं हो।
सामिल बीं रै नवरतनाँ में,
कविवर बिजयादित नामीं हो।।८४०।।

जिन्दादिल माणस, अति–उदार,
मालिक ऊजळै चरित रो हो।
बो घणो पारखी अर प्रेमी,
मैफिल संगीत–निरत रो हो।।८४१।।

खिलजी नै रण मॉई खदेड़,
जद राजपूत फुरसत पाई।
उत्साहित मन हम्मीर जणा,
भारी इक मैफिल जुड़वाई।।८४२।।

ई मैफिल में मोमदस्या भी,
आयो हो केहब्रू सागै।
अर, बीरमदे भी बैठ्यो हो,
म्हामंत्री रणमल रै आगै।।८४३।।

जाजो, सेनापति रतीपाल,
कवि बिजयादित परमार सभी।
आया हा ई मैफिल मॉई,
जद गढ रा ओ'दैदार सभी।।८४४।।

कुछ खास घणाँ मानीता–जण,
हा सभा मॉय बुलवायोडा।
साहूकाराँ – सेठाँ नैं भी,
हा आदर सहित बिठायोडा।।८४५।।

ओ जळसो जुद्ध विजय रो हो,
अवसर हो खुसियाँ जोवण रो।
सब किलै वासियाँ नैं ई में,
न्यूँतो हो सामिल होवण रो।।८४६।।

जद तपती दोपारी बीती,
अंबर में सूरज ढळण लग्यो।
तो गढ रै लोग–लुगायाँ स्यूँ,
मैदान खचाखच भरण लग्यो।।८४७।।

ई जसन मॉय नैं निरत करण,
धारादे गई बुलाई ही।
जद नाच देखणै धारा रो,
वा भारी भीड़ जुड़याई ही।।८४८।।

रण मे जूझ्योडा लोगवाग,
ओ मौको पाय मनोरंजन।
झपदेई भेळा होग्या हा,
कुछ करण आपरो हळको मन।।८४६।।

बा राज – नरतकी धारादे,
ही निरत करण में निपुण घणी।
बी नैं जद निरत करण तॉई,
दीन्हीं आज्ञा रणथंम धणी।।८५०।।

झट साजिन्दा कस लिया साज,
ढोलक – मिरदंग बजण लागी।
सारंगी छेडी तान मधुर,
धारादे निरत करण लागी।।८५१।।

जद लटका–झटका करती बा,
पंडाल मॉय गजबण नाची।
तो झूम उठ्या दरसक सारा,
अर ताळ्यॉ पर ताळी बाजी।।८५२।।

बळ खाती घूमर घाल–घाल,
धारादे निरत दिखाण लगी।
लुळती कम्मर नैं निरख–निरख,
अपछरा इन्द्र सरमाण लगी।।८५३।।

यूँ निरत करंती धारादे,
तद मंच छोड आगै बढगी।
अर चमकंती बिजळी–सी झट,
गढ रै परकोटाँ जा चढगी।।८५४।।

जीं जगॉ चढी परकोटै पर,
धारादे नाच दिखा'री ही।
साही लसकर स्यूँ खिलजी नैं,
तद साफ निजर बा आ'री ही।।८५५।।

जद बीं नाचती नरतकी री,
छम–छम–छम छमकंती पायल।
खेमैं में बैठे खिलजी रै,
हीए नैं करगी ही घायल।।८५६।।

कुछ · जाणबूझकै धारादे,
खिलजी नैं नाच दिखा'री ही।
निज हाव–भाव स्यूँ मुळक–मुळक,
दिल्ली सुलतान रिझा'री ही।।८५७।।

जद अस्त होंवतै सूरज री,
धारा रै तन पर पड़ी किरण।
ओ दिरस देखकै खिलजी रो,
हो गयो काळजो झरण–झरण।।८५८।।

केसरिया–काया, चंद्रमुखी,
चंचल–चितवन अंदाज–अजब।
धारा रो रूप निरख खिलजी,
मुँह स्यूं निकळ्यो अल्लाह गजब।।८५६।।

है नार धरा री आ कोई,
या परी सुरग स्यूँ उतरी है।
या खुदा ! हकीकत भी है आ,
या कोई सुपन सुन्दरी है।।८६०।।

मन भमर हुयो मोहित जद यूँ,
बी कळी नाचती–खिलती पर।
निजरॉं हीं निजरॉं मॉय दियो,
झट प्रणय इसारो खिलजी कर।।८६१।।

तद जाणै बीं मनमोजण रै,
के मन में आई चाणचुकै।
जा चढी फुदकती कंगूरॉं,
नाचंती जुल[illegible] [illegible]।।८६[illegible]

अर निजर मिलाकै खिलजी स्यूँ,
अपणा नितंब मटकाण लगी।
लहँगै री लावण नचा–नचा,
गोरी पींडळ्याँ दिखाण लगी।।८६३।।

झैरीळी काळी नागण–सी,
भर क्रोध माँय फुँफकाण लगी।
अर वार–वार पग री ओडी,
खिलजी नैं इयाँ दिखाण लगी।।८६४।।

जाणै वा कै'ती होवै मैं,
इसड़ा आसिक मसतान कई।
ओडी रै नीचै राख्या है,
तुझ-सा दिल्ली सुलतान कई।।८६५।।

अपमान नाच में खुद रो नीं,
बरदास कर सक्यो जद,खिलजी।
गुस्सै में भर पूछ्यो अपणै,
सेना नायक नैं तद, खिलजी।।८६६।।

के साही सेना में कोई,
ऐसो है तीरन्दाज वीर ?
नरतकी नाचती ईं नैं जो,
दै छेद अठै स्यूँ मार तीर।।८६७।।

निज अेडी दिखा–दिखा मेरो,
अपमान कर्‌यो है वा अनंत।
नादान नरतकी होय'र आ,
सुलतानें दिल्ली पर हँसंत ? ८६८ ।।

सेनापति बोल्यो– जहाँपनाह!
अैसो तो तीरन्दाज अेक।
साही बंदीग्रह में कैदी,
है उड़डणसिंह ही आज अेक।।८६६।।

बो ईं नाचती नरतकी नैं,
पळ भर में मार गिरा देसी।
मरणो हीं पड़सी बीं नैं जद,
उड़डणसिंह तीर चला देसी।।८७०।।

कर कैद मुक्त उड़डणसिंह नैं,
जद पास बुलायो झट, खिलजी।
अर सरत सहित बीं नैं अपणो,
आदेस सुणायो झट, खिलजी।।८७१।।

बोल्यो– रै उड़डणसिंह ! कोई,
तूँ तेरी आज दिखाय कळा।
अर ईं नाचती नरतकी नैं,
दे मार गिरा निज तीर चला।।८७२।।

मैं सदॉ–सदाँ रै लिए तनैं,
जद मुक्त कैद स्यूँ कर देस्यूँ।
अर तेरै सिर पर ताज जणा,
सूबेदारी रो धर देस्यूँ।।८७३।।

आदेस मानकै खिलजी रो,
उड़डणसिंह मार्‌यो अेक तीर।
कंगूरॉ निरत करंती बीं,
धारा री छाती गयो चीर।।८७४।।

गिर पड़ी धरण पर धारादे,
म्रित होय'र जद बीं मैफिल में।
ईं चाणचुकै री घटना स्यूँ,
छागयो सोक हर इक दिल में।।८७५।।

ईं सरमनाक हमलै नैं नीं,
बरदास कर सक्यो मोमदस्या।
गुस्सै में धनुस उठा बोल्यो,
हम्मीरदेव रै सामीं जा।।८७६।।

म्हाराज! इजाजत बखसो अब,
थे मन्नैं तीर चलाणै री।
ईं धारा रै 'खूँ' रै बदळै,
खिलजी नैं मार गिराणै री।।८७७।।

मारैगो तीर पठाण जणा,
बो खिलजी बच नीं पावैगो।
ओ तीर म्हारलो खिलजी रा,
बण काळ प्राण ले ज्यावैगो।।८७८।।

जीं तरियाँ हमलो कर खिलजी,
निरदोस नरतकी मारी है।
ई मोमदस्या रै हाथाँ अब,
बीं रै [illegible] री मारी है।।८७९।।

खुद पहल करी है बो चला'र,
उत्तर तो देणो हीं पड़सी।
धारादेवी री हत्या रो,
बदळो तो लेणो हीं पडसी।।८८०।।

यूँ कहकै वीर अधीर हुयो,
मन में मंसूबो बणा लियो।
आज्ञा हम्मीर लिए बिन हीं,
झट तीर धनुस पर चढा लियो।।८८१।।

फिर साध निसाणो धनुस खींच,
मोमदस्या तीर चलाण लग्यो।
तो झट्ट हमीर बठै आकै,
मोमदस्या नैं समझाण लग्यो।।८८२।।

रुकज्या मोमदस्या ! मान क़'यो,
ओ काम नहीं जाथज तेरो।
मत भूल कि सुलतानें दिल्ली,
बस है सिकार खाली मेरो।।८८३।।

तूँ लक्ष्य भेद में निपुण निरो,
बळसाली–कुसळ धनुर्धर है।
योग्यता तेरली पर भी सुण !
सक नहीं मनैं रत्ती भर है।।८८४।।

मैं आ भी खूब समझर्‌यो हूँ,
जे तूँ ओ तीर चला देसी।
तो तीर थारलो नक्की ही,
खिलजी नैं मार गिरा देसी।।८८५।।

जद खिलजी ही मरज्यासी तो,
मैं किण स्यूँ बोल लडूँलो तद।
सौ मजो किरकरो होज्यालो,
मैं किण स्यूँ जुद्ध करूँलो जद।।८८६।।

तूँ धनुस चढा ही लियो जणा,
बीं उड्डणसिंह री छाती में।
दे मार खींचकै मोमदस्या !
बीं कायर दुस्ट'र पापी नैं।।८८७।।

हुक्कम हमीर रो मिलताँ ई,
मोमदस्या मार्यो अेक तीर।
जो उड्डणसिंह री छाती स्यूँ,
टकराय गयो पळ माँय चीर।।८८८।।

बीं कैदी उड्डणसिंह स्यूँ कुछ,
दूरी पर खिलजी बैठ्यो हो।
बो डर को मार्यो भाज जणा,
निज बेगम स्यूँ जा चेंठ्यो हो।।८८९।।

बा बेगम 'चिमना' घणी चतुर,
सुन्दर स्याणी अर लायक ही।
हर जुद्ध मॉय बा सदा र'यी,
खिलजी री खास सहायक ही।।८९०।।

ई घटनॉ पर कर मनन घणो,
बा बोली— आलमगीर आज।
बच गया आप पण मत समझो,
ई नैं अपणी तकदीर आप।।८९१।।

ओ तो बो मोमदस्याह कदे,
जो नमक थारलो खायो है।
बो नमक आज बण ढाल अठै,
मौकै पर आडो आयो है।।८९२।।

ई रो मतलब ओ कोर्नी थे,
संपूर्ण सुरच्छित हो अब भी।
बो दूजो तीर चलाय ज्यान,
ले सकै आपरी है कद भी।।८६३।।

ई ताँई मेरी मानो तो,
ओ जुद्ध आप अब बंद करो।
अर दिल्ली जाय'र आप जरा,
आराम बठै दिन चंद करो।।८६४।।

ओ जिद चढियोड़ो राजपूत,
सहजाँ काबू नीं आवैलो।
ओ साही सेना नैं जाणै,
कितणाँ दिन नाच नचावैलो।।८६५।।

कितणी सेना मरसी–खपसी,
अब और अठै ई गढ ताँई ?
रैसी सूनी सुलतान बिनाँ,
दिल्ली री गद्‌दी कद ताँई।।८६६।।

ऊँद्वीनैं दिल्ली स्यूँ भी कुछ,
समचार नहीं सुभ आर्‌या है।
अर गैर हाजरी में थारी,
सिर बोळा जणा उठार्‌या है।।८६७।।

खिलजी बोल्यो– सुण बेगम अै,
बाताँ सगळी सच है तेरी।
पण ई गढ नैं ढाणो अब तो,
होगी है मजबूरी मेरी।।८६८।।

तूँ सोच बिनाँ ओ गढ जीत्याँ,
मैं लौट अठै स्यूँ जाऊँलो।
कीं मुँह स्यूँ पद सुलतानी रो
रुतबो कायम रख पाऊँलो?।।८६६।।

जग कै'गो कुणसो तीर बडो,
रणथंभ जाय मैं मार्‌यायो।
दिल्ली पतिसाह् होय'र भी मैं,
इक राजपूत स्यूँ हार्‌यायो।।६००।।

आ हार मनैं इतिहास माँय,
इज्जत स्यूँ भी न मरण देगी।
कायर हार्‌योड़ा नाकाबिल,
सुलतानाँ माँय सरण देगी।।६०१।।

ईं खातिर मैं तो नहीं कठै,
जाणो अब बिन ओ गढ ढाए।
ईं रै बदळै बा दिल्ली भी,
हाथाँ स्यूँ जाय निकळ चाए।।६०२।।

सिर देय ऊँखळी में वेगम !
अब मूसळ स्यूँ के डरणो है ?
अब तो ओ जुध जीतण री जिद,
खिलजी नैं जीणो मरणो है।।६०३।।

बैयाँ ईं जुध नैं जल्दी ही,
मैं जीत तनैं दिखलाऊँलो।
बळ स्यूं नीं चाल्यो काम अगर,
तो छळ स्यूँ काम पटाऊँलो।।६०४।।

हाल तो म्हारली तरकस में,
है तीर कई नुगरा–पाजी।
बाँ नैं चला'र मैं कई बार,
जीती है हार्योड़ी बाजी।।६०५।।

तूँ देख लिए आ बाजी भी,
खिलजी ही इक दिन मारैलो।
सुलतान अलाउद्दीन कदै,
नाँ हार्यो है, नाँ हारैलो।।६०६।।

मैं ईं हम्मीर हठी नैं भी,
नक्की ही धूळ चटाऊँलो।
बीं री बेटी देवळदे स्यूँ,
तेरी चाकरी कराऊँलो।।६०७।।

लख लक्षभेद में निपुण जणा,
मोमदस्या री तीरंदाजी।
चौ–तरफाँ खिलजी खेमै में,
घणघोर उदासी–सी छागी।।६०८।।

ई घटना स्यूँ भयभीत जणा,
बो झट अपणा तंबू–डेरा।
उखड़ाय बठै स्यूँ बहुत घणा,
किल्लै स्यूँ दूर लगा गेर्‌या।।६०६।।

बो डेरो गयो उखाड़्यो जद,
तो दंग हुया रजपूत घणाँ।
देख'र करियोड़ी ल्हुक–छिपकै,
बीं दुसमण री करतूत जणाँ।।६१०।।

हद बीं डेरै स्यूँ सटी बठै,
घाटी इक ऊँडी–गै'री ही।
खिलजी बीं नैं लकड़्याँ स्यूँ अर,
माटी स्यूँ भरवा गेरी ही।।६११।।

यूँ सुप्रसिद्ध रिण–घाटी बा,
गैलो वणगी ही सागीड़ो।
रणथंम बुर्ज तक पूग सहज,
खिलजी ताँईं रणबाजी रो।।६१२।।

पण देवजोग स्यूँ उणी दिनाँ,
बरखा मँडगी बेमौसम की।
घमसाण मचाती गरज–गरज,
घाट्याँ पर बरस पड़ी जमकी ।।६१३।।

जद वगतो खाळो पाणी रो,
रिण री घाटी सामीं आयो।
अर खिलजी रै बाँध्योड़ै बीं,
माटी रै पुळ नैं जा ढायो।।६१४।।

यूँ अेक दिन में रात-दिन रो स्रम कर्‌योड़ो वह गयो।
वण मूक दरसक सिरफ खिलजी हाथ मळतो रह गयो।।
पण ढाल जद रिच्छ्या मिनख री खुद करै भगवान ही।
तो के बिगाड़ै सत्रु कोई चंट या वलवान भी।।६१५।।

चौथो जुद्ध

यूँ घणी बार घेरावंदी,
वीरत रा हमला करकै भी।
खिलजी नीं जीत सक्यो हो रण,
रै'ग्यो मन मोस, मचळकै ही।।६१६।।

गढ रणतभँवर जीतण नै बो,
सरद्‌याँ स्यूँ पै'ल्याँ आयो हो।
अर, रुत गरमी री आ'गी पण,
बो किलो जीत नीं पायो हो।।८१७।।

अर इणी बीच विद्रोह सरू,
कर दियो अवध में मंगूखाँ।
अर माँय बुदायूँ माच उठ्‌यो,
विद्रोह करण नैं उम्रूखाँ।।६१८।।

अै दोनूँ सगा भाणजा अर,
बिसवास–पात्र हा खिलजी रा।
पण मौको पायाँ हुया सगा,
सत्ता–स्वारथ में कुण? कींरा ? ६१६।।

दिल्ली में हाजीमोलो भी,
जमकै विद्रोह मचार्‌यो हो।
खिलजी री गैर हाजरी में,
मौकै रो लाभ उठार्‌यो हो।।६२०।।

अड़ीनैं साही सेना में,
सैनिक हज्जारूँ मरग्या हा।
अर बच्या–खुचाँ में स्यूँ भी कुछ,
रण छोड किनारो करग्या हा।।६२१।।

अै सगळी ही बातॉ बैयॉ,
खिलजी रै हक में पोची ही।
बो कई बार पाछो दिल्ली,
चल देणै री भी सोची ही।।६२२।।

पण बिन जीत्याँ गढ़ रणतभँवर,
खाली हाथाँ दिल्ली जाणो।
सुलतानें दिल्ली होय मात,
इक राजपूत स्यूँ यूँ खाणो।।६२३।।

अर यूँ दुसमण स्यूँ भय खाय'र,
रण माँय पलायण कर ज्याणो।
ई स्यूँ तो चोखो है मेरो,
लड़ताँ–लड़ताँ हीं मर ज्याणो।।६२४।।

यूँ सोच विचार हुयो बदळी,
मान्यों कोनीं मन हरजाई।
तद खिलजी दिल्ली स्यूँ ओजूँ,
इक भारी सेना मँगवाई।।६२५।।

गढ जीतण रो संकळप ले'र,
फिर नुवैं सिरै स्यूँ अेक बार।
लेय'र अल्ला रो नाम जणा,
जुध करणै ताँईं हुयो त्यार।।६२६।।

बा सेना रणतभँवर गढ पर,
आए दिन धावा कर्‌या घणा।
रण जीतण ताँईं रात'र दिन,
सैनिक पच–पचकै मर्‌या घणा।।६२७।।

फेरूँ भी बो फौलादी गढ,
सहजाँ ईं जीत्यो जातो कद ?
खुफिया बतळावण कर खिलजी,
सेनापति अलुगखाँन स्यूँ जद।।६२८।।

सेना उतरादी खाई में,
सुरंग बणावणै रै तॉंई।
बारूद लगाकै परकोटो,
गढ रो उडावणै रै तॉंई।।६२६।।

भर–भर थेल्याँ बारूद जणा,
किलमी सेना खाताई में।
कीड़ी नाळो–सी जाय घुसी,
सुरसा–सै मुँह् री खाई में।।६३०।।

गढ कंगूराँ स्यूँ राजपूत,
अंगार जणा बरसाण लग्या।
भर–भर'र कड़ायाँ गरम तेल,
पिघळ्योड़ी लाख गिराण लग्या।।६३१।।

जद आग लागगी चमड़ै री,
बारूद भर्‌योड़ी थेल्याँ में।
बळता–भुनता साही सैनिक,
भाग्या ले ज्यान हथेळ्याँ में।।६३२।।

ई भगदड़ में हज्जाराँ में,
खिलजी सेना मरगी–खपगी।
इक दूजै स्यूँ टकरावंती,
खातावळ में चिंथगी–दबगी।।६३३।।

फिर राजपूत तैयार हुया,
यूँ सामीं रण करणै तॉई।
गढ स्यूँ बा'रै आ दुसमण नैं,
मारणै और मरणै ताँई।।६३४।।

बाजी रणभेरी द्वारपाळ,
गढ रो दरवाजो खोल दियो।
हम्मीर हठी लेय'र सेना,
खिलजी पर धावो बोल दियो।।६३५।।

अर कै'ता हर–हर महादेव,
रणबीर बाँकुड़ा राजपूत।
भूखै नाहर–सा अेक साथ,
दुसमण ऊपर जा पड़्या टूट।।६३६।।

जयघोस बहादुर वीरॉ री,
भूमंडळ में गुंजण लागी।
ऊँह्वीनैं सेना खिलजी भी,
होकै तैयार लड़ण लागी।।६३७।।

सैनिक स्यूँ सैनिक भिड़ग्या अर,
हाथी स्यूँ हाथी टकराया।
तलवाराँ पर तलवार चली,
घोडाँ पर घोड़ा दौडाया।।६३८।।

अणगिण तलवारॉं अेक साथ,
रणभौम मॉय अैयॉं दमकी।
ज़ाणै तो दसूँ दिसावॉं में,
मिल अेक साथ बिजळी चिमकी।।६३६।।

चिंघाड़्या हाथी अर घोड़ा,
जाणै होवै गरज्या बादळ।
कितणॉं ई सैनिक खेत हुया,
अर कितणा ई होग्या घायल।।६४०।।

गाजर–मूळी ज्यूँ कट्या सीस,
धरती सौणित स्यूँ लाल हुई।
ल्हासॉं नरमुंडॉं री ढेरी,
पग-पग पर जद ततकाळ हुई।।६४१।।

हम्मीर आप रो धनुस उठा,
झट झड़ी लगादी बाणॉं री।
बो देणो चावै हो रण में,
आहूती खिलजी प्राणॉं री।।६४२।।

हुंकार मार सत्रू–दळ पर,
बो महाकाळ सो टूट पड़्यो।
जाणै बकर्‌यॉं रै रेवड़ पर,
भूखो नाहरियो कूद पड़्यो।।६४३।।

भर जोस वीर रणभूमी में,
अरि–दळ संघार कर्‌यो भारी।
यूँ दो दिन रै ईं जंग मॉय,
खिलजी री हार हुई भारी।।६४४।।

नव्वै हजार साही सेना,
आ गई काम यूँ छिण मॉंई।
घाटी ल्हासॉं स्यूँ सिड़ण लगी,
ई महा भयंकर रण मॉंई।।६४५।।

जद घायल हो सारा किलमी,
कुरळाण लग्या घाटी मॉई।
अर गिरज–कांवळा उड–उडकै,
तद आण लग्या घाटी मॉई।।६४६।।

ऑतडियॉ खींचण लग्या गिरज,
अर मॉस बिखरग्यो पगॉ–पगॉ।
ले भुजा खोपडी उडण लग्या,
जद चील–कॉवळा जगॉ–जगॉं।।६४७।।

यूँ दो दिन रै रण में घाटी,
समसाण निजर ऑवण लागी।
अर साफ–साफ खिलजी नैं फिर,
निज हार निजर ऑवण लागी।।६४८।।

"ताऊ" खिलजी री किसमत में,
जाणै के रोडो अडर्‌यो हो।
रण में खिलजी रो कोई भी,
पासो सीधो नीं पड़र्‌यो हो।।६४६।।

अैडी हालत हो'गी बीं री,
जाणै तो सॉप छछूंदर नैं।
पकड़्याँ पाछै नीं छोड सकै,
नीं निगळ सकै बो अन्दर नैं।।६५०।।

वैयाँ ई खिलजी रणतभँवर,
नीं जीत सकै नीं छोड़ सकै।
सुख छोड जगत रा जोगी–सो,
किल्लै नैं दिन अर रात तकै।।६५१।।

के करूं, नहीं के करूँ सोच,
हो गयो बावळो–सो, खिलजी।
अपणै मन में कुछ भी तय नीं,
कर सक्यो तावळो–सो, खिलजी।।६५२।।

अैयाँ ई निकळ्यॉ गयो बखत,
अंबर में बँदळी छाण लगी।
गरमीं रो मौसम बीत गयो,
अर रुत बरखा री आण लगी।।६५३।।

नाचण लाग्या मोरिया देख,
घणघोर घटा नभ–मंडळ में।
चातकड़े री मीठी पी–पी,
गूँजण लागी भू–मंडळ में।।६५४।।

अंवर में च्यारूँमेर घटा,
काळी–काळी गरजण लागी।
तपती धरती री छाती पर,
मूसळाधार वरसण लागी।।६५५।।

तपतै तन पर ठंडी – ठंडी,
जद टप–टप छाँट पड़ण लागी।
जडिए विरहण मन दरवाजै,
ठक–ठक–ठक ठाप पड़ण लागी।।६५६।।

अणचाणचुकै ई धरती रा,
सोंवतड़ा भाग जणाँ जाग्या।
उडता–बरसंता बादळिया,
आया–छाया रस बरसाग्या।।६५७।।

बादळ री घोर गरजणाँ स्यूँ,
सारी घाट्याँ गरजण लागी।
नभ मे बादळियाँ बीच छिपी,
बिजळी चम–चम चमकण लागी।।६५८।।

दुस्टाँ री प्रीत कदै जैयाँ,
थिर पळ भर नीं हो पावै है।
वैयाँ ई बिजळी छिण–छिण में,
निज पळ–पळाट दिखलावै है।।६५६।।

रिमझिम–रिमझिम बरस्यो पाणी,
नदियाँ उमड़ी ताळाब भर्‌या।
फूटी कूँपळ तो सूख्योडा,
सब ठूँठ होयग्या हर्‌या–भर्‌या।।६६०।।

कळ–कळ करतो तद वै'ण लग्यो,
पाणी सब नंदी–नाळाँ में।
अर जगाँ–जगाँ होग्यो भेळो,
घाट्‌याँ रै जोहड़–खाळाँ में।।६६१।।

ताळाब किनारै जद मेंडक,
यूँ टर्र–टर्र टर्राण लग्या।
जाणै गुरुकुळ में टाबरिया,
मिल वेद–पुराण सुणाण लग्या।।६६२।।

चमकण लाग्या जुगनूँ चम–चम,
अँधियारी काळी राताँ में।
सुणकै मन में रस आण लग्यो,
चकवै–चकवी री बाताँ में।।६६३।।

ठंडी पुरवाई चाली तो,
हर मन में मस्ती छाण लगी।
मुळकंती खिलती कळी–कळी,
मँडराता भँवर लुभाण लगी।।६६४।।

विरछां पर झूला पडग्या अर,
मिल कामणियाँ झूलण लागी।
तीज्याँ रा गाती गीतड़ला,
छोर्‌याँ बागाँ घूमण लागी।।६६५।।

मन मुदित हुया करसा सगळा,
खेताँ में हळियो हाकंता।
गायाँ सागै चाल्या गुवाळ,
बंसी री धुन पर नाचंता।।६६६।।

सब हर्‌या–भर्‌या होग्या डूँगर,
धरती पर छाई हरियाळी।
बन–बाग खिलंतै फूलाँ स्यूँ,
मै'कण लागी डाळी–डाळी।।६६७।।

ज्यूँ जोवण मद में चूर होय,
धण नुँवी नवेली घूम रयी।
वैयाँ ई हरी–भरी होय'र,
तरवर री डाळ्‌याँ लूम र'यी।।६६८।।

झर–झर झरता सारा झरणा,
मिल मीठी तान सुणाण लग्या।
तद मस्त–जीवड़ा लोग कई,
हो भेळा गोठ मनाण लग्या।।६६९।।

अर घोट–घोट पीवण लाग्या,
सब मिलकै भांग भॅंगेडी तब।
गांजै सुलफै री चिलम खींच,
होग्या मदमस्त नसेड़ी सब।।६७०।।

अर जाय'र बाग–बगीच्यॉं में,
सावण रा गीत सुणाण लग्या।
नाचंता – कूदंता सगळा,
ढप लेय'र कुरजॉं गाण लग्या।।६७१।।

हर अेक चप्पै में बिखेर्‌यो रंग आ बिरखा घणो
पण किलमियॉं नैं तो गई कर तंग आ बिरखा घणो।।
तद हो दुखी खिलजी लग्यो हो बाळ अपणॉं नौंचणै।
कर आँगळी टेढी जणा घी काढणै री सोचणै।।६७२।।

खिलजी रो संधि प्रस्ताव

मूसळधारा ई बरखा स्यूँ,
चौतरफॉ होग्यो जळ ही जळ।
धरती पर सगळी घाट्यॉ री,
छाती पर फैल गयो दळ–दळ।।६७३।।

कीचड़ कादै में फॅस्या जणा,
खिलजी सैनिक घबराण लग्या।
सीलण स्यूँ पैदा हो बॉनैं,
जद रात्यूँ माछर खाण लग्या।।६७४।।

रासण–पाणी होगयो बंद,
भूखा मरता कुरळाण लग्या।
अैयॉ होकै बै दुखी जणा,
सब छोड़ चाकरी जाण लग्या।।६७५।।

हाडॉ रा ढेर सिडण लाग्या,
साही लसकर रै आस–पास।
म्हामारी फैल गई सैनिक,
बण गया मौत रा कई गास।।६७६।।

साही सेना पर बरखा री,
यूँ रुत आई बण महाकाळ।
मन में कुटळाई भर खिलजी,
जद गूंथण लाग्यो नुँवो जाळ।।६७७।।

आ बात समझग्यो हो खिलजी,
रण करण खुदा भी आज्यावै।
बिन फूट पड्याँ रजपूताँ में,
ओ गढ कोनीं जीत्यो जावै।।६७८।।

ओ जुद्ध जीतणो है तो अब,
कोई तिकड़म करणी चाए।
कैयाँ भी ऑ रजपूताँ रै,
मन मॉय फूट पड़णी चाए।।६७९।।

हम्मीर देव री सेना री,
सबस्यूँ भारी मजबूत ढाल।
जो खिलजी नैं लागै ही बा,
हो सेना नायक रतीपाल।।६८०।।

आ ढाल टूट गिर ज्यावै तो,
गढ रणतभँवर जीत्यो जाणो।
ओ चिड़ो जाळ में फँस ज्यावै,
फैकू कोई इसडो दाणो।।६८१।।

हर जीव जगत में होवै है,
मन स्यूँ लोभी, तन स्यूँ भोगी।
ई रतीपाल री भी तो जद,
कोई कमजोरी तो होगी।।६८२।।

बीं कमजोरी नैं ढूँढण रो,
कोई गैलो काढ्यो जावै।
या खुदा ! जणा ई जाय'र ओ,
कुछ काम जरा बळ में आवै।।६८३।।

यूँ सोच'र जद हम्मीर कनैं,
संधी–संदेस भिजायो बो।
अर रतीपाल नैं निरणायक,
कुछ करणै बात बुलायो बो।।६८४।।

अठै आ खिलजी कर्‌यो ओक,
जद कूटनीत स्यूँ भर्‌यो वार।
बो करणो चावै हो अपणै,
ई ओक तीर स्यूँ दो सिकार।।६८५।।

आ खूब समझर्‌यो हो
जे रतीपाल
मंत्री–प्रधान रणमल
नाराज जणा हो

मंत्री–प्रधान कोई भी कद,
बरदास बात आ कर पावै।
बीं रै होतॉ मौजूद कठै,
सेनापति संधि करण जावै।।६८७।।

या खुदा ! म्हैर तेरी स्यूँ जे,
आ बात इयाँ बण ज्यावै तो।
ऑ रजपूतॉ में सहजाँ ई,
यूँ आपस में तण ज्यावै तो।।६८८।।

फेरूँ आ बात बणी समझो,
आ बाजी जीत'र छोडूँगो।
जे पासो सुलटो पड़ग्यो तो,
मैं रतीपाल नैं तोडूँगो।।६८६।।

खिलजी रो बो राजीनामो,
जद दूत सुणायो रणतभँवर।
हम्मीर जुड़ाई राजसभा,
अर बोल्यो सोच–विचार कर'र।।६६०।।

खिलजी रो ओ संधि प्रस्ताव,
मीठो है चाए खाटो है।
पण ईं नैं जे मानाँ भी तो,
इतणो ज्यादा के घाटो है ? ।।६६१।।

हर जीव जगत में होवै है,
मन स्यूँ लोभी, तन स्यूँ भोगी।
ई रतीपाल री भी तो जद,
कोई कमजोरी तो होगी।।६८२।।

बीं कमजोरी नैं ढूँढण रो,
कोई गैलो काड़्यो जावै।
या खुदा ! जणा ई जाय'र ओ
कुछ काम जरा बळ में आवै।।'

यूँ सोच'र जद हम्मीर
संधी–संदेस भिजायो
अर रतीपाल नैं निर
कुछ करणै बात बुलायो

आखिर बो हो मंत्री–प्रधान,
ओ हक तो पै'लो बीं रो हो।
पण बोल्यो कोनी चुप रै'यो,
बो माणस जरा सधीरो हो।।६६७।।

फैरूँ भी बात निरादर री,
आ चित रै मॉय जची कोनीं।
ओ पद गरिमा रो हो सुवाल,
ई तॉई बात पची कोनीं।।६६८।।

तद बोल पड़्यो– हे अनदाता !
मंत्री–प्रधान रै होताँ जे।
जावै सेनापति संधि करण,
तो है महत्व ई पद रो के ?।।६६६।।

यूँ कह जा महलॉ में सोग्यो,
नाराज हुयो मन हीं मन में।
यूँ इक छोटी सी चिणगारी,
सोळो बण भडक उठी तन में।।१०००।।

जद खिलजी रै खेमै मॉई,
पूँच्यो सेनापति रतीपाल।
खिलजी बीं री कर आवभगत,
आदर स्यूँ पूछ्यो हाल-चाल।।१००१।।

खिलजी धोरै अब कदाचित्त,
रतिपाल भिजायो ही जावै।
के राज छिप्यो ई राग माँय ?
ओ पतो लगायो ही जावै।।६६२।।

यूँ भलो–बुरो सौ सोच–समझ,
सब सरदाराँ स्यूँ बतळाकै।
अर रतीपाल नैं खास–खास,
संधी री सरताँ समझाकै।।६६३।।

हम्मीर पठायो रतीपाल,
खिलजी स्यूँ बात करण तॉई।
खिलजी रै मन में जो कुछ है,
बा सारी बात सुणण तॉई।।६६४।।

हम्मीर अठै ही चूक गयो,
अै फूट पड़ण रा चाँका है।
बो समझ सक्यो नीं कूटनीत,
होणी रा करतब बॉका है।।६६५।।

गरबीलै रणमल नैं भी ओ,
हम्मीरी निरणय नीं भायो।
सेनापति संधी करण गयो,
ओ कदम दाय कोनीं आयो।।६६६।।

आखिर बो हो मंत्री–प्रधान,
ओ हक तो पै'लो बीं रो हो।
पण बोल्यो कोनी चुप रै'यो,
बो माणस जरा सधीरो हो।।९९७।।

फैरूँ भी बात निरादर री,
आ चित रै मॉय जची कोनीं।
ओ पद गरिमा रो हो सुवाल,
ई तॉई बात पची कोनीं।।९९८।।

तद बोल पड़्यो– हे अनदाता !
मंत्री–प्रधान रै होताँ जे।
जावै सेनापति संधि करण,
तो है महत्व ई पद रो के ?।।९९९।।

यूँ कह जा महलॉ में सोग्यो,
नाराज हुयो मन हीं मन में।
यूँ इक छोटी सी चिणगारी,
सोळो बण भड़क उठी तन में।।१०००।।

जद खिलजी रै खेमै मॉई,
पूँच्यो सेनापति रतीपाल।
खिलज़ी बीं री कर आवभगत,
आदर स्यूँ पूछ्यो हाल-चाल।।१००१।।

खुद होय खड़्यो झट स्यूँ बीं नैं,
निज गळै लगायो जद, खिलजी।
अर रतीपाल स्यूँ घणै मान,
अपणेस जतायो तद,खिलजी।।१००२।।

उठ पलक पाँवड़ा बिछा दिया,
बो रतीपाल खातिर मॉई।
अर पास आप रै बिठा लियो,
बीं नैं निज भाई री नॉई।।१००३।।

सब दरबार्‌याँ नैं हुकम दियो,
खेमै स्यूँ बा'रै हो ज्यावो।
जद तक म्हे बैठ्या बात कराँ,
कोई नजदीक मताँ आवो।।१००४।।

अर रतीपाल नैं जद खिलजी,
देय'र लालच समझाण लग्यो।
पल्लो फैलाकै बीं सामीं,
निज व्यथा-कथा बतळाण लग्यो।।१००५।।

मैं जो कुछ कै'र्‌यो हूँ तन्नैं,
सुण ध्यान लगाकै रतीपाल।
सर रणतभॅवर करणो हो'ग्यो,
अब मेरी इज्जत रो सुवाल।।१००६।।

आ तो सोळाणॉ सच है मैं,
ओ किल्लो जीत नहीं पाऊँ।
पण बिन जीत्याँ ईं गढ नैं मैं,
दिल्ली के मुँह लेकै जाऊँ ? ।।१००७।।

जे मैं थोडा दिन ओर टिक्यो,
सैनिक मेरा मरज्याणा है।
ई गढ जीतण रो मतलब तो,
लो'वै रा चणा चबाणा है।।१००८।।

पीछे हट ज्याणै रो मतलब,
माटी में स्यान मिलाणी है।
अर आगै बढणै रै मानीं,
खुद अपणी मौत बुलाणी है।।१००९।।

मैं इनैं गिरूँ तो कूँवो है,
अर उनैं गिरूँ तो खाई है।
यूँ वीच-बिचाळै लटक्योडी,
मेरी ज्यॉ पर बण आई है।।१०१०।।

ई खातिर तनैं बुलायो है,
तूँ भलो मिनख है, स्याणो है।
किसमत स्यूँ तूँ आ गयो अठै,
अब काम सहज पटज्याणो है।।१०११।।

मैं ओ गढ़ जीत नहीं पायो,
मेरै आ बात खटक'री है।
अर मदद तेरली रै अभाव,
आ गाडी देख अटक'री है।।१०१२।।

जे तूँ स्हारो दे मन्नैं तो,
गाडी मेरी गुड ज्याणी है।
नी तो सुलतानें दिल्ली री,
इज्जत मिट्टी मिल ज्याणी है।।१०१३।।

ई विपदा में दे साथ मनैं,
तो न्हयाल तनैं कर दयूँगो मैं।
रणथंम ताज तेरै सिर धर,
दिल्ली कानीं टुर ल्यूँगो मैं।।१०१४।।

बण रणतभँवर रो म्हाराजा,
कर राज बेधडक सुख स्यूँ जी।
तेरी घरहाळी म्हाराणी,
बण ज्यासी बैठ्यो दारू पी।।१०१५।।

तूँ राज करण रै जोगो है,
जे राजा बणणो चावै तो।
आ इंच्छ्या पूरी मैं कर दयूँ,
जे मेरै स्यूँ मिल ज्यावै तो।।१०१६।।

रणमल अर रतीपाल रो
बिसवासघात

चक्कर में सुरा–सुन्दरी रै,
जद होस खोदियो, रतीपाल।
बिसवासघात रो निज मन में,
यूँ बीज बोलियो, रतीपाल।।१०२२।।

पत्थर पड गया बुद्धि पर अर,
तद दगो करण री ले मन में।
खिलजी स्यूँ हाथ मिलाकै बो,
ओटो आयो हम्मीर कनैं।।१०२३।।

आय'र हम्मीर कचेड़ी में,
मुजरो बजाय गुम–सुम सो, बो।
गुस्सै में भर्‌यो अणमणो–सो,
होय'र जद वैठ गयो हो, बो।।१०२४।।

हम्मीर क'यो– कैह् रतीपाल !
यूँ मुँह् उतर्योडो–सो क्यूँ है ?
खिलजी कानी स्यूँ इसडो के,
ल्यायो संदेस बता तूँ है ? १०२५।।

जो भी है बात बता सावळ,
मन मे संकोच करै मतनाँ।
कर वयाँ हकीकत साफ–साफ,
सारी बेधडक डरै मतनाँ।।१०२६।।

जद रतीपाल बीं नै झूठी,
बाताँ कहकै भडकाण लग्यो।
खिलजी कानीं स्यूँ जहर भरी,
संधी री सरत बताण लग्यो।।१०२७।।

बोल्यो– अनदाता ! माँफ करो,
खिलजी रो बो संधी सुझाव।
है रतीपाल रै ताँई तो,
नीं मानण-जोगो किणी भाव।।१०२८।।

लागै है सायद खिलजी नैं,
अब मौत साँकड़ै आई है।
जो आग लगायण [illegible],
संधी री सरत [illegible] है।।१०२९।।

बो कै'र्‌यो है हम्मीर अगर,
निज कँवरी नैं मेरै सागै।
करणै निकाह राजी हो तो,
संधी री बात बढ़ा आगै।।१०३०।।

नीं तो मैं वीं नैं अेक रोज,
रण मॉई मार गिराऊँगो।
वी री बेटी देवळदे नैं,
ठड्डै स्यूँ हर ले ज्याऊँगो।।१०३१।।

ओ तो मै थारी आज्ञा बिन,
बेबस होर्‌यो हो के करतो?
वरना आ सुणकै खिलजी री,
मुंडी नैं काट अलग धरतो।।१०३२।।

सुलतान जवन री आ हिम्मत ?
ललकार उठ्‌यो रणथंम धणी ?
ई स्यूँ ठाढी हळकाई तो,
होणी भी ही के और घणी ?।।१०३३।।

ई तॉई मैं तो खिलजी नैं,
रण तॉई ललकार्‌यायो हूँ।
मै सही कर्‌यो या गळत मगर,
कर आयो सो कर आयो हूँ।।१०३४।।

अब तो म्हाराज ! जंग हो'सी,
संधी री बाताँ करो मतॉ।
जद तक जिन्दो है रतीपाल,
हे अनदाता ! थे डरो मतॉ।।१०३५।।

अब ई रण में मैं खिलजी री,
सारी हेकड़ी भुलाद्यूँगो।
या मातभौम रै चरणॉ में,
मेरो ओ सीस चढाद्यूँगो।।१०३६।।

इक बात और म्हाराज सुणो,
खिलजी रै खेमै रै माँई।
जद आप मनैं भिजवायो हो,
संधी री वात करण तॉई।।१०३७।।

आ बात जरा–सी म्हामंत्री,
रणमलजी मन कम भाई ही।
वै थानैं भी कुछ दबी–दबी,
निज नाराजगी जताई ही।।१०३८।।

पण थे जद कोई खास ध्यान,
ई मसलै पर नी दियो जणा।
निज पद गरिमॉ नैं ले सायद,
बै होग्या है नाराज घणा।।१०३९।।

तद ही तो दिन दो होग्या बै,
सो राज–काज बिसरार्‌या है।
नीं राज–सभा में आकै बै,
अपणी हाजरी बजार्‌या है।।१०४०।।

जुद्ध री घड़ी में यूँ बॉ री,
नाराजी चोखी भी कोनीं।
अर ई प्रकरण में सोचॉ तो,
बैयॉ बै दोसी भी कोनीं।।१०४१।।

ई तॉई थॉ स्यूॅ बिन्ती है,
थे सभासदॉ सागै जाय'र।
अब घणैमान संझ्या तॉई,
ले आओ वॉ नै समझाय'र।।१०४२।।

यूँ चिकणी–चुपड़ी बातॉ कर,
चल दियो वठै स्यूॅ रतीपाल।
अर रणमल ढिग जाय'र बोल्यो,
गूॅथंतो निज मन मॉय जाळ।।१०४३।।

रणमलजी ! बैठ्या मत देखो,
करल्यो त्यारी भग [illegible] ।
राजा हम्मीर ज [illegible]
मन में थानैं भरवा [illegible]

मैं तो खिलजी स्यूँ मिलग्यो हूँ,
जे जीणो चावो तो आवो।
ई गढ स्यूँ बा'रै निकळ संग,
थे भी मेरै अब हो ज्यावो।।१०४५।।

रणमल बोल्यो– रै रतीपाल !
यूँ बोल र'यो है तूँ कैयाँ ?
कुछ ज्यादा चढगी के भाया !
जो बहक र'यो है तूँ अैयाँ।।१०४६।।

जे सूरज पच्छिम में निकळै,
तो भी आ बात जचै कोनीं।
जाबक मूरख माणस रै भी,
मन में आ झूठ पचै कोनी।।१०४७।।

हम्मीर कदै भी अपणाँ स्यूँ,
इसडो व्यौहार करै कोनीं।
जो पिरजा पाळ हुवै राजा,
सेवक संघार करै कोनीं।।१०४८।।

ओ न्रिप न्यारो – निरवाळो है,
ई पूरै राजपुताणै में।
नीं हुयो इयाँ रो म्हाराजा,
अब तक चौहाण घराणै में।।१०४६।।

तूँ बीं राजा हम्मीरदेव,
बावत यूँ ओछी बात करै।
रै भला मिनख ! ओ क्रित करतॉ,
ईसर स्यूँ भी क्यूँ नहीं डरै ?।।१०५०।।

रणमल रा भाव हम्मीर प्रति,
सुणकै जद बोल्यो रतीपाल।
मैं तो जार्‌यो हूँ रणमलजी !
पण थे थारो राखियो ख्याल।।१०५१।।

हम्मीर आज थारै कन्नैं,
पूगैगो नक्की ही आयो।
दरबार्‌यॉ सागै संझ्या तक,
तो मेरी बात समझ ज्यायो।।१०५२।।

जद बात म्हारली सच लागै,
तो बो दिखतॉ ई भाग लियो।
बो थानैं लेवै पकड
बीं नै मौको ही मतॉ दिय

कुछ दरबार्‌याँ नैं संग ले'र,
रणमल नैं चल्यो मनावण नैं।
रूठ्योड़ै निज म्हामंत्री रै,
मनड़ै रो भरम मिटावण नैं।।१०५५।।

हम्मीर आँवतो रणमल नैं,
जद पड़्यो दूर स्यूँ दिखलाई।
तो रतीपाल री बात माँय,
बीं नैं कुछ साँच निजर आई।।१०५६।।

सक री सूई उल्टी घूमीं,
मन मॉय मौत रो भय छाग्यो।
डर को मार्‌यो–सो बो झटपट,
तद थूक मुट्ठियाँ में भाग्यो।।१०५७।।

यूँ निज विवेक खूंटी पर धर,
बो रतीपाल रै होय साथ।
हम्मीरदेव स्यूँ दगो कर'र,
खिलजी स्यूँ लियो मिलाय हाथ।।१०५८।।

आँ दोन्याँ रो बिसवासघात,
हम्मीर सहण नीं कर पायो।
जद पदम सरोवर पाळ बैठ,
हिवड़ै मॉई दुख भर ल्यायो।।१०५९।।

अर लग्यो सोचणै ज्याँ नैं मैं,
मानै हो भायाँ स्यूँ ज्यादा।
जद बै ही होग्या मेरै स्यूँ,
विद्रोह करण यूँ आमादा।।१०६०।।

तो नक्की ही ओ है प्रभाव,
हौणी रो, आँ रो दोस नहीं।
औसर–विनास विपरीत बुद्धि,
हुय ज्यावै रै'वै होस नहीं।।१०६१।।

हौणी–माता नैं नमसकार,
यूँ सोच'र महलाँ में आयो।
अर बाट जोंवती पटराणी,
रंगादे स्यूँ जा बतळायो।।१०६२।।

बाँ दिनाँ घट र'यो हो जो कुछ,
ऊँचै गढ रणतभँवर माँई।
हर खबर पूग री ही पळ–पळ,
राणी रै रंग महल ताँई।।१०६३।।

जद बा साँची छत्राणी झट,
स्वामी रै दुख नैं भाँप गई।
बिन बोले – बतळाए ही सब,
बा समझ आप स्यूँ आप गई।।१०६४।।

बा खूब जाण'री ही बीं रै,
स्वामीं नैं के दुख सालै हो।
बिसवासघात कुछ अपणाँ रो,
बीं नैं जो फोड़ा घालै हो।।१०६५।।

ई नाजुक हालत में बीं री,
हिम्मत नीं जावै टूट कदे।
हठ बीं हम्मीर हठीलै रो,
यूँ हीं नीं जावै छूट कदे।।१०६६।।

आ सोच मुळकती-सी राणी,
राजा रो मन टंटोळंती।
करती मनुहार जणा बोली,
बाणी में मिसरी घोळंती।।१०६७।।

अनदाता ! कारण आज इस्यो,
बोलो के खास हुयो यूँ है ?
हे नाथ ! इयाँ सामीं-संझ्या,
मुखचन्द्र उदास हुयो क्यूँ है ?१०६८।।

रतनारी आँखड़ल्याँ में क्यूँ,
चिंत्या रो भाव समायो है ?
रणथंम धणी नैं इसडो भी,
कुण सो दुख आण सतायो है ?।।१०६९।।

अर लग्यो सोचणै ज्यॉ नैं मैं,
मानै हो भायॉ स्यूं ज्यादा।
जद बै ही होग्या मेरै स्यूं,
विद्रोह करण यूं आमादा।।१०६०।।

तो नक्की ही ओ है प्रभाव,
हौणी रो, ऑ रो दोस नहीं।
औसर–विनास विपरीत बुद्धि,
हुय ज्यावै रै'वै होस नहीं।।१०६१।।

हौणी–माता नैं नमसकार,
यूं सोच'र महलॉ में आयो।
अर बाट जोंवती पटराणी,
रंगादे स्यूं जा बतळायो।।१०६२।।

बॉं दिनॉ घट र'यो हो जो कुछ,
ऊँचै गढ रणतभँवर मॉई।
हर खबर पूग री ही पळ–पळ,
राणी रै रंग महल तॉई।।१०६३।।

जद बा सॉची छत्राणी झट,
स्वामी रै दुख नै भॉप गई।
बिन बोले – बतळाए ही सब,
बा समझ आप स्यूं आप गई।।१०६४।।

बा खूब जाण'री ही बीं रै,
स्वामीं नैं के दुख सालै हो।
बिसवासघात कुछ अपणॉं रो,
बीं नैं जो फोड़ा घालै हो।।१०६५।।

ई नाजुक हालत में बीं री,
हिम्मत नीं जावै टूट कदे।
हठ बीं हम्मीर हठीलै रो,
यूँ हीं नीं जावै छूट कदे।।१०६६।।

आ सोच मुळकती–सी राणी,
राजा रो मन टंटोळंती।
करती मनुहार जणा बोली,
बाणी में मिसरी घोळंती।।१०६७।।

अनदाता ! कारण आज इस्यो,
बोलो के खास हुयो यूँ है ?
हे नाथ ! इयॉं सामीं–संझ्या,
मुखचन्द्र उदास हुयो क्यूँ है ?१०६८।।

रतनारी ऑखड़ल्यॉं में क्यूँ,
चिंत्या रो भाव समायो है ?
रणथंम धणी नै इसड़ो भी,
कुण सो दुख आण सतायो है ?।।१०६९।।

अब छोड सकळ संताप जरा,
मैफिल में प्याला छळकण द्यो।
जमकै रंगीली – रातड़ली,
केसर–कसतूरी ढळकण द्यो।।१०७०।।

ई राज–काज री ब्याध माँय,
मन मौसम रो मत मूँजण द्यो।
अपणै उनमुक्त ठहाकों स्यूँ,
ई रंग महल नै गूँजण द्यो।।१०७१।।

जाओ अे दासी ! गीत गाण,
कोई ढोलण बुलवाओ अब।
अर निरत करण नै रंग महल,
धारादे नैं भिजवाओ अब।।१०७२।।

यूँ मन बिलमावण राजा रो,
अणहद्द उपाय करंती–सी।
होय'गी बावळी–सी राणी,
निज मन उनमाद भरंती-सी।।१०७३।।

रुक राणी ! अर आ बैठ जरा,
थोडो सो थ्यावस दे जी नैं।
धारा तो कद री चली गई,
तेरी दास्याँ ल्यासी कीं नैं ? १०७४।।

हैं ! हाँ, आभी सच है स्वामी !
धारादे कठै र'यी है अब ?
बा तो बिचापडी कद री ही,
कर सुरगाँवास गयी है अब।।१०७५।।

बा अेक नरतकी होय'र भी,
खोय'र निज स्वामीं भगती में।
हित मातभौम निज प्राण लुटा,
हो गई अमर ई जगती में।।१०७६।।

अर बै रणमलजी – रतीपाल,
होय'र रजपूतण जायोडा।
कर छेद गया बीं थाळी में,
जीं थाळी में हा खायोड़ा।।१०७७।।

अपणा स्यूँ कर बिसवासघात,
कुण सो तगमो पा'ज्यासी बै।
ई जगती रै इतिहास माँय,
हरदम गद्दार कुहासी बै।।१०७८।।

पण बॉ रै ई क्रित स्यूँ इसडो,
रणथंम धणी रो के खोग्यो ?
दो तारा टूट गया भी तो,
के आसमान खाली होग्यो ?।।१०७९।।

ई दुनियाँ में कुण कोई रै,
सागै आवै या जावै है ?
निज बळबूतै पर बंक सदा,
खुद रो इतिहास वणावै है।।१०८०।।

संसार चक्र में सुख–दुख भी,
आता – जाता ही रै'वै है।
जीवण में छोटा – मोटा अै,
झटका हर प्राणी सै'वै है।।१०८१।।

है 'धरम' छत्रि कुळ रो ओ ही,
नहिं कदे धरम स्यूँ मुँह मोडै।
होवै साँचो रजपूत जिको,
मिट ज्यावै, धरम नहीं छोडै।।१०८२।।

ई तॉणी ई घटनॉ नै यूँ,
हे नाथ ! मतॉ दयो तूल घणो।
सत–पथ पर डट्या र'वो चाहे,
होवै मौसम प्रतिकूल घणो।।१०८३।।

निज आण–बान, किरपाण 'पाण'
राखो नित सॉण चढायोड़ी।
छत्री ताणी धिक है जीणो,
जिंदगाणी पाण गॅवायोड़ी।।१०८४।।

ई नासवान संसार मॉय,
कुछ भी सागै नीं जाणो है।
पण सत–पुरूसाँ रो कीरत धज,
लहरायो है, लहराणो है।।१०८५।।

ई तॉईं चिंत्या छोड सकळ,
पथ सच्चाई पर खड़्या र'वो।
जय मिलो पराजय मिलो मगर,
निज पण मत छोडो अड़्या र'वो।।१०८६।।

ओ ग्यान राणी रो न राजा सुण सक्यो हो गौर कर।
मन भाव वींरा हा उळझर्‍या दूसरी ही ठौर पर।।
जद लाखिणै बाबल रि ऑख्यॉं मॉय वीं निस्तुर घड़ी।
कँवरी कुँवारी होयगी ही सामनैं आय'र खडी।।१०८७।।

हम्मीर नैं निज पुत्रि 'देवळ' जी स्युँ प्यारी ही घणी।
वीं धन पराए हित्त चिंत्या चित्त भारी ही घणी।।
वो मोह-ममता रो चिड़ो हद चैन लाग्यो चूंटणै।
धीरज जणा रणथंभ स्वामी रो लग्यो हो टूटणै।।१०८८।।

देवळदे रो आत्मोत्सर्ग

हम्मीरदेव री देवळदे,
सुन्दर–सी राजकुमारी ही।
मायड़ री ऑख्यॉ री ज्योती,
बाबल री राजदुलारी ही।।१०८६।।

हो चंदा–सो सीतळ चै'रो,
अर चंचळ हिरणी–सी चितवन।
जीवण रा कुल चौदह बसंत,
बा पार कर्‌यो हो जोबन-धन।।१०६०।।

ही केसरिया काया किसोर,
काची कूंपळ–सी कोमलडी।
कुंजन–कुंजन करती किलोळ
फिरती कूकंती कोयलडी।।१०६१।।

बीत्या दिन भोळै बचपण रा,
तन–मन तरुणाई छाण लगी।
सुन्दर कद–काठी रूपाळी,
अपछरा निरख सरमाण लगी।।१०६२।।

वयसंधि काळ पर चढी कळी,
पॅखुड़ी–पॅखुड़ी मदमाण लगी।
गुंजण करता मद रा लोभी,
मॅडराता भॅंवर लुभाण लगी।।१०६३।।

पग 'धरती' पर धरती जीं पळ,
रुतराज महकणै लगज्यातो।
जीं खोल विहॅसती स्वागत में,
खग ब्रिन्द चहकणै लग ज्यातो।।१०६४।।

कजराळी चंचल आँखड़ल्याँ,
सजती भौवाँ बळ खावंती।
ही स्याम घटा–सी माथै पर,
बिखर्योडी लट लहरावंती।।१०६५।।

वाँ लटॉ बीच ल्हुकतो – छिपतो,
मुखचंद्र निरखताँ दरपण में।
जाती लजाय बा कई बार,
खुद ही अपणै मन हीं मन में।।१०६६।।

मन मॉय छुप्योड़ो मदन–चोर,
तद अणचायो ई ऊल्यातो।
अधरॉ–अधरॉ ऑंखडल्यॉ स्यूँ,
ढळतो अधरॉ पर झूल्या तो।।१०६७।।

गालॉ पर छाज्याती लाली,
लेतो ॲगडाई अंग – अंग।
जाणै क्यूँ बिनॉ बजाए ही,
बज उठती मन-वीणा म्रिदंग।।१०६८।।

कुचमाद करंतो भ्रमर राग,
मन में मधुभाव जगा ज्यातो।
चिडकळै – चिडी रो निरत निरख,
मन पुळकित हुयो-हुयो जातो।।१०६६।।

अणचायी–सी मीठी – मीठी,
सिरहण उठती जद उर–उरोज।
हो सावळचेत जणा कै'ती,
यूँ मनमानी मत कर मनोज !११००।।

है नाजुक आ कचनार कळी,
ऊमर काची है डट थोडो।
मत करै उतावळ यूँ झूठी,
उनमादी पीछै हट थोडो।।११०१।।

कुछ दिन मायड़ली गोद मॉय,
सोवणदे – सुणणैदे लोरी।
वावल री दे'ळी उछळ–कूद,
कुछ और मचावणदे थोडी।।११०२।।

यूँ कैह् हरखंती–मुळकंती,
छम–छम–छम पायल छमकाती।
चल देती महलॉ स्यूँ उपवन,
सखियॉ सागै हँसती-गाती।।११०३।।

इक दिन संझ्या की वागॉ स्यूँ,
वा घूम घरॉ नै आ'री ही।
पटराणी रंगादे वैठी,
हम्मीर संग बतळा'री ही।।११०४।।

चिरचा वातॉ में खुद री सुण,
देवळदे कान लगा वैठी।
चुपकै–चुपकै सगळी वातॉ,
सुणणै में ध्यान लगा वैठी।।११०५।।

तद रणतभॅवर गढ रै ऊपर,
रण रा वादळ मॅडरार्‌या हा।
सुलतानें दिल्ली खिलजी स्यूँ,
गढ रा जोधा टकरार्‌या हा।।११०६।।

हम्मीर कैह् र'यो हो म्हे अब,
म्हाराणी ! रण करणै तॉई।
जावॉला सगळा सज्ज–धज्ज,
वानॉ केसरिया रै मॉई।।११०७।।

जे विजयश्री नी मिल पाई,
लड़ता – लड़ता मरज्यावॉगा।
पण पीठ दिखा रण मॉय कदे,
केसरिया नहीं लजावॉंगा।।११०८।।

मन्नैं मरणै रो दुख कोनी,
कॅवरी री चिंत्या सालै है।
सोवता – जागतॉ मन्नैं दुख,
ओ ही बस फोडा घाले है।।११०६।।

ई दुख नैं मेटण रो मैं के,
म्हाराणी ! कहो उपाय करूँ ?
कुछ नहीं समझ मैं पार्‌यो हूँ,
किण विध मन रो संताप हरूँ ?१११०।।

बा घणी लाडली है मेरी,
बा मन्नैं जी स्यूँ प्यारी है।
मैं सोचूँ बी रो के हो'सी,
मन्नैं आ चिंत्या खा'री है।।११११।।

बा जोत जागती महलॉ री,
सोभा है मेरै ऑगण री।
बा बागॉ री कोयलडी है,
अर है बरखा रुत सावण री।।१११२।।

बीं रै कानीं जद देखूँ हूँ,
मेरो हीयो भर आवै है।
के करूँ और के नहीं करूँ,
मन निरणय नीं ले पावै है।।१११३।।

ई मन री विकट पहेली नैं,
जितणी ज्यादा सुळझाऊँ हूँ।
उतणो ई ज्यादा मैं ई में,
दिन–रात उळझतो जाऊँ हूँ।।१११४।।

ई हालत में तो सुण बी रा,
पीळा भी हाथ न होय सकै।
क्वाँरी कन्याँ है ई तॉई,
जौहर री सेज न सोय सकै।।१११५।।

जे बी नैं मारूँ मैं कुळ रो,
रण–धरम निभावण रै ताँई।
हिम्मत नीं होवैगी मेरी,
तलवार उठावण रै तॉई।।१११६।।

तलवार उठा भी ल्यूँगो तो,
तलवार चला नीं पाऊँगो।
ओ अटळ सच्च है म्हाराणी,
मै बेटी मार न पाऊँगो।।१११७।।

यूँ कैह्कै वीर अधीर हुयो,
आँखडल्याँ पाणी छळक्यायो।
बज्जर–सी छाती हुई मोम,
दुखडै स्यूँ हिवड़ो पिघळ्यायो।।१११८।।

आ देख दसा निज बाबल री,
देवळदे जरा अधीर हुई।
बेटी रो धन भी के धन है,
आ सोच मोकळी पीड हुई।।१११६।।

क्यूँ जग मे हरकोई नैं ई,
बेटी री चिंत्या खा'री है ?
क्यूँ बेटाँ स्यूँ बेटी धन री,
कीमत कम आँकी जा'री है ?११२०।।

ले जलम अेक ही कूख माँय,
इक गोद माँय कर उछळ–कूद।
दोनूँ ई पळै – बडा होवै,
इक मायडली रो पीय दूध।।११२१।।

फेरूँ बेट्यॉ रै ऊपर ही,
जग री मरजाद तणी क्यूँ है ?
उचित्त – अनुचित री बहुत घणी,
सब सीमा रेख बणी क्यूँ है ? ११२२ ।।

क्यूँ बेटी धन री चिंत्या स्यूँ ,
राजा तक भी आजाद नही?
मायड़ली तक नैं बेटी जण,
क्यूँ होय कूख पर नाज नहीं ।।११२३ ।।

मौको मिलियॉ हर छेत्र मॉय,
मरदॉ पर नारी भारी है।
पण पच्छपात–लिंगीय नीति,
नारी धन री लाचारी है।।११२४ ।।

ई पुरस प्रधान समाज मॉंय,
आ नीति निर्रथक घडियोड़ी।
है मरद जात री नारी हित,,
साजिस सोच्योडी समझ्योड़ी।।११२५ ।।

यूँ निज ख्यालॉ में खोयोड़ी,
देवळदे सूती–सी जागी।
छवि भर ऑंख्यॉ में बावल री,
मन हीं मन में निरखण लागी।।११२६ ।।

जिण ऑखडल्यॉ में रात'र दिन,
बरस्या करता हा अंगारा।
बॉ ऑखड़ल्यॉ मे बा देख्या,
ढळकता आँसूड़ा खारा।।११२७।।

तद बाबल रै मन री चिंत्या,
बेटी मन ही मन जाण गंई।
जड कठै रोग री जम'री है,
बा सावळ खूब पिछाण गई।।११२८।।

बा समझ गई भावुकता मे,
बहकै बाबल घबरार्‌यो है।
ममता मे फॅसकै राजपूत,
रजपूती धरम भुलार्‌यो है।।११२६।।

मेरी चित्या मन में लेय'र,
जे दाता रण में जावैगा।
मन उळझ्यो रै'गो मेरै में,
तो के रण करणै पावैगा ? ११२३०।।

ओ रोग मेटणो हीं पड़सी,
यूँ सोच निजर झट दौडाई।
सामनै टॅग्योडी खूँटी पर,
नंगी तलवार निजर आई।।११३१।।

मन हीं मन हरखी देवळदे,
सुमरण कर मात भवानी नैं।
चूमी तलवार उठा कर में,
देती–सी मोड़ कहाँणी नैं।।११३२।।

फेरूँ पूगी बण रणचंडी,
हम्मीरदेव रै सामी बा।
फींक्यो खाँडो धरणी पर अर,
गरजी ओ बाबल! चाल उठा।।११३३।।

अर होय बेधड़क झट मेरै,
ई धड़ स्यूँ सीस अलग करदे।
बळिदान माँग'री है माटी,
माटी री माँग रगत भर दे।।११३४।।

या अेक बार दे छूट मनैं,
अब आ तलवार उठाणै री।
ई गढ री नारी सगती नैं,
निज रण कौसल दिखलाणै री।।११३५।।

ईं वीर धरा री हर बाला,
है रण करणै में निपुण घणी।
इण नैं आज्ञा रण करणै री,
दे–दे तूँ रणथंभौर धणी।।११३६।।

तो मात भवानी री सौगँद,
दुसमण नैं धूळ चटाद्यॉं म्हे।
अर जुद्ध मॉय तलवार चला,
जौहर अपणो दिखलाद्यॉं म्हे।।११३७।।

हरखी म्हाराणी रंगादे,
निज कुँवरी रै ई करतब पर।
तूँ धन है मेरी लाडेसर,
कर दीन्हीं मेरी कूख अमर।।११३८।।

बोली देवळदे– कद बाबल !
प्राणॉं रो मोह सतायो है ?
इक राजपूत री बेटी नैं,
जद कोई मौको आयो है।।११३६।।

जिँदगाणी रो के मोह् बाबल !
जिँदगाणी आणी–जाणी है।
निज मातभौम रै लिए सदा,
बळिदान दियो छत्राणी है।।११४०।।

जिण प्राणॉं तॉई सुण बाबल !
ऊँचो गढ रणतभँवर सर हो।
उजवळ – ऊँचै चौहाणॉं रै,
कुळ दाग लागणै रो डर हो।।११४१।।

जिण प्राणाँ रै मोह् में सूरज,
आजादी हाळो डूब ज्याय।
जिण प्राणाँ ताँई राजपूत,
रण करणै स्यूँ ई ऊब ज्याय।।११४२।।

हम्मीर हठीलै तक रो हठ,
जिण प्राणाँ ताँई टूट ज्याय।
ई स्यूँ तो चोखो है मेरा,
बै प्राण देह स्यूँ छूट ज्याय।।११४३।।

थे राजपूत होय'र बाबल !
यूँ कायरता के चित ल्यावो ?
है घड़ी परिच्छ्या री बाबल !
भावुकता में मत भरमावो।।११४४।।

जे छत्री धरम भुलाओगा,
इतिहास कळंकित कर द्योगा।
चौहाण वंस रै पुरखाँ रो,
बिसवास कळंकित कर द्योगा।।११४५।।

रिण मातभौम रो बखत पड्याँ,
देय'र निज ज्यान चुकावै है।
अैसो मौको ई जगती में,
कोई बडभागी पावै है।।११४६।।

है बिन्ती मेरी सुण बाबल!
ओ सुभ अवसर मत कढणै द्यो।
आग्यो अब वखत विदाई रो,
कँवरी नैं चँवरी चढणै द्यो।।११४७।।

चेतो कर बाबल लाखीणा !
मत ज्यादा सोच विचार करै।
जद ऑच 'आण' पर आण लगै,
रजपूत मौत गळहार करै।।११४८।।

ई मन री दोगाचींथी में,
रजपूती आण नहीं घटज्या।
ममता मरज्याणी रै मोह् में,
निज पथ स्यूँ पॉव नहीं हटज्या।।११४६।।

ऊँची रजपूती देख कदै,
केसरिया पाग नही झुकज्या।
तलवार चलावंतॉ तेरो,
उठियोडो हाथ नहीं रुकज्या ।।११५०।।

बेटी रा वीर बचन सुणकै,
हीयो बाबल रो दरक्यायो।
है असल सिंघणी री जाई,
आ जाण घणो मन हरखायो।।११५१।।

कल तॉई जीं देवळदे नै,
मै गोदी माँय खिलातो हो।
पकड़ाय ऑगळी ऑगण में,
जीं नै दिन–रात घुमातो हो।।११५२।।

छोटी–सी मेरी बा गुडिया,
जो कल ताँई तुतळाती ही।
आँवती सामनैं मेरै जो,
घबराती ही, सरमाती ही।।११५३।।

बा इतणी स्याणी हो'गी के ?
नी होय र'यो बिसवास मनैं।
ई घणमोली किरपा तॉई,
धन है मेरा करतार तनैं।।११५४।।

यूँ सोच अेकदम स्यूँ मन में,
गद – गद होग्यो हम्मीरदेव।
जाणै कुण–कुण से ख्यालॉ में,
जाय'र खोग्यो हम्मीरदेव।।११५५।।

जीं सोनचिड़ी नैं पाळी मैं,
चुग्गो चुग्गाय हथेळी में।
चहक्यो जीं रो चूँचाट सदॉ,
ई गढ रै आँगण पोळी में।।११५६।।

बीं सोनचिडी री नाड़ किय़ॉ,
मैं दयूँ मरोड निज हाथॉ स्यूँ ?
हम्मीर हुयो विचलित ओजूँ,
घट मॉय घुमड़ती बातॉ स्यूँ।।११५७।।

तद मौको पा मन स्वारथडो,
चुपकै स्यूँ जाळ बिछाण लग्यो।
खिलजी स्यूँ संधी करले तो,
के घाटो है समझाण लग्यो।।११५८।।

झट मीत बणा लेणो चाए,
जद सामी दुसमण हो तगड़ो।
बैयाँ भी आखिर खिलजी स्यूँ,
इसडो तेरो है के झगडो।।११५६।।

झगडै री जड है मोमदस्या,
तूँ मोमदस्या नैं लौटादे।
सुलतानें दिल्ली है खिलजी,
चावै तो कॅवरी परणादे।।११६०।।

चांडाळ चुप्प ! यूँ कै'तो जद,
हम्मीर क्रोध स्यूँ भडक उठ्यो।
आ चोट आण पर ही सीधी,
सूत्योडो धीरज तडक उठ्यो।।११६१।।

सूरज पिच्छम में उगै भलाँ,
मावस नैं चॉद निकळ आवै।
अंबर झुकतो व्है तो झुकज्या,
हम्मीर बचन नीं टळ पावै।।११६२।।

मै बचणॉ में बॅधियोड़ो हूँ,
मोमदस्या री रच्छ्या ताणी।
मुरदार कुहावै जगती में,
निज बचणॉ स्यूँ डिगियॉ प्राणी।।११६३।।

है सरण म्हारली मोमदस्या,
सरणागत लौटाऊँ कोनीं।
सिर पडै कलम करणो कॅवरी,
खिलजी स्यूँ परणाऊँ कोनीं।।११६४।।

यूँ सोच'र सुमर भवानी नै,
हम्मीर लियो खॉडो उठाय।
सामनैं खडी ही देवळदे,
बलिवेदी पर गरदण झुकाय।।११६५।।

कर करड़ी छाती आँख मींच,
तद बो किरपाण चलाण लग्यो।
पण जाणै क्यूँ बीं रो बीं पळ,
झट उठ्यो हाथ थर्राण लग्यो।।११६६।।

भारी–भारी सो मन होग्यो,
आँखडल्याँ अँधियारो छाग्यो।
धरती घूमंती–सी लागी,
हीयो कॉप्यो, सिर चकराग्यो।।११६७।।

तलवार हाथ स्यूँ छूट गई,
गिर पड़्यो धरा पर गस खा'की।
तो बावल रै मन री पीड़ा,
बेटी मन गई उतर आ'की।।११६८।।

अर फरज तकादो करण लग्यो,
बा ऊँडी पीड हरण तॉई।
निज मातभौम बळिवेदी पर,
न्यूँछावर प्राण करण ताँई।।११६६।।

अवसर सुभ आयो जाण जणा,
निरणय लेय'र इक भारी बा।
म्हैलॉ री छत पर जा पूगी,
म्हैलॉ री राजकुमारी बा।।११७०।।

हो राज महल रै पिछवाडै,
इक इक पदम सरोवर भारी बा।
बी मॉय समाधी ले'णै री,
मन में करली झट त्यारी जा।।११७१।।

तद सीस झुका हो गई खड़ी,
हौणी नैं करती नमस्कार।
सगळा अपणां नै कर्‌या याद,
जी भरकै मन स्यूँ बार–बार।।११७२।।

ओ बाबल ! दे आसीस मनै,
मैं अपणो फरज निभा पाऊं।
ओ मायड़ली ! मैं देख कदे,
तेरो नीं दूध लजा ज्याऊँ।।११७३।।

चौहाण वंस रा ओ पुरखॉ !
दयो सगती थारी कॅंवरी नैं।
हम्मीरदेव री इकलोती,
लाडेसर क्वॉरी कॅंवरी नैं।।११७४।।

मेरी तो डोली चाल पड़ी,
आओ री सखियॉं ! आओ री।
अब सारी की सारी मिलके,
थे आज विदाई गाओ री।।११७५।।

थे बालपणै री भायलियॉं,
सब मनै विदा करती जाओ।
गळबैयॉं डाळ गळै मिलल्यो,
अपणी ई देवळ स्यूँ आओ।।११७६।।

हो'गी हो कोई भूल–चूक,
मेरै स्यूँ तो मत चित ल्यायो।
देवळ सासरियै चली गई,
मेरी माँ नैं कै'ती जायो।।११७७।।

सावण रै झूलाँ री रुत में,
यादाँ मेरी मत बिसरायो।
सासरियै मे जाकै सगळी,
थे भूल मताँ मन्नैं जायो।।११७८।।

है नमन तनै गढ़ रणतभँवर,
हे गढ़–गणेस तिरनेत्र धाम।
हम्मीर हठी री बेटी रो,
ले मातभौम अंतिम प्रणाम।।११७९।।

फेरूँ जी भरकै कर्‌या याद,
बा किलै वासियाँ सगळा नैं।
निज री सेवा में र'या जिका,
बाँ दास–दासियाँ सगळा नैं।।११८०।।

सब लता-बिरछ,खग-मिरग सकळ,
जिण–जिण रै सागै जीवण में।
हँासी – बोली, खेली – कूदी,
सब याद कर्‌या मन हीं मन में।।११८१।।

निज गळै मॉय झालरॉ जड़ी,
लटकंती परस मणी नैं वा।
अरपी निकाळ जद सरवर नैं,
सिरधा स्यूॅ अपणो रीस नवॉ।।११८२।।

फिर कुळ देवी नै करी याद,
हे मात भवानी ! मॉ दुर्गे !
दे सगती तेरी बेटी नैं,
हे मात चंडिके ! मॉ अंबे ! ११८३।।

कैह् कूद पडी ताळाब मॉय,
सारी घाट्यॉ गूॅजी जय हो।
हम्मीर – सुता देवळदे री,
भारत मॉ री जय हो, जय हो।।११८४।।

उत्सर्ग प्राणॉ रो कर'र यूॅ देस हित रै मॉय वा।
इतिहास में कीरत पताका निज गई फैलाय या।।
बलिदान देवळदे स्युॅ नूतन प्रेरणा जुध पाय जद।
उत्साह भरियो सौ गुणों हो राजपूतॉ मॉय तद।।११८५।।

मोमदस्याह रो बलिदान

देवळदे रो बळिदान देख,
हम्मीर दुखी मन मॉय हुयो।
जद रसद–मंतरी जौहड नैं,
बुलवा निज महलॉ मॉय लियो।।११८६।।

जौहड़ ! भंडारॉ में कितणो,
है अन–धन हाल र'यो बाकी।
तूँ जाय'र सावळ देख जरा,
दे सही खबर झट स्यूँ आ'की।।११८७।।

कम बुद्धि मिनख जौहड़ सोची,
म्हाराज जाण जे जावैगो।
भंडारा भर्‌या पड़्या है तो,
रण बंद नहीं हो पावैगो।।११८८।।

अर जे ओ जुद्ध र'यो चालू,
तो साही सेना स्यूँ रण कर।
सब राजपूत जोधा यूँ हीं,
लड़ता–भिड़ता जाणाँ है मर।।११८६।।

अर विजयश्री तो फेरूँ भी,
ई जुध में मिल नीं पाणी है।
अब खिलजी स्यूँ टकराणै में,
क्यूँ आणी है नॉ जाणी है।।११९०।।

मैं काम बुद्धि स्यूँ लेय'र जे,
कैह् दयूँ रासन भंडाराँ में।
बस रसद निमडणै हाळी है,
दाता सा! अब तो साराँ में।।११९१।।

तो सायद ओ हम्मीर हठी,
खिलजी स्यूँ संधी कर लेवै।
जुध खतम होयज्या अर खिलजी,
पाछो दिल्ली नैं चल देवै।।११९२।।

तो बंद होयज्या ओ विनास,
यूँ सोच आप रै मन माँई।
बोल्यो– म्हाराज! रसद तो अब,
निमड़ण में सारी है आई।।११९३।।

दिन--रात चालतै जुद्ध मॉय,
आवक अनाज री रुक'री है।
बस जियॉ--तियॉ दुख--सुख पा'कै,
अब तक तो गाडी गुड'री है।।११६४।।

पण यूँ ई जुद्ध चल्यो तो अब,
आ पार नहीं पडणै हाळी।
दो--च्यार दिनाँ में हीं सायद,
अब है गाडी अड़णै हाळी।।११६५।।

आ बात सुण'र हम्मीर जणा,
मन मॉय अधीर हुयो भारी।
सब सभासदॉ नैं बुलवाकै,
निरणय कुछ लिया जणा भारी।।११६६।।

दरवाजो खुफिया खुलवाद्यो,
गढ रो आदेस कर्‌यो जारी।
अर धरम जुद्ध करणै री अब,
करली जावै सगळी त्यारी।।११६७।।

सुरच्छित किल्लै वासियॉ नैं,
झट बा'रै भिजवा दिया जाय।
अर मोमदस्या नै कहलाद्यो,
झट राजमहल में मिलै आय।।११६८।।

जौहर री त्यारी कर लेवै,
रणवासै खवर भिजाई जा।
म्हूरतसिर राजपुरोहित रै,
जौहर ज्वाळा धधकाई जा।।११६६।।

अव म्हे तो चाल्या वचणाँ हित,
निज ज्यान हथेळी पर धरकै।
हम्मीर हठी तो मानैंगो,
अव पूरी अपणी हठ करकै।।१२००।।

जीं नैं निज प्राण पियारा हो,
बो जाय सकै है छोड़ जंग।
अर मौत पियारी हो· जीं नैं,
हो लेवै मेरै आय संग।।१२०१।।

ई धरम जुद्ध में कोई भी,
नाँ राजा है नाँ सेवक है।
ई में हरकोई नैं सुतंत्र,
निज निरणय लेणै रो हक है।।१२०२।।

आ सुणताँई सरदार सकल,
भर जोस जबर हुंकार भरी।
हम्मीर देव री इक सुर में,
जद मिलकै जै–जैकार करी।।१२०३।।

अर बोल्या— राजन ! विपदा में,
दे साथ छोड निज स्वामीं रो।
या तो कायर–नामर्द हुवै,
या होवै बीज हरामीं रो।।१२०४।।

रणथंम धणी रो हर सेवक,
बीं वीर धरा रो जायो है।
निज देसप्रेम रो पाठ जठै,
घूँटी में गयो पिलायो है।।१२०५।।

म्हे धरम जुद्ध में खिलजी स्यूँ,
जमकै ही टक्कर लेवॉगा।
कॉधै स्यूं कॉधो मिला साथ,
अपणै स्वामीं रो देवॉगा।।१२०६।।

है सौगन मात भवानी री,
करियोडो जे म्हे प्रण तोडॉ।
है ज्यान जठै तक ई तन में,
म्हे थारो साथ नहीं छोड़ॉ।।१२०७।।

संदेस पाय झट मोमदस्या,
हम्मीर महल ड्योढी आयो।
तो पास बुलाकै बो बींनै,
धीरज स्यूं सावळ समझायो।।१२०८।।

मैं जाणू हूँ ओ सुभ–अवसर,
कोई बिरलो नर पावै है।
निज बचणाँ हित मर ज्यॉवणियों,
सॉचो रजपूत कुहावै है।।१२१४।।

पण इणी बीच मन में मेरै,
तेरो खयाल जद आवै है।
तेरै बारै में सोच–सोच,
हीयो मेरो घबरावै है।।१२१५।।

मैं चाऊँ हूँ तन्नैं खिलजी,
जीवण भर नहीं पकड पावै।
मेरै जीतैं–जी तेरै पर,
कोई भी ऑच नहीं आवै।।१२१६।।

तेरै कुटुम्ब री रिच्छ्या रो,
मैं वचन दियो है मोमदस्या।
वो पूरो हो'णो हीं चाए,
आ ही है बस मेरी इंच्छ्या।।१२१७।।

ई लिए तनैं बुलवायो है,
अै सारी बाताँ समझाकै।
तन्नैं खुफिया गैलै स्यूँ ई,
गढ रणतभँवर स्यूँ निकळाकै।।१२१८।।

निसफिकरी तेरै कानीं स्यूँ,
अब मैं पाज्याणो चाऊँ हूँ।
जीं ठौर जावणो चावै तूँ,
वीं ठौर पुगाणो चाऊँ हूँ।।१२१६।।

ई लिए मान मेरो कै'णो,
अविलंब चाल निज महलाँ जा।
अर अपणी सावळ त्यारी कर,
परिवार सहित जल्दी स्यूँ आ।।१२२०।।

जो आज्ञा कै'तो मोमदस्या,
झट अपणै महलाँ में आयो।
आकै भाई केहब्रू अर,
अपणी बीबी स्यूँ बतळायो।।१२२१।।

खाविंद री बात सुण'र बीबी,
सोचण लागी मोमदस्या री।
आगई स्यात है आज घडी,
परिवार पठाण परिच्छ्या री।।१२२२।।

है करज चुकाणै रो मौको,
तो करज चुकाणो हीं चाए।
जे मरणो पड़ै फरज ताई,
हँस–हँसकै मर ज्याणो चाए।।१२२३।।

फेरूँ अव करज चुकाणै रो,
अैयाँ को मौको कद आसी।
जे ईं मौकै पर चूकी तो,
मंगळ औसर ओ कढ ज्यासी।।१२२४।।

यूँ सोच जणा मन हीं मन में,
निरणय लेय'र इक भार्‌यो बा।
सामनैं खड़े मोमदस्या नैं,
मुळकंती–निजर निहार्‌यो बा।।१२२५।।

अर फेर बठै स्यूँ चाल पड़ी,
हीये में मोद भरंती–सी।
सब जग रा रिस्ता–नातॉ नै,
आखरी सलाम करंती–सी।।१२२६।।

झट हाथ मॉय तलवार उठा,
निज सयन–कक्ष में सूत्योड़ा।
सब टाबरियाँ नैं कर्‌या कतल,
अर आ ड्योढी रै बाहर बा।।१२२७।।

लेय'र कटार इक छिण माँईं,
ली मार आप री छाती में।
बैंवतै खून में कलम डुबो,
समचार लिख्या कुछ पाती मे।।१२२८।।

ओ रणतभँवर गढ रा स्वामी,
सुण ओ हम्मीर हठीला सुण !
ईं मुसळमान री बेटी री,
फरमाइस वीर हठीला सुण ! १२२६ ।।

मरणै स्यूँ पै'ल्यॉ अेक बार,
बस अेक बार ई जीवण मे।
तेरा दीदार करण री है,
अंतिम–इंच्छ्या मेरै मन में।।१२३०।।

आखिर तू कुणसी माटी रो,
है बण्यों देखणो चा'री हूँ।
निज दिली–तमन्ना दिलनसीन,
लिखकै खत मॉय भिजा'री हूँ।।१२३१।।

तॅू हिन्दू जायो होय'र भी,
इक मुसळमान रै तॉई यूँ।
खुद आगै होय'र बेमतलब,
बाजी निज ज्यान लगाई क्यूँ।।१२३२।।

मेरै परिवार – पठाण संग,
आखिर तेरो के रिस्तो है ?
तॅू आदम तो नी होय सकै,
नक्की ही जणा फरिस्तो है।।१२३३।।

ओ बादसाहदिल ! नैण मेरा,
तेरै दरसण रा प्यासा है।
फरियादी री फरियाद सुण'र,
आवैगां, पूरी आसा है।।१२३४।।

मैं विन तेरा दीदार कर्यॉ,
अै सॉस नही टूटण दयूँगी।
तेरी उडीक में अटक्योडा,
निज प्राण नहीं छूटण दयूँगी।।१२३५।।

फिर दी पाती मोमदस्या नैं,
मोमदस्या पाती ले भाग्यो।
पाती पढतॉं ई मुख–मंडळ,
हम्मीरदेव रो कुमळाग्यो।।१२३६।।

सब काम छोड चल दियो झट्ट,
मोमदस्या रै महलॉं कानीं।
देखी दो तकती बाट बठै,
ऑखड़ल्यॉं दरवाजै सामीं।।१२३७।।

हम्मीर दिखाई देतॉं हीं,
बॉ ऑख्यॉ में त्रिपती छागी।
अर हरसाकै इक पळ में ही,
बै सुन्दर ऑख्यॉ पथरागी ।।१२३८।।

हम्मीर सन्न रैंग्यो हो जद,
बीं देवी रो बळिदान निरख।
मर मिटी आण पर बगत पड़्यॉ,
चलदी निज ज्यान हथेळी रख।।१२३९।।

फिर धड स्यूँ अलग पड़ी मुंड्यॉ,
बाँ टाबरियाँ री देखी बो।
तो हियो फाटग्यो देख त्याग,
बीं मुसळमान री बेटी रो।।१२४०।।

पत्थर दिल मोम होयग्यो अर,
टप-टप टपकण लाग्या ऑसू।
जद करड़ी छाती करकै बो,
कर जतन घणा ढाब्या ऑसू।।१२४१।।

फिर जाय पास मोमदस्या नैं,
झट भुजा पकड़कै खींच लियो।
अर छाती स्यूँ चिपका बीं नै,
दोनूँ हाथाँ में भींच लियो।।१२४२।।

हो गयो धन्य रै मोमदस्या !
मै देख त्याग तेरो, भाया।
दुनियॉ राखैगी याद सदाँ,
रिस्तो तेरो-मेरो, भाया।।१२४३।।

इक मुसळमान होय'र भी तूँ,
अपणॉं–सी प्रीत निभाई है।
पिछले जलमॉं रो तूँ सायद,
मेरो मॉं–जायो भाई है।।१२४४।।

मेरा तो दगो मनैं देग्या,
तूँ अब भी प्रीत निभार्‌यो है।
आ सोच–सोचकै मोमदस्या !
मन बहुत घणो सुख पार्‌यो है।।१२४५।।

मोमदस्या बोल्यो– महाराज !
ओ समय नही दुख करणै रो।
मत भूलो वखत आयग्यो है,
रण में जा मारण–मरणै रो।।१२४६।।

वलिदान मोमदस्याह वेगम है घणो वेजोड ओ।
चलदी हरख हित सरणदाता वेधडक जग छोड ओ।।
या म्रित्त वेगम मान साथै जद सुपूर्देखाक कर।
मोमद्‌दस्याह हमीर सागै हो लियो सामिल समर।।१२४७।।

जाजादेव री स्वामी भगती

हम्मीरदेव री सेवा में,
हो जोधो जाजादेव अेक।
हो घणो सिरफिर्‌यो–मनमौजी,
राजा नैं हो प्यारो विसेख।।१२४८।।

बो हो हमीर रो अेकनिस्ट,
साँचो सेवक अर महारथी।
भगवान राम रो दास जियाँ,
त्रेता में हो हणमान जती।।१२४९।।

बीं नैं हम्मीर कवण लाग्यो,
सुण ओ जाजादे तूँ भी अब।
जाणो चावै तो क्यूँ चूकै,
जद किलो छोड जार्‌या है सब।।१२४५०।।

तूँ र'यो चाकरी में मेरी,
मेरै जीवण भर तॉईं यूँ।
सागै मेरै दिन – रात चल्यो,
वणकै मेरी परछाई तूँ।।१२५१।।

मेरी सेवा में र'यो अटळ,
रघुकुळ रै लिछमण नाँईं तूँ।
हर सुख में हर दुख में मेरै,
नित र'यो भुजा वण दॉई तूँ।।१२५२।।

पण म्हे तो अब चाल्या तडकै,
निज कुळ री आण निभावण नैं।
दीयोडा अपणॉ बचणॉ पर,
हँस–हँसकै ज्यान लुँटावण नैं।।१२५३।।

ई लिए चाकरी स्यूँ मेरी,
मैं तनैं मुक्त कर र्‌यो हूँ जा।
आ सुणकै चाल पड्यो जाजो,
कै'कर जो आज्ञा म्हाराजा।।१२५४।।

अर सीधो घर आय'र अपणी,
पाचूँ पतण्यॉ नैं बुलवाई,
तद च्यारूँ बेटॉ रै सागै,
बीं री सब घर हाळ्यॉ आई।।१२५५।।

जाजो तलवार उठाय'र जद,
नौवाँ री गरदण पर मारी।
सिर कट्या धरा पर उछळ पड़्या,
तद अट्टहास करियो भारी।।१२५६।।

फिर ले इक थाळ बडो सारो,
नौवूँ सिर बी में सजा दिया।
अर धर सिर पर निकळ्यो घर स्यूँ,
मानव–मुंडाँ रो थाळ लियाँ।।१२५७।।

झट लंबा–लंबा डग भरतो,
हम्मीर – कचैड़ी आय'र बो।
नारेळ जियाँ सिर चढा दिया,
हम्मीर चरण में ल्याय'र बो।।१२५८।।

अर उछळ–उछळ विकराळ हुयो,
भैरूँ–सो निरत करण लाग्यो।
तद बाँथ घाल हम्मीरदेव,
बीं नैं रोक्यो'र कवण लाग्यो।।१२५६।।

ओ के कर बैठ्यो रै जाजा।
आ के तेरै मन में भाई ?
क्यूँ खेली आ खूँनी होळी ?
मेरै आ समझ नही आई।।१२६०।।

जाजो बोल्यो– म्हाराज जणा,
लिछमण नै बिसरा दियो राम।
तो लखन लला रै लिए फेर,
के सेस बच्यो जग मॉय काम ?१२६१।।

जैयॉ चातकड़ो नीर कदे,
धरती रो पीय सकै कोनी।
कर लेवो लाख जतन मछळी,
बिन पाणी जीय सकै कोनी।।१२६२।।

बैयॉ ई थारै बिन मेरै,
जीणै रो है के अरथ अठै।
बिन रणथम्भौर धणी रै है,
जाजै रो जीणो व्यरथ अठै।।१२६३।।

ई लिए सोच लीन्हीं अब तो,
रावण अपणा दस सीस जियॉ।
संकर री भेंट चढाया हा,
ओ जाजो भी अब ठीक बियॉ।।१२६४।।

थारै चरणॉ मे काट–काट,
पूरा दस सीस चढावैगो।
नौ तो हाजिर है अर दसवों,
ओ अपणो सीस मिलावैगो।।१२६५।।

मेरा तो थे ही संकर हो,
हे महाराज ! स्वीकार करो।
ई सेवक री आ तुच्छ भेंट,
लेणै स्यूँ मत इनकार करो।।१२६६।।

यूँ कैह् अपणी तलवार खींच,
निज गरदण पर मारण लाग्यो।
तो पकड हाथ हम्मीर तुरत,
रोक्यो अर समझावण लाग्यो।।१२६७।।

है धन्न-धन्न तूँ रै जाजा !
है धन्न वीर तेरी सगती।
बळिदान धन्न है ओ तेरो,
है धन्न वीर तेरी भगती।।१२६८।।

रुक जाजा ! तेरी ज्यान आज,
इतणी भी सस्ती कोनीं है।
तेरै स्यूँ बढकै ई गढ में,
अब कोई हस्ती कोनीं है।।१२६६।।

जे तूँ मरज्यावैगो जाजा !
ई गढ री रिच्छ्या कुण करसी ?
मै मन में सोच रखी है जो,
पूरी वा इंच्छ्या कुण करसी ? १२७०।।

तूँ है रणधीर ठिकाणै रो,
विसवास पात्र है, लायक है।
है असल सेरणी रो जायो,
स्वामीं रो साचो पायक है।।१२७१।।

जे मरणो ई है तन्नैं तो,
ई गढ री रिच्छ्या ताँई मर।
अर करज चुका ई माटी रो,
इक वीर पुरुस री नॉई मर।।१२७२।।

मै देर्‌यो हूँ जो अब आज्ञा,
बा तनैं मानणी हीं पड़सी।
अब बागडोर तन्नै ऊँचै,
रणथंभ थामणी ही पडसी।।१२७३।।

यूँ कै'र गूंठो चीर अपणो तिलक जाजै माथ पर।
सार्‌यो हमीर हरख जणा अर नेह् जतायो बांथ भर।।
धर वीर जाजादेव कांधै भार जद रणथंभ रो
हम्मीर त्यारी धरम जुध हित जा जुट्‌यो निसचिंत हो।।१२७४।।

हम्मीरदेव रो सुरगलोकवास

जाजै नै देय'र राज-पाट,
राण्याँ नैं जौहर करवायो।
हम्मीरदेव निसफिकर होय,
जद राज खजानैं में आयो।।१२७५।।

अर माँय खजानैं भरियोड़ी,
सगळी अनमोल धरोहर नैं।
बीरमदे नै दे हुकम झट्ट,
फिंकवादी पदम सरोवर में।।१२७६।।

अर इणी बीच बो जा पूग्यो,
गढ रै रासण भंडाराँ में।
तो देख्यो अन्न मोकळो हो,
भरियोडो तद बाँ साराँ में।।१२७७।।

तो चाल जणा बीं जौहड़ री,
हम्मीर समझ माँई आ'गी।
बीरम नैं कर्‌यो इसारो झट,
बो गुस्सै माँय जणा आ'की।।१२७८।।

जद पाय इसारो बीरमदे,
जौहड रो काम तमाम कर्‌यो।
यूँ करमहीण जौहड अपणी,
करणी रै बळ बेमौत मर्‌यो।।१२७६।।

फिर नस्ट कर्‌या सब अस्त्र–सस्त्र,
जाय'र बो सस्त्रागारॉ में।
अर आग लगा दीन्हीं झटपट,
बॉ रसद भर्‌या भंडारॉ में।।१२८०।।

खिलजी रै पल्लै नहीं पडै,
कुछ भी आ सोच – विचार कर'र।
अणगिणत हाथियाँ रा माथा,
झट काट गिराया धरणी पर।।१२८१।।

बो फेरूँ राजद बीरमदे,
टाक'र गंगाधर रै सागै।
परमार छत्रसिंह जदूराज,
सगळॉ नैं लेय बढ्‌यो आगै।।१२८२।।

सै केसरिया बाना पैर्‌या,
सुमरण कर मात भवानी रो।
करता जैकारा रणचंडी,
विकराळ मात म्हाकाळी रो।।१२८३।।

अपणी तलवार दुधारी अर,
हाथॉ मे धनुस बाण लेय'र।
घोड़ा दौडाता चल्या वीर,
"जै हर-हर महादेव" कैय'र।।१२८४।।

केहब्रू अर मोमदस्या भी,
वीरॉ साथै रण करण चल्या।
दोनूं पठाण भाई मिलकै,
खिलजी नै मारण मरण चल्या।।१२८५।।

सेना सागै आठूं जोधा,
चाल्या तो धरती धूज उठी।
जै मातभौम, जै रणतभॅवर,
नारॉ स्यूं घाट्यॉ गूँज उठी।।१२८६।।

भुजंग प्रयात - छंद

जणा ज्यॉ हथेळी धर्याँ राजपूतं
चल्या जंग मॉई महाकाळ दूतं
धरा डोलणै लागगी अंब काँप्यो
दळं साह में घोर आतंक मॉच्यो।।१२८७।।

सुण्यो साह हम्मीर आग्यो लड़न्नं
रणंभौम में सीस वांध्यॉ कफन्नं
जणा नींद स्यूं झट्ट सुल्तान जाग्यो
चढ्यो जाय हम्मीर स्यूं टक्कराग्यो।।१२८८।।

जुड्या जंग मीरं उमीरं अपारं
चल्या होय भेळा सहन्साह लारं
गरज्जं घणा दुंदुभी ढोल तासा
उडंती चली गर्द छाई अकासा।।१२८६।।

जणा राव जोधा भर्‌याँ मन्न रीसाँ
पड्या टूटकै जंग में वीजळी-सा
रणंभौम माँई लड़ंता - भिडंता
वढ्या दुस्मणाँ रो सफायो करंता।।१२६०।।

चमक्की जणा खंग सेलं पळंक्या
चल्या अेक सागैहि तीरं असंख्या
कट्या भुज्ज माथा'र बिन्ध्या सरीरं
लगी फूटणै खोपड्याँ ज्यूँ मतीरं।।१२६१।।

हुई खेत सेना घणी जद्द साही
हमीरं सुवीरं मचादी तवाही
लगी रुण्ड ढेरी रणंभौम माँई
गुडै मुण्ड गिंडी जियाँ मोकळाई।।१२६२।।

खड्यो मीर मोमद्दस्या जंग जुज्झै
चलै तीर कोदंड टंकार गुंजै
सराँ री जणा वो लगादी झडी-सी
अलादीन सेना कटी काकडी-सी।।१२६३।।

जणा मीर केहब्रु का सेल छुट्टै
कयाँ का जणा साँवठा प्राण लुंटै
रणंभौम में वीर धावै जठीनैं
गिरै बाजि-मातंग भूमी उठीनैं।।१२६४।।

जणा वीर वीरम्मदे जंग नाँच्यो
चढ्यो काळ साही दळं सीस नाच्यो
चलावै जणा दंक क्रोधंत दल्लं
कटी डाळ नाँई गिरै साह मल्लं।।१२९५।।

खचाखच्च चाली दुधारी हमीरं
किता साह मीरं दिया रक्ख चीरं
दिया साह सेना छुडा वीर छक्का
लखंता जणा तुर्क रैग्या मुचक्का।।१२९६।।

जुट्या जंग आठूँ महानट्ट नार्नी
घमासाण नाँच्यो जणा च्यारुँ कार्नी
सलट्टाय दी साह सेना घणेरी
लगादी रणाँ माँय ल्हासाँरि ढेरी।।१२९७।।

किता वाजि गज्जं मर्या जंग माँई
किता अंग भंगं फिरै दौड़दाई
कट्या दंत मातंग चिंघाड मारै
किता अस्व पीढं मड्या जम्बु झारै।।१२९८।।

चलै तीर जंगं हुवै पार अंगं
पडै वाजि तूनीर पीछै नवंगं
पड्या पील भारी कठै प्रानहीनं
कठै हा पड्या अस्व मान्या विहीनं।।१२९९।।

"पड्या मीर त्रित्तं हजाराँई पुट्ठं
तडफ्फै हजाराँ मदारंद रुद्दं
भरी मांस मेदं जमीन्जंग सारी
द'यो खून नाळाँ नच्यो जीव न्यारी।

भर्‌यॉं जोगणी खप्परं रक्त नाचै
करै केलि भैरूँ जणा लैर भाजै
लग्या मंडराणै नभं मॉंय पंछी
घणा कॉंवळा चील आ मांस भच्छी।।१३०१।।

दोनूं सेनावॉं भिड़ी जणा,
ई आर–पार कै रण मॉंहीं।
तो मार – काट होई भारी,
चौतरफ मची त्राही–त्राही।।१३०२।।

रणथंभ–राज रणबंकॉं री,
रण मॉंय जणा तलवार चली।
हर अेक वार में कई–कई,
करती सत्रू–संघार चली।।१३०३।।

गाजर–मूळी ज्यूं किलमॉं रा,
जद धड स्यूं सीस कटण लाग्या।
डर का मार्‌या साही सैनिक,
पीछै पग मेल हटण लाग्या।।१३०४।।

तलवारॉं पर तलवार चली,
घमसाण मचण लागी रण में।
सन–सनाट करता तीरॉं री,
बौछाड़ हुवण लागी नभ में।।१३०५।।

जद रुंड–मुंड स्यूँ भरी धरा,
अर नदी खून री बहण लगी।
साही सेना में चाणचुकै,
तद अेक प्रळय-सी ढहण लगी।।१३०६।।

कितणॉ ई सैनिक तो अपणी,
आपस री भगदड में गुडग्या।
कितणॉ रा प्राण–पखेरू जद,
बीं रण मे डर स्यूँ हीं उडग्या।।१३०७।।

जाणै कितणाँ री छात्यॉ पर,
भगतै हाथ्यॉ रा पग पडग्या।
कितणाँ ई घोडाँ रै खुर कै,
नीचै दबग्या चिंथग्या मरग्या।।१३०८।।

यूँ मार–काट होई भारी,
खिलजी री सारी सेना में।
मुट्ठी भर वीर हिलाय'र तद,
रख दी ही साही सेना नैं।।१३०६।।

जोधॉ जद मांड्यो मरण–जंग,
तो आँख मींच सब लड्या-भिड्या।
रेवड–सी किलमी सेना पर,
भूखा नाहर-सा कूद पड्या।।१३१०।।

नीं तो जीतण री खुसी और,
नीं गम हो वॉनैं हारण रो।
बस जोस उफणर्यो हो उण रै,
मन मॉंय सत्रु संघारण रो।।१३११।।

कितणॉं ई घाव लग्या तन पर,
वॉं रै तलवारॉं–तीरॉं रा।
पण डिगा हौंसलो सक्या नहीं,
वॉं राजपूत रणधीरॉं रा।।१३१२।।

लड़ता–लडता लथपथ होग्या,
फेरूँ भी लडता गया वीर।
आगै स्यूँ आगै बढ्यॉं गया,
खिलजी सेना नै चीर–चीर।।१३१३।।

पण आखिर बीं टिड्डी दळ–सी,
सेना स्यूँ कद तॉंईं लड़ता ?
हो–होय'र घायल गिरण लग्या,
रणभौम मॉंय लडता-भिड़ता।।१३१४।।

फेरूँ भी खिलजी सेना नैं,
लडता–लड़ता संघार गया।
कितणॉं ई साही वीरॉं नैं,
बै मरता–मरता मार गया।।१३१५।।

गंगाधर टाक'र बीरमदे,
केहब्रू अर परमार सभी।
तद मातभौम पर खेत हुया,
करता सत्रू–संघार सभी।।१३१६।।

साही सेना में मोमदस्या,
जद जा चौतरफाँ स्यूँ घिरग्यो।
छाती में लाग्यो तीर अेक,
मुरछित हो धरणी पर गिरग्यो।।१३१७।।

तद बीं मुरछित मोमदस्या नैं,
खिलजी रा सैनिक पकड़ लियो।
अर अपणै खेमै में लेज्या,
झट जंजीराँ स्यूँ जकड़ दियो।।१३१८।।

मोमदस्या नैं रणभौम माँय,
गिरतो देख्यो हम्मीर जणा।
घोडै रै अेड लगाय हुयो,
झट खिलजी कानीं भीर जणा।।१३१६।।

अपणी तलवार दुधारी ले,
साही सेना नैं चीर–चीर।
रणभौम मॉय तांडव करतो,
आगै ई बढ़तो गयो वीर।।१३२०।।

चढर्‌यो हो वीं रै चाव घणो,
उर माँय सत्रु संघारण रो।
सिर खून सवार हुयोड़ो हो,
वीं रै खिलजी नैं मारण रो।।१३२१।।

कुछ पळ में ई लड़तो–भिड़तो,
घोड़ै सवार हंम्मीर जणा।
खिलजी रै सामीं जा पूग्यो,
झट चढा धनुस पर तीर जणा।।१३२२।।

अर साध निसाणो खिलजी पर,
मन हीं मन सुमर भवानी नैं।
झट खींच्यो तीर खतम करणै,
ई लंबी जुद्ध कहाणी नैं।।१३२३।।

अर बोल्यो– खिलजी सावधान!
ले तूँ सँभाळ मम वार अब्ब।
ओ तीर म्हारलो छूटै है
करणै तेरो संघार २४।।

पण इणी बीच
प्यासी

तद सध्यो निसाणो चूक गयो,
हम्मीर चला नीं सक्यो तीर।
अर घायल हो रणभौम मॉय,
झटकै सागै गिर पड़्यो वीर।।१३२६।।

आखरी बखत आ गयो सोच,
चित मॉय इस्ट रो ध्यान धर्‌यो।
मन हीं मन रणतभँवर गढ नैं,
बो अंतिम बार प्रणाम कर्‌यो।।१३२७।।

जिन्दो नीं जवन पकड लेवै,
उजवळ चौहाणी थाती नै।
यूँ सोच'र खींच कटार झट्ट,
ली मार आप री छाती में।।१३२८।।

यूँ मोतडली नैं गळै लगा,
वो बीर धरा स्यूँ विदा हुयो।
बो आजादी रो परवाणो,
अपणै वचणॉ पर फिदा हुयो।।१३२६।।

हम्मीरदेव रै मरतॉ ई,
खिलजी कर दीन्यो बंद जुद्ध।
अर मोमदस्या पर निजर पडी,
तो अेकदम्म होगयो क्रुद्ध।।१३३०।।

बोल्यो– रै मोमदस्या तन्नैं !
जे मरहम–पट्टी करवा'कै।
मैं ल्यूँ बचाय तो के तू जद,
मिल ज्यागो मेरै स्यूँ आ'कै ?१३३१।।

बोल्यो मोमदस्या– सुण खिलजी!
मैं जे जिन्दो रह पायो तो।
भिड़ताँ'ई तन्नैं मारूँगो,
जे अवसर इसड़ो आयो तो।।१३३२।।

ओ उत्तर सुण खिलजी बीं नैं,
झपदेई जद गुस्सै में आ।
निरदयता पूर्वक मरा दियो,
हाथी रै पग नीचै किचरा।।१३३३।।

पण क्रोध हुयो कुछ सांत जणा,
कुछ देर बाद डेरै में आ।
अल्लूग खान नै बुलवाकै,
आदेस दियो दिल्ली पतिस्याह।।१३३४।।

म्रित मोमदस्या रो सव अलूग !
रणभूमी स्यूँ मँगवायो जा।
बींनैं साही सम्मान सहित,
तद बाइज्जत दफनायो जा।।१३३५।।

बो लाख सल्तनत दिल्ली रो,
अपराधी अेक भगोड़ो हो।
कुछ निजी कारणाँ बस दुसमण,
मेरो भी बोळो–थोड़ो हो।।१३३६।।

पण हो बो बंदो वफादार,
अपणै स्वामी हित मरग्यो बो।
अर नमक हलाली रो अैयाँ,
हक अदा स्यान स्यूँ करग्यो बो।।१३३७।।

हम्मीरदेव रै संग वफा,
आखरी सांस तक पाळी बो।
सुलतानें दिल्ली है कायल,
बीं री ई नमक हलाली रो।।१३३८।।

यूँ अंत हुयो मोमदस्या रो,
फिर खिलजी रणमल रतीपाल।
दोन्याँ नैं झट्ट पकडवाकै,
सिर का सब मुँडवा दिया बाळ।।१३३९।।

करकै काळो मुंडो बाँ रो,
जूताँ री माळा पैराई।
अर बिठा जैणा खर पर बाँनैं,
सज-धज्ज सवारी निकळाई।।१३४०।।

फिर बोल्यो-- ऑं गद्दारॉं री,
जिन्दॉं री खाल उतरवाद्यो।
अर ऑं री ल्हास घणी ऊँची,
दरखत्त डाळ पर टॅंगवाद्यो।।१३४१।।

जीं स्यूँ दुनियॉं ले जाण आज,
ऑं नमक हरामॉं रै तॉंई।
कितणी नफरत भरियोडी है,
ई अलादीन रै मन मॉंई।।१३४२।।

यूँ अंत हुयो बॉं दोन्यॉं रो,
फिर खिलजी दो दिन जाजा स्यूँ।
लडतो रै'यो बीं नुवै–नुवैं,
गढ रणतभॅंवर रै राजा स्यूँ।।१३४३।।

दो दिन तक डट्यो रयो जाजो,
आखिर खिलजी स्यूँ हार गयो।
अर मातभौम री रिच्छ्या हित,
बो जोधो सुरग सिधार गयो।।१३४४।।

यूँ सन ते'रा सौ अेक मॉंय,
चौहाणॉं स्यूँ गढ रणतभॅंवर।
तारीख जुलाई बा'रा नै,
खिलजी खोस्यो छळ जीत समर।।१३४५।।

बीं गढ अजेय रै दरवाजै,
जद ध्वजा फरूकी सुलतानी ।
'अल्लाह् हो अकबर' रा नारा,
गूजण लाग्या च्यारूँ कानी ।।१३४६।।

रण जूझ्योड़ी साही सेना,
फूली ही नहीं समाई जद।
रणथंभ हुयोड़ो जाण फतह
खिलजी आंख्यॉं हरखाई तद।।१३४७।।

ई औसर हीये में उठतो,
आह्लाद रोक नी पायो बो।
सोनै–चांदी री कर उछाळ,
जी भर कै मोद मनायो बो।।१३४८।।

अर उणी बीच बींनैं इकदम,
देवळदे याद लगी आवण।
मन भँवर उतावळ करण लग्यो,
बीं कळी खिलंती मँडरावण।।१३४९।।

हम्मीर देव री जाणै बा,
आंख्यॉं री नूर किसी होगी ?
सुन्दर परियॉं री सहजादी,
जन्नत री हूर जिसी होगी।।१३५०।।

कलपणाँ लोक में विचरंतो,
यूँ सोच वावळो हाग्यो वो।
जाणै कुणसा कितणा मीठा,
सुन्दर सुपना में खोग्यो वो।।१३५१।।

तनड़ै उतपात मचाण लगी,
अँगडाई आती जाती–सी।
उनमादी मनड़ै रै मॉंई,
मच गई ऊकळापाती–सी।।१३५२।।

जद चाल्यो खिलजी सज्ज-धज्ज,
भरियॉ उछाव निज मन मॉंई।
अपणै दुसमण री लाडकँवर,
देवळदे स्यूँ मिलणै तॉंई।।१३५३।।

पण जद दरवाजै रणतभँवर,
पग पै'लो अपणो टेक्यो बो।
इक मिनख सामनैं दूर खड़्यो,
गढ री सीढ्यॉ पर देख्यो बो।।१३५४।

धोळी दाढी लाम्बी अचकन,
माथै ऊपर खिड़किया पाग।
हाथॉं में सोनै रा टड्डा,
कम्मर कटार ही रयी साज।।१३५५।।

बो अट्टहास करतो बोल्यो,
दिल्ली सुलतान पधारो सा!
हम्मीर हठी रै ई उजडै,
गढ मे स्वागत है थारो सा! १३५६।।

मै न्हाळ भाट इक अदनों–सो,
हम्मीर देव रो चाकर हूँ।
सायद मैं जिन्दो भी अब तक,
तेरै स्यूँ मिलणै खातर हूँ।।१३५७।।

हे जवनपती ! आ बैठ जरा,
अपणै मन में थोड़ो सुस्ता।
तूँ जीं स्यूँ मिलणै चाल्यो है,
ई जग में कठै रयी है बा।।१३५८।।

बा सोन–चिड़कली देवळ तो,
अपणी लाज री धरोहर नैं।
जिन्दी बचाण फुर स्यूँ उडकै,
जा कूदी पदम सरोवर में।।१३५९।।

म्हाराणी रंगादेवी भी,
जौहर ज्वाळा में समा गई।
बीं अग्निकुंड में ई गढ री,
हर नारी सगती नहा गई।।१३६०।।

जीं परस मणी रै लालच तूं
आयो हो दिल्ली छोड अठै।
वा तो छूमंतर हुयी अब,
तूं भाठां स्यूं सिर फोड अठै।।१३६१।।

हे जवनराज ! म्हे भाट सदां,
बाणी रा तीर चलावां हां।
अपणै स्वामी री सांचै मन,
बिरदावळ बांचां–गावां हां।।१३६२।।

खोटी हो चाये खरी बात,
कै'णै मे कोनी चूकां म्हे।
जां देणी करां कबूल हरख,
दुसमण सामीं नीं झुक्कां म्हे।।१३६३।।

पण बात बडाई जोग अगर,
बैरी में भी पाई जावै।
जो होवै असली भाट जिको,
बीं नै भी सांचै मन गावै।।१३६४।।

तूं लाख जीतणै जुद्ध सदां,
हर चाल नीच ही चाली है।
पण बात अेक तेरै मे भी,
कुछ खास सरावण हाळी है।।१३६५।।

तूं वीं रणमल अर रतीपाल,
दोनूं गद्दारॉ रै ताईं।
जो सजा मुकर्रर करी जिकी,
ई भाट पुत्र रै मन भाई।।१३६६।।

वॉ लूंण हरामॉ रै खातिर,
तेरलो दंड न्यायोचित है।
जिण रै करियोडै पाप हुयो,
ऊँचो रणथंभ पराजित है।।१३६७।।

पण होय पराजित भी ओ गढ,
कायर री धण कोनीं बाज्यो।
ई रो स्वामी इतिहास मॉय
मरकै भी सुजस अमर पाग्यो।।१३६८।।

के खूब अड्यो निज वचणॉ पर,
नाहरियो मरद सुभट, खिलजी!
दुनियॉ राखैगी याद सदॉ,
हम्मीर हठी रो हठ, खिलजी! १३६६।।

मरणो तो वस्त्र बदळणो है,
ओ गीता ज्ञान करावै है।
जो आयो है ई धरती पर,
नक्की ही ओटो जावै है।।१३७०।।

आ दुनियाँ हर प्राणी ताई,
दो दिन रो रैण बसेरो है।
कुछ दिनॉ उठाऊ चूल्हो–सो,
ओ जोगी हाळो डेरो है।।१३७१।।

खोटा'र खरा सब करियोड़ा,
करमाँ री काम्बळ ओढ, अठै।
हर मिनख आप रो जस–अपजस,
ई जग में जावै छौड, अठै।।१३७२।।

ओ जस–अपजस ही सही मॉय,
है सुरग–नरक ई धरती पर।
बाकी कुण देख्यो अर जाण्यो,
है जाय कठै हर जीव मर'र।।१३७३।।

हे जवनपती ! जस रो पलड़ो,
झुकतो रखणो है खेल नहीं।
बलवंत लोभ रो भार सकै,
मन संयम सीढी झेल नहीं।।१३७४।।

ई कड़वी सच नैं कई बार,
देख्योड़ी है पितवाण अठै।
निज गुण विसेस रै पाण सदा,
खावै खेडी ही 'पाण' अठै।।१३७५।।

स्वारथ चक्की पिस लोग अठै,
घणखरा जमारो खोयो है।
छत्रियाँ मॉय भी ई जस रो,
भागी विरळो नर होयो है।।१३७६।।

सांचै रजवट ताई खिलजी!
कुछ तय है जीवन मूल्य अठै।
आ तनैं बताऊँ खास – खास,
जो राखै मूल्य, अमूल्य अठै।।१३७७।।

रोळो - छंद

पैलो छत्री धरम, वचन दे नहीं पलट्टै
व्है साँचो रजपूत, सीस दे बोली सट्टै
दूजो छत्री धरम, जुड़योड़ो जंग न भज्जै
कर थामीं किरपाण, प्राण रै साथै तज्जै।।१३७८।।

तीजो छत्री धरम, आण पर जद अड ज्यावै
आँख मींचकै जणा, काळ स्यूँ भी भिड ज्यावै
चौथो छत्री धरम, नहीं सरणागत मोड़ै
पड़्याँ वखत निज सॉस, हित्त सरणागत तोड़ै।।१३७६।।

धरम पॉचवों छत्रि, पीठ पर वार करै नीं
सत्रु निहत्थै कदै, सीस तलवार धरै नीं
छट्ठो छत्री धरम, न जोवै निज हित-अणहित
हँसतो-हँसतो सीस, चढादे मातभौम हित।।१३८०।।

धरम सातवों छत्रि, चरित स्यूँ स्रेस्ठ कुहावै
रखै रतन पर जतन, कदै नीं काछ लजावै
धरम आठवों छत्रि, हुवै वो ओढरदानी
वंद करै नीं द्वार, दीन-दुखियॉ रै ताणी।।१३८१।।

नौ वों छत्री धरम, कदै मिथ्या नीं वोलै
सदॉ न्याय - अन्याय, सत्य रै पलड़ै तोलै
धरम खास इक ओर, गिण्योजा छत्री लेखै
सत्रू सामीं कदे, नहीं वो घुटणा टेकै।।१३८२।।

इण सकल गुणा रै स्वामीं रो,
जग मॉई भाट कुहाग्यो मै।
ओ मान पायकै साच्यॉई,
जीतै जी गंगा न्हाग्यो मैं।।१३८३।।

पण तूॅ के पायो सोच जरा,
छळ कपट पाण ओ जंग जीत।
जे वखत मिलै तो ठाळप में,
करिये थोड़ो सो मनन चींत।।१३८४।।

जीवण पोथी रै पानॉ मे,
जी दिन तूॅ निजर गडावैलो।
मेरै स्वामी, सामीं हरदम,
कद अपणो छोटो पावैलो।।१३८५।।

इतिहास आइनै में तेरो,
हर करम कर्योड़ो झळकैगो।
कामीं कुटळाई भर्यो चरित,
न्यारो – निरवाळो पळकैगो।।१३८६।।

इक बात और रण मॉय हाल,
तूँ अेक हमीर हरायो है।
हरकोई है हम्मीर अठै,
जो ई धरती पर जायो है।।१३८७।।

रणथंभ राज री पिरजा मन,
अब रगत बीज आजादी रो।
चौतरफॉ ऊल्यायो है बण,
कारण तेरी बरबादी रो।।१३८८।।

ई धरती मॉ रा मोबीणा,
बेटा मजदूर किसान अठै।
आजादी रो ऊॅडाई तक,
अब मोल गया है जाण अठै।।१३८९।।

जणजात अठै री स्यूँ तेरी,
है सेस लड़ाई मूल अभी।
बै जीतै जी तो नहीं करै,
गद्दी पर तनैं कबूल कभी।।१३९०।।

चल छोड सकल आँ बाताँ नैं,
अर थाम हाथ तलवार अब्ब।
दिल्ली सुलतान सँभाळ जरा,
ई भाट–पुत्र रो वार अब्ब।।१३६१।।

ई धरती रा बेटा खिलजी!,
धोखै स्यूँ वार करै कोनीं।
नीहत्थै दुसमण री गरदण,
अपणी तलवार धरै कोनीं।।१३६२।।

नीं तो ई गढ री ड्योढी पर,
जद पै'लो पड़्यो चरण तेरो।
बस तीर अेक ही काफी हो,
तेरा अै प्राण हरण, मेरो।।१३६३।।

ई लिए सँभळ अब जवनराज!
अर होय सकै तो प्राण बचा।
जद तक जिन्दो है न्हाळ भाट,
रणथंभ हुयो सर जाण मतॉ।।१३६४।।

यूँ कैह् कटार निज काड जणा,
बो फैंकी खिलजी रै कानीं।
जीं नै छाती पर झेल गयो,
झट म्होलणदे आकै सामीं।१३६५।।

इक सांचै सेवक रो हक यूँ,
बो म्होलण भाट अदा करग्यो।
खिलजी ताणी हँसतो–हँसतो,
बो अपणी ज्यान फिदा करग्यो।।१३६६।।

मोल्हण रो ओ वलिदान निरख,
सुलताने दिल्ली जड़ होग्यो।
कुछ पळ ताई तो मॉईमॉ,
हीयो म्हानिस्ठुर नर रोग्यो।।१३६७।।

जद क्रोधवंत होय'र खिलजी,
सीढियॉ गड्ढ रणथंभ चढ्यो।
अेकलै न्हाळ स्यूँ जंग करण,
अपणा सैनिक ले संग बढ्यो।।१३६८।।

खिलजी स्यूँ भिडतो न्हाळ भाट,
आखिर चिर–निद्रा में सोग्यो।
यूँ मातभोम हित प्राण लुटा,
बो वाणी–पुत्र अमर होग्यो।।१३६६।।

पण कै'योड़ी बातॉ बीं री,
सौळाणॉ निकळी सॉची ही।
जद सिर उठाय पिरजा सारी,
रणथंभ राज री मॉंची ही।।१४००।।

जद चप्पै–चप्पै जण विरोध,
बादळ बण लग्यो घुमडणै हो।
बूंदी स्यूँ ले'र करोली तक,
जण माणस लग्यो उमड़णै हो।।१४०१।।

ई धरा हमीरी रा बेटा,
मीणा अर गुर्जर वीर सकल।
बीं गढ अजेय पर नहीं सहज,
स्वीकार सक्या सुलतान दखल।।१४०२।।

बै घात लगाय गुरिल्ला जुध,
करता दिन–रात पड़्या पिलकै।
दळ साह सुरछ्या रणतभँवर,
रख दियो नाक में दम करकै।।१४०३।।

बै खिलजी नैं जद जीतै–जी,
नीं कदै चैन स्यूँ जीण दियो
हरदम्म जूझता मर्‌या–मिट्या,
सुख स्यूँ पाणी नीं पीण दियो।।१४०४।।

सोपान ई' पर पूगकै अब आ कथा हम्मीर की।
पूरी हुई सुरसत क्रिपा स्यूँ वीं हठी रणधीर की।
नाचीज री ई कलम रो ओ तुच्छ-सो परयास है।
जो दाय आसी सुधि जणाँ नैं सहज मन विसवास है।।१४०५।।

हम्मीर झरोखे स्यूँ

दुनियाँ में वीर सिरोमणि तो
होया है रजवाड़ा अनेक।
पण बचन सिरोमणि तो जग में,
होयो है बस हम्मीर अेक।।१४०६।।

सरणागत होय'र लड़्या-भिड़्या,
बै तो देख्या राजा अनेक।
पण सरणागत रै लिए लड़्यो,
बो तो देख्यो हम्मीर अेक।।१४०७।।

जो खुद रै तॉई लड़्या--मर्या,
बै तो जग मे होया अनेक।
जो मर्यो दूसराँ रै तॉई,
बो तो होयो हम्मीर अेक।।१४०८।।

हो फिदा कामण्यॉ पर जग मे,
जुध लड़्यो जबर जोधा अनेक।
निज हठ पर ज्यान फिदा करदी,
बो तो हो बस हम्मीर अेक।।१४०९।।

हम्मीर जियाँ को प्रणतपाळ,
जग में दूजो नीं जायो है।
रजवाडॉ रो सिरमौर मुकुट,
हम्मीर देव कहवायो है।।१४१०।।

बो रणवंको त्रिप सूरवीर,
हठ रो पक्को स्वाभीमानी।
बो करमयोगि नर महानिडर,
कर्मठ–कठोर मन रो स्वामी।।१४११।।

ई रजवट रै इतिहास मॉय,
बीं रो चरित्र सर्वोतम हो।
बेदाग' पाक ऊजळ निरमळ,
हो मरजादा पुरुसोतम-सो।।१४१२।।

आ नहीं बडाई है कोरी,
ई महाकाव्य रै नायक री।
आ सॉची गौरव गाथा है,
धरती रै नाहर सावक री।।१४१३।।

जो सरणागत नै दीन्योड़ै,
बचणॉ स्यूँ नीं निज मुँह मोड़यो।
जद अेक बार प्रण कर लीन्यो,
मरणै मरग्यो प्रण नीं छोड़यो।।१४१४।।

ई वसुन्धरा इतिहास मॉय,
मिलणी है असी मिसाळ कठै।
लेकै चिराग ढूँढो चाए,
नाँ काल मिली,नाँ काल मिलै।।१४१५।।

जो हिन्दू होतॉ सेती भी,
इक मुसळमान रै ताँई यूँ।
निरलोभ लुटादी 'जॉ' अपणी,
झेलंतो राड़ पराई यूँ।।१४१६।।

ऊँट्टीनैं होकै मुसळमान,
मोमदस्या कुण सो कम निकळ्यो।
खिलजी स्यूँ लडतै–लड़तै रो,
हिन्दू राजा हित दम निकळ्यो।।१४१७।।

ओ भी इक अमिट उदारण हीं,
जग मॉय छोडग्यो मोमदस्या।
साँचोड़ा नमक हलालाँ में,
अग्रणी कहाग्यो मोमदस्या।।१४१८।।

परिवार सहित हम्मीर हित्त,
हॅस–हँसकै ज्यान लुॅटाग्यो बो।
करजो उपकार कर्‌योड़ै रो,
यूँ ब्याज समेत चुकाग्यो बो।।१४१६।।

है माटी धन्न धरा बीं री,
होयो पैदा हम्मीर जठै।
है कूख धन्न बीं मायड री,
जिण जाम्यों इसड़ो वीर अठै।।१४२०।।

है त्याग धन्न मोमदस्या रो,
जाजै रो धारादेवी रो।
पति प्रेम धन्न है राण्याँ रो,
म्हाराणी रंगादेवी रो।।१४२१।।

बळिदान धन्न है देवळदे,
हम्मीरदेव री लाली रो।
अर भारत माँ री बीं बेटी,
मोमदस्या री घरहाळी रो।।१४२२।।

धन है म्होलण अर न्हाळ भाट,
जो लगा मौत नैं गळै हरख।
मौको पड़ियाँ दी लुटा ज्यान,
अपणै–अपणै स्वामी रै पख।।१४२३।।

लाणत है रणमल–रतीपाल,
वाँ आसतीन रै सांपाँ पर।
सौ वार धिक्क है दगाबाज,
वीं भोजराज–सा पाप्याँ पर।।१४२४।।

घर का भेदी लंका ढा'दी,
नीं ओ रणथंम गड्ढ कोई।
के जीत सकै हो सहजाँ ई,
हम्मीर हठी स्यूं लड कोई ? १४२५।।

हम्मीरदेव रै बाद मॉय,
ई गढ नैं आयो रास नहीं।
कोई सासक ओपरो कदे,
ई रो मन सक्यो रिझाय नहीं।।१४२६।।

खिलजी तुगलक साह सूरि मुगल,
हाडा सिसोदिया कछवाहा।
इत्यादि किता ही वंस अठै,
आया'र गया मुड-मुड़ आया।।१४२७।।

पण कदे खिलंती नीं देखी,
ओ गढ मन मॉंय बहार अठै।
मोती चुग्गणियों हंस कणा,
खुस होतो मछल्यॉं खार कठै ?१४२८।।

हर भीड़ मॉंय ई री निजरॉं,
इक टक संजोयॉं आस घणी।
सदियॉं स्यूं रयी तलासंती,
कोई सॉंचो रणथंभ धणी।।१४२९।।

सिर ऊँचो कर्‌याँ खड़्यो अब भी,
आ आस लगायाँ रणतभँवर।
जलमैगो फिर स्यूँ भारत में,
कोई हम्मीर हठी सो नर।।१४३०।।

बीं दिन अै घाट्याँ गूंजैगी,
बीं दिन आ माटी गावैगी।
हरखैगी बीं दिन भारत माँ,
बा सुबह कदे तो आवैगी।।१४३१।।

(समाप्त)

यादास्त

दसरावै रै दिवस, सन दो हज्जार छै में
माह अक्तुबर माँय, दोय तारिख सुभ ग्रह में
विक्रम संवत दोय, हजार तरेसठ माँई
उत्तरतै आसोज, जणा तिथ दसमीं आई
सुरसत-लंबोदरम किरपा, महाकाव्य लेखण जणा
पूरो कर है आप सामँ, भेंट आज हरखत मनाँ

- ताऊ शेखावाटी

कवि परिचय

(आल्हा - छंद)

जिका बसायो ईं धरती पर, कोई बडो सहर या गांव
या तो हा राजा म्हाराजा, या नवाव हा या सुलतान

सिरफ अेक ही अस्यो सहर है, जग में रामगढ्ढ सेठाण
जिको बस्यो हो कदे बठै रा, वणिक पुत्र सेठाँ रै पाण

आज देस रै मानचित्र पर, ईंरो ही संसोधित नाम
हुयो रामगढ सेखावाटी, जनपद सीकर राजस्थान

इणी गाँव में किसनलालजी,जांगिड ब्राह्मण मीसण गोत
हुया जिकाँ रो काष्ठ-कला में नाम कदे हो चर्चित भोत

बाँ रै सुत श्री मनालालजी, घर कोई सत-करमाँ पाण
मैं कवि ताऊ शेखावाटी, पायो जेष्ठ-पुत्र रो मान

करमथळी रणथंभ तळहटी, रयी भौम मेरी हम्मीर
शहर सवाई माधोपुर में, दाणैपाणी रो हो सीर

मात 'द्वारिका' सदाँ अेक ही, सीख भरी है मेरै कान
जीं धरती रो खावो-पीवो, अन-जळ द्यो बींनैं सम्मान

सिरोधार्य कर माँ री सिछ्या, कवि मन चला कलम रो तीर
करज चुकावण करमभौम रो, महाकाव्य लिखियो हम्मीर

हम्मीर वंसावळी (चौहाणवंस)

सोमेश्वर

प्रथ्वीराज(सम्राट)
अजमेर अर दिल्ली रो राज

हरिराज(मंत्री)
(प्रथ्वीराज मरणै रै बाद
जद साकेड़ अजमेर पूग्यो,
राण्याँ सागै जळ मर्यो)

गोविन्ददेव (राजा)
(रणतभँवर रो राज)

वाल्हण (राजा)

प्रहलादण (राजा)

वागभट्ट(मंत्री)

वीरनारायण(राजा)
(साकेड दिल्ली रै हाथाँ मार्यो गयो)

वागभट्ट
(वीर नारायण रो संरक्षक)

वागभट्ट (राजा)

जैत्रसिंह (राजा)

सरुत्राण
हम्मीर(राजा)
वीरमदे